

Shodh Shree

ISSN 2277-5587

# Shodh Shree

(Journal of Multidisciplinary Research)

## शोध श्री

Volume - VII

April - June 2013

RNI No. RAJHIN / 2011 / 40531

Volume - VII

April - June 2013



CHIEF EDITOR  
Virendra Sharma

EDITOR  
Dr. Ravindra Tailor

[shodhshree@gmail.com](mailto:shodhshree@gmail.com)

**Chief Editor**  
**Virendra Sharma**  
Head of Department (History)  
Government P.G. College, Bundi

**Editor**  
**Dr.Ravindra Tailor**  
Lecturer  
S.S. Jain Subodh College, Jaipur

**Editorial Board**

**Prof.H.S.Sharma (Retd.)**  
University Of Rajasthan, Jaipur

**Prof.T.K.Mathur (Retd.)**  
M.D.S. University, Ajmer

**Sarah Eloy**  
Museum The House of Alijn, Belgium

**Dr.Rajesh Choudhary**  
Assistant Director (Research)  
Indian Council of Historical Research, NewDelhi

**Dr.Mahesh Narayan**  
Archivist (Retd.)  
National Archives of India, NewDelhi

**Dr.Pankaj Gupta**  
Government P.G. College, Kotputli

**Advisory Board**

**Prof.S.P.Vyas**  
Jainarayan Vyas University, Jodhpur

**Prof.S.N.Tailor (Retd.)**  
S.D. Government P.G. College, Beawar

**Shri Om Prakash Sharma "Kukki"**  
International Renowned Archeologist and Explorer of Cave Paintings, Bundi

1.	मैला आंचल में सांस्कृतिक बिलम्बना का अनुशीलन डॉ. एच. एल. शीमान, हरिपुर गुलेर (हिमाचल प्रदेश)	1
2.	मेवात की भक्ति परम्परा में संत महिलाओं का योगदान डॉ. शिव कुमार मिश्रा, कोटा	6
3.	सुरेन्द्र वर्मा का नाट्य सृजन और आठवां सर्ग डॉ. सुमन कँवर, जयपुर	9
4.	मीरा की भक्ति भावना डॉ. सजय कुमार यादव, मनोहपुर (जयपुर)	14
5.	स्मृति साहित्य में अहिंसाधर्म हरकेश बैरवा, बून्दी	17
6.	वैदिक वाङ्मय में मानवीय मूल्यों का विवेचन राजेश कुमार बैरवा, बून्दी	20
7.	पंचायती राज व्यवस्था एवं महिला सशक्तिकरण मुकेश कुमार मालवीय, वाराणसी (उत्तरप्रदेश)	23
8.	आधुनिक भारत में युवाओं की समस्याएँ एवं विवेकानन्द बक्स राम, उदयपुर	27
9.	आबिवासी समाज और वैश्वीकरण मूलचन्द, चुर	30
10.	कोखा से कन्न तक संघर्ष ही संघर्ष (भारत के विशेष संवर्ध में) डॉ. प्रेमलता परसोया, कोटा	34
11.	19वीं सदी में सामाजिक चिन्तन गांधीजी के विशेष सन्वर्ध में यामिका व्यास, अजमेर	38
12.	भारत में सुशासन के समझ चुनौतियाँ व समाधान सुशीला देवी मीणा, कालादेश	42
13.	18वीं शताब्दी में हाइती की कृषि उत्पादन व्यवस्था डॉ. गुंजन कुमावत, फुलेरा	46
14.	बून्दी जिले में प्राकृतिक पर्यटन की संभावनाएँ आशुतोष खिरला, बून्दी व शिव प्रकाश पांचाल, अजमेर	52
15.	पंचायती राज : अवधारणात्मक विश्लेषण जाश्रीय कुमार, प्रतापगढ़	59
16.	Antimutagenic effects of vitamin-E against diethyl sulphate induced toxicity in Trigonella foenum-graecum L. Manoj Kumar Rawat, P.C. Bhati & Rajendra Prasad Meena, Bundi	61
17.	Diamond Harbour is Tourist Spot Its natural resources of "Hooghly River" Pradip Giri, Calcutta (West Bengal)	65
18.	Geomorphological Studies of Bhaunak River Basin, Maharashtra R.J.Borse & V.M.Agone, Dhule (Maharashtra)	71
19.	Violence against Women in Indian society Lopamudra Patra, Pondicherry	79
20.	Policy Making Concerns Of the State And Politics Of Multi cultural Groups For Recognition Dr. Shikha Sharma, Jaipur	87
21.	Role of Women in Indian Politics Dr. Yogendra Kumar Dixit, Jammu	96
22.	Civil Society & Social - Economic vision of Indian Liberals Dr.Rakhi Yadav, Chhimanpura	99
23.	A Light on the Agriculture Strategies of Ganeshwar-Jodhpura Culture Dr. Vineet Godhal, Ladnun	103
24.	National Policy for Empowerment of Women Dr. Madhu Parashar, Agra (Uttar Pradesh)	107

25.	<b>The Problem of Gender</b> Prashant Kumar Mishra, Delhi	113
26.	<b>Role Of Education In Gross National Happiness Index: A Way To Measure Quality Of Life</b> Dr. Ranjana Bhan (Shimla) & Dr. Sanjeev Kumar, Kuftu (Himachal Pradesh)	120
27.	<b>Effectiveness Of Computer - Assisted Instruction (CAI) On The Academic Achievement Of Class Ix Students In English</b> Dr. Nivedita & Ranjeet Singh, Sirsa (Haryana)	128
28.	<b>A Study of Values of Existing Secondary Teachers and Student-Teachers</b> Dr. Yashwant Singh, Farrukhabad (Uttar Pradesh)	137
29.	<b>Parent's perception on developing social skills towards mentally retarded children</b> Mamta Devi Yadav, Tonk	142
30.	<b>"Online Shopping- Anytime , Anywhere": A Study Of The Customer's Attitude</b> Dr. Ruchi Jain & Aditi Jain, Jaipur	148
31.	<b>Adoption of International Financial Reporting Standards (IFRS) in Accounting Curriculum in India</b> Dr. Ankita Chaturvedi, Jaipur	156

## मैला आंचल में सांस्कृतिक बिलम्बना का अनुशीलन

डॉ. एच. एल. धीमान

एसोसिएट प्रोफेसर, चन्द्रधर गुलेरी राजकीय कॉलेज, हरिपुर गुलेर (हिमाचल प्रदेश)



shodhshree@gmail.com

विज्ञान की देन से आम आदमी की जीवन शैली में आसमानी अन्तर आया है, सब कुछ अत्यन्त सूविधा जनक व आसान हो गया है। रहन-सहन, खान-पान, लाण-पाण सब कुछ में बुनियादी परिवर्तन हो गया है। अब तो कम्प्यूटर ने इतनी क्रान्ति ला दी है कि मृत को सांस नहीं डाली जा सकती बाकी सब कुछ नियन्त्रण में लगता है। हरेक समस्या की काट साईस के पास है। बीसवीं व इक्कसवीं शताब्दी इन्सान के बुनियादी जीवन में परिवर्तन की साक्षात् गवाह है। विज्ञान ने इतने चमत्कार कर दिए हैं कि उन्हें अगुलियों पर गिनाना असंभव है। जीवन में आए इन भौतिक परिवर्तनों से विज्ञान सभ्यता का निर्माण इतना जबरदस्त हुआ कि पुरातन वस्तुएँ व विचार बहुत पीछे छूट गए हैं। पुरातन विचार व वस्तुएँ आधुनिक युग में पिछड़ेपन के प्रतीक से लगते हैं। यदि हम साहित्य को लें तो कहा जाता है कि साहित्य समाज का आईना होता है, समाज में जो व जैसा घटित होता है, साहित्य में हूबहू प्रतिबिम्बित होता है। साहित्य विशेषकर हिन्दी उपन्यास को इतिहास के आईने में रखकर आंकने का प्रयत्न करें तो हिन्दी उपन्यास अपने उद्भव से अब तक कई करवटें बदलता रहा है। उपन्यास का आरम्भिक चरण यहां मनोरंजन व उपदेशात्मकता आदि का चित्रण करता है तो उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द उपन्यास को औपन्यासिकता के साथ समाज के हूबहू चेहरे से जोड़ते हैं। प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास समाज के साथ साथ विचारों व सिद्धान्तों को प्रतिपादित करता है। स्वातंत्रयोत्तर उपन्यास में यहां उपन्यास की एक और शैली उभरती है, वहीं उपन्यास का नायकत्व भू-भाग या आंचल ले लेता है, जिसका नाम है आंचलिकता। आंचलिकता को परिभाषित करते हुए डा० लक्ष्मी सागर वार्ण्य लिखते हैं कि "जब उपन्यासकार किसी अंचल, गांव कस्बे या मुहल्ले को परिवेश बनाकर वहां के लोगों के आचार व्यवहार, जीवन पद्धति, संस्कृति, लोकभाषा धर्म एवं दृष्टिकोण का सूक्ष्म वर्णन करता है तो वह आंचलिक उपन्यास है"। "गोपाल राय भी यही मत रखते हैं कि 'अंचल का व्यक्तित्व, उसकी संस्कृति अर्थात् वहाँ की परम्पराओं, विश्वासों, रहन-सहन के तौर तरीके, रीति रिवाजों, लोकगीतों, लोककथाओं आदि से बनता है। आंचलिक जीवन का एक सुपरिचित यथार्थ यह है कि ग्रामीणों के समस्त संस्कार, काम करने का एक-एक क्षण, पर्व, उत्सव, कर्मकाण्ड, गीत नृत्य आदि से जुड़े होते हैं।" आंचलिकता को आधार बना कर लिखने वालों में हिन्दी उपन्यास के प्रमुख हस्ताक्षर फणीश्वरनाथ रेणु का नाम अग्रणी है। परती परिकथा, जलूस इत्यादि उपन्यासों के साथ आंचलिकता को चित्रित करने वाला उनका मुख्य उपन्यास है मैला आंचल। सन 1954 में लिखित मैला आंचल में रेणु ने बिहार के पूर्णिया जनपद की संस्कृति, सभ्यता व जीवन शैली को अपने लेखन का आधार बनाया है। रेणु स्वयं उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं "यह है मैला आंचल एक आंचलिक उपन्यास। कथांचल है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला ... मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गांव को पिछड़े गांवों का प्रतीक मानकर इस किताब का कथा क्षेत्र बनाया है।" रेणु के मैला आंचल, से दो साल पहले ही भारत की पहली पंचवर्षीय योजना का आरम्भ हुआ था। हमने विकास की नींव रखी थी। शैक्षिक रूप से तब हम पिछड़े थे, वैज्ञानिक समझ भी कम थी, पूर्णिया जनपद में ही नहीं सम्पूर्ण भारत में जाति पाति, छूआछूत, अन्धविश्वास, नूतनता के प्रति भय, पुरातनता में विश्वास पूरे भारत की कहानी थी। इस उपन्यास में भी लेखक ने तत्कालीन समाज की मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक सूझ, समझ व सोच को उकेरा है। इस सोच में एक और तो पुरातनता में विश्वास की झलक मिलती है, वहीं नूतनता के प्रति भय का आग्रह मिलता है। लोग किस कदम अपने सांस्कृतिक, सामाजिक व सामूहिक आग्रहों व विश्वासों से बंधे हैं, उन्हें वे आसानी से छोड़ना नहीं चाहते।

हमारे शोध का मूल विषय मैला आंचल के संदर्भ में किसी सांस्कृतिक पिछड़न को उकेरना है जो भू-भागीय नायकत्वकों लिए इस उपन्यास में अन्य समस्याओं के साथ चित्रित है। अतः सर्वप्रथम यह समझने का प्रयास करें कि वास्तव में संस्कृति क्या होती है और उसके कितने रूप हो सकते हैं।

संस्कृति का अर्थ:- शब्दिक रूप से संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द से हुई है जिसका अर्थ परिष्कृत। संस्कृति का अभिप्रायः संस्कार से भी है। संस्कार का अर्थ है शुद्धि की क्रिया। शुद्धि का अभिप्रायः पवित्रता से न होकर सामाजिकता से है जिसका अर्थ यह हुआ कि एक मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाने में जितने भी तत्वों का योगदान होता है, इन सभी तत्वों की व्यवस्था का नाम है संस्कृति है।

संस्कृति की परिभाषा:-

1. टायलर के अनुसार- "संस्कृति वह सम्पूर्ण जटिलता है जिसमें ज्ञान, विश्वास कला, आचार, कानून, प्रथा तथा इसी प्रकार की ऐसी सभी क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।"
2. मैकाइवर के अनुसार- "हमारे रहने सहने के ढंग हमारे विचार, सामाजिक सम्मिलन, साहित्य, धर्म, मनोरंजन इत्यादि में हमारी संस्कृति का रूप मिलता है।"

यह मुख्यतः दो प्रकार की होती है:- भौतिक संस्कृति भौतिक का अर्थ है मूर्त अथवा दर्शनीय। इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य ने अपने अनुभवों तथा प्रयत्नों से जितने भी पदार्थों का अविष्कार तथा निर्माण किया है। वे सब भौतिक संस्कृति के अंग हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वे सभी पदार्थ जिनका एक भौतिक स्वरूप होता है जिन्हें हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, भौतिक संस्कृति के अंग हैं। प्राचीन मानव इसलिए असमर्थ था कि उसके पास भौतिक साधनों की कमी थी। मनुष्य के पास जैसे जैसे भौतिक पदार्थ बढ़ते गए, सम्यता में भी वृद्धि होती गई और विभिन्न समाजों का अन्तर भी आज भौतिक संस्कृति की भिन्नता के आधार पर ही किया जाता है।

भौतिक संस्कृति की दूसरी विशेषता यह है कि यह सदैव ज्यामितीय दर से बढ़ती रहती है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक आने वाली अवधि में भौतिक पदार्थों की संख्या में होने वाली वृद्धि अपने से पहली अवधि की तुलना में अधिक होती है। आरम्भ में व्यक्ति केवल अपने ही अनुभवों और प्रयत्नों से किसी वस्तु का निर्माण करता है जबकि वहाँ के लोग अपने पूर्वजों के अनुभवों का भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं। भौतिक संस्कृति प्रत्येक अर्थ में वैकल्पिक होती है। भौतिक वस्तुओं की संख्या इतनी अधिक है कि किसी व्यक्ति को एक वस्तु का उपयोग करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। जैसे-जैसे व्यक्तियों की रुचि योग्यता और परिस्थितियों में परिवर्तन होता जाता है भौतिक संस्कृति के रूप में भी परिवर्तन देखने को मिलता है।

बीरस्टीह ने भौतिक संस्कृति के सभी तत्वों को प्रमुख 13 श्रेणियों में विभाजित करके इसके मूर्त स्वरूप को स्पष्ट किया है,

- |                   |                    |          |                  |          |                  |
|-------------------|--------------------|----------|------------------|----------|------------------|
| 1. मशीनें         | 2. कलात्मक वस्तुएँ | 3. उपकरण | 4. वस्त्र        | 5. बर्तन | 6. गाड़ियाँ      |
| 7. इमारतें        | 8. फर्नीचर         | 9. सड़के | 10. खाद्य पदार्थ | 11. पुल  | 12. औषधियाँ आदि। |
| 13. शिल्प वस्तुएँ |                    |          |                  |          |                  |

अभौतिक संस्कृति:- अभौतिक संस्कृति का तात्पर्य संस्कृति के उस पक्ष से है जिसका कोई स्थल स्वरूप नहीं होता तथा जो विचारों और विश्वासों के माध्यम से मानव व्यवहारों को प्रभावित करती है। अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत के द्वारा किसी समाज में जितने भी विचारों, विश्वासों, नियमों, परम्पराओं, लोकाचारों, प्रथाओं और जनरीतियों का विकास होता है, वे सभी संस्कृति के अभौतिक तत्व हैं। व्यक्ति यदि भौतिक संस्कृति से अनुकूलन न करे तो इसमें उसके सामाजिक अस्तित्व पर प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन अपनी अभौतिक संस्कृति से अनुकूलन न करने पर व्यक्ति के कठोर सामाजिक तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। यही कारण है कि अभौतिक संस्कृति की प्रकृति स्थिर है। राबर्ट बीरस्टीह ने अभौतिक संस्कृति में विचारों और आदर्श नियमों को सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

विचार अभौतिक संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। प्रत्येक संस्कृति में कुछ विशेष प्रकार के विचारों अथवा विश्वासों का विकास होता है तथा उस समाज के सभी सदस्यों से इनका पालन करने की आशा की जाती है। विचारों का आठ भागों में बांटा जा सकता है..... 1. वैज्ञानिक सत्य 2. धार्मिक विश्वास 3. पौराणिक कथाएँ 4. उपाख्यान 5. साहित्य 6. अन्धविश्वास 7. सूत्र 8. लोकोक्तियाँ तथा लोक गाथाएँ आदि। ये सभी विचार अभौतिक संस्कृति के प्रमुख तत्व हैं।

सांस्कृतिक विलम्बना का स्वरूप मनुष्य अपनी विरासत और अनुभवों के द्वारा जितने भी भौतिक पदार्थों अथवा विश्वासों से घिरा है वे सभी उसकी संस्कृति का अंग हैं। हमारे रहने, विचार करने दिनप्रतिदिन के कार्यों, कल, साहित्य, धर्म, मनोरंजन और आनन्द से हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है। संस्कृति में एक पीढ़ी को हस्तान्तरित होने, समाज की परिस्थितियों और आवश्यकताओं में परिवर्तन होने के साथ ही संस्कृति के रूप में भी कुछ परिवर्तन होता रहता है। सांस्कृतिक विलम्बना का सिद्धान्त सर्वप्रथम विलियम आगबर्न ने प्रतिपादित किया। उनके अनुसार, संस्कृति का तात्पर्य मनुष्य द्वारा निर्मित सभी प्रकार के भौतिक और अभौतिक तत्वों से है। सांस्कृतिक विलम्बना का अंग्रेजीरूपान्तरण Cultural Lag gS Cultural का अभिप्राय संस्कृति "LAG" का तात्पर्य 'लगड़ाना' अथवा पीछे रह जाना होता है। इस प्रकार संस्कृति के भौतिक पक्ष की तुलना में जब अभौतिक पक्ष पीछे रह जाता है तब सम्पूर्ण संस्कृति में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसी स्थिति को हम सांस्कृतिक विलम्बना कहते हैं। आगबर्न ने स्वयं इस स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है आधुनिक संस्कृति के विभिन्न भाग समान गति से नहीं बदल रहे हैं, कुछ भागों में दूसरों की अपेक्षा अधिक तेजी से परिवर्तन हो रहा है, और क्योंकि संस्कृति के सभी भाग एक-दूसरे पर निर्भर और एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं इसलिए संस्कृति के एक भाग में होने वाले तीव्र परिवर्तन से दूसरे भागों में भी अभियोजन की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए उद्योग और शिक्षा संस्कृति के वे भाग हैं जो एक दूसरे से सम्बन्धित हैं, इसलिए उद्योग में परिवर्तन होने पर शिक्षण पद्धति में भी परिवर्तन के द्वारा अभियोजन करना आवश्यक हो जाता है। किसी अविष्कार अथवा खोज के कारण जहाँ हमारी संस्कृति का एक भाग पहले बदलता है वहीं संस्कृति पर निर्भर दूसरे भागों में परिवर्तन में विलम्ब हो जाता है। आगबर्न के इस कथन से स्पष्ट होता है कि संस्कृति के विभिन्न भागों में होने वाले परिवर्तनों की असमान दर है, जो सांस्कृतिक विलम्बना का कारण है।

हम किसी भी प्रगतिशील अथवा आदिम समाज का उदाहरण क्यों न ले लें। अब तक हमारी भौतिक संस्कृति में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो गये हैं। हम आधुनिक ढंग से खेती करते हैं, मशीनों के द्वारा उत्पादन कार्य करते हैं, चिकित्सा विज्ञान की उन्नति से मृत्यु को भी कुछ समय तक रोकने में समर्थ हो गये हैं, परिवहन के साधनों से हजारों मील की दूरी कुछ घण्टों में ही तय करने लगे हैं और संचार के साधनों से हजारों मील दूर की आवाज को कुछ सैकण्डों में ही सुन सकते हैं, लेकिन दूसरी ओर हमारे विश्वास व लोकाचार आज भी हजारों वर्ष पुराने हैं। व्यक्ति कितना ही प्रगतिशील और शिक्षित क्यों न हो गया हो, वह काली बिल्ली द्वारा रास्ता काटे जाने अथवा दूटे हुए शीशे को देखना अशुभ समझता है और पितृ-आत्माओं की तृप्ति के लिए कुछ व्यक्तियों को भोजन कराने में विश्वास करता है। तात्पर्य यह है कि संस्कृति का भौतिक पक्ष भी आगे बढ़ चुका है जबकि अभौतिक पक्ष बहुत पीछे है। इस स्थिति को हम 'सांस्कृतिक विलम्बना' कहते हैं। सांस्कृतिक विलम्बना को और स्पष्ट करते हुए विद्वान लम्बे कहते हैं कि "सांस्कृतिक विलम्बना एक ऐसी दशा प्रस्तुत करती है जिसमें बहुत से पैदल चलने वाले व्यक्ति या पूरी एक रेजीमेंट कदम मिलाकर न चल रही हो अथवा इससे अच्छे उदाहरण के लिए उस वाद्य समूह का उल्लेख किया जा सकता है जिसमें एक साथ ही कुछ कलाकार आदिम युग का संगीत बजा रहे हों।" जिस प्रकार इस स्थिति में संगीत के व्यवस्थित क्रम की कल्पना नहीं की जा सकती उसी प्रकार सांस्कृतिक पिछड़न की स्थिति में भी संस्कृति का रूप बहुत अव्यवस्थित और भ्रमपूर्ण हो जाता है।

सांस्कृतिक विलम्बना की स्थिति के कारण:-

- व्यक्तियों की रुढ़िवादिता इसका सर्वप्रथम कारण है। व्यक्ति अपने व्यवहारों, मनोवृत्तियों, वेशभूषा और जीवन की सामान्य परिस्थितियों को आसानी से नहीं छोड़ना चाहते।
- नवीन वस्तु अथवा नए विचारों के प्रति भय इसका दूसरा कारण है।
- अतीत के प्रति निष्ठा होने से भी अभौतिक संस्कृति अपेक्षाकृत कम परिवर्तित हो पाती है।
- निहित स्वार्थों के कारण भी कुछ व्यक्ति संस्कृति के भौतिक अथवा अभौतिक तत्वों में परिवर्तन नहीं करना चाहते।
- नवीन विचारों की परीक्षा में कठिनाता होने के कारण भी अभौतिक संस्कृति में अधिक परिवर्तन नहीं हो पाते।

'मैला आंचल में सांस्कृतिक विलम्बना का स्वरूप विश्लेषण:- विज्ञान के नए-नए अविष्कारों से मनुष्य ने अपनी संस्कृति का भौतिक पक्ष कहीं आगे तक बढ़ा लिया है परन्तु उसकी संस्कृति का अभौतिक पक्ष बहुत पीछे है। चाहे

आज हम परिवहन द्वारा हजारों मील दूरी कुछ ही घण्टों में तय कर लेते हैं, दूर संचार द्वारा कई हजार मील दूर आवाज़ को सेंकण्डों में सुन सकते हैं, मशीनों द्वारा कार्य करके मानव शक्ति को बचा लेते हैं परन्तु हमारे विश्वास, संस्कार व लोकाचार आज भी हजारों वर्ष पुराने हैं। अपनी रूढ़िवादिता, मनोवृत्तियों, व्यवहारों, वेशभूषा और जीवन की सामान्य परिस्थितियों को आसानी से नहीं छोड़ना चाहते। 'मैला आंचल' में पूर्णिया जिले के मेरीगज अंचल को उपन्यास में नायक का रूप प्रदान कर लेखक ने वहां के लोगों की मनोवृत्ति, अन्धविश्वास, अतीत के प्रति निष्ठा, उनके निहित स्वार्थों, नवीन वस्तुओं व नवीन विचारों के प्रति भय भावना, उनकी रूढ़िवादिता व वेशभूषा का वर्णन किया है। यही सब कारण हैं जिनसे 'मैला आंचल' में वर्णित पूर्णिया जिले के मेरीगज अंचल की सांस्कृतिक विलम्बना का स्वरूप झलकता है। मेरीगज के लोग अनपढ़ हैं। अशिक्षा के कारण ग्रामीण समाज में अनेक प्रकार की धार्मिक कुरीतियां व अन्धविश्वास अपनी जड़ें जमाये हुए हैं। तर्कबुद्धि के अभाव के कारण ग्रामीण जन हर बात को विश्वास बना लेते हैं और लोक-विश्वास उनका धर्म बन जाता है और वही उनका आचरण निर्धारित करता है। गांव में दवाखाना खुलने पर मेरीगज के लोग अनेक प्रवादों में घिर जाते हैं। गांव में अस्पताल खुलने की बात सुनकर ज्योतिषी काका सम्पूर्ण गांव में यह अफवाह फैला देते हैं कि यह गांव में बीमारी फैलाने का प्रयास किया जा रहा है।

ज्योतिषी जी का विश्वास है कि डाक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं। "सुई भौंक कर जहर दे देते हैं, आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है, हैजा के समय कूर्वों में दवा डाल देते हैं। गांव का गांव हैजा से समाप्त हो जाता है..... इसके आलावा बिलैती दवा में गाय का खून मिला रहता है।" इसी तरह अस्पताल के निर्माण कार्य में सहयोग देने के लिए सभा आयोजित की जाती है तो उसमें भी ज्योतिषी काका कहते हैं.....

"कोई माने या नहीं मानें, हम कहते हैं कि एक दिन इस गांव में गिद्ध-कौआ उड़ेगा। लक्षण अच्छे नहीं हैं। गांव का ग्रह बिगड़ा हुआ है। किसी दिन इस गांव में खून होगा खून। पुलिस दरोगा गांव की गली गली में घूमेगा। और यह अस्पताल? अभी तो नहीं मालूम होगा। जब कुएं में दवा डाल कर गांव में हैजा फैलाएगा तो समझना। शिव हो। शिव हो।"।

मेरीगज में सांस्कृतिक विलम्बना के स्वरूप के सन्दर्भ में ज्योतिषी काका की यह टिप्पणियां गांव के उन पुरातनपंथी व स्वार्थपरक व्यक्तियों के सोच का चित्रण हैं जो अस्पताल आदि वैज्ञानिक अविष्कारों पर आधारित साधनों का इस दृष्टि से विरोध करते हैं कि उन से उनके निजी हितों को ठेस लगती है, वे लोगों को अपने सड़ियल कल्चर से नहीं निकलना देना चाहते और पुरातनता के प्रति आग्रहों को बनाए रखते हैं। ऐसे लोगों का कार्य विभिन्न जातियों के लोगों के मध्य वैमनस्य उत्पन्न करना भी होता है जिससे उनकी पूंछ बनी रहे। निहित स्वार्थों व नवीन विचारों एवं वस्तुओं के प्रति भय भावना के साथ साथ नवीन वस्तुओं और विचारों की परीक्षा में कठिनता होने के कारण भी अभौतिक संस्कृति में अधिक परिवर्तन नहीं हो पाते। डा० प्रशान्त द्वारा स्टैथस्कॉप से रोगियों का निरीक्षण करना लोगों में निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत भावना का संचार कर देता है। "लर अर्थात् स्टेथस्कॉप। यहां के लोगों का विश्वास है कि इससे डाक्टर रोगी के अन्दर की सारी बातों को जान लेता है.... क्या खाया है, पेट में पचा है या नहीं, सब।" सुई लगवाने से लोग डरते हैं और दवाई खाने से भी झिझकते हैं। अतीत के प्रति निष्ठा, रूढ़िवादिता, व्यवहारों, मनोवृत्तियों और जीवन की सामान्य परिस्थितियों का त्याग न करना भी सांस्कृतिक विलम्बना का मूल कारण है। अपनी तरुण अवस्था में पहुंची कमला पर जबकि हिरटीरिया हावी होता है फलस्वरूप उसके वह बेहोश हो जाती है और यह उसके बदलते शारीरिक हार्मोनस के कारण है परन्तु गांववासी उसे देवी का प्रकोप मानकर उसकी झाड़फूंक करते हैं जो उनके अन्धविश्वास का प्रतीक है। यह लोगों का नूतनता के प्रति भय को दर्शाता है, इससे उनकी वैचारिक पिछड़न का बोध होता है। यहां की जाति-पाति, छुआछूत, अन्धविश्वास, ऊंचनीच गांव वालों की रूढ़िवादिता, व्यवहारों, मनोवृत्ति व अतीत के प्रति लगन का परिचायक है। इसी सन्दर्भ में उपन्यास से उद्धृत यह उदाहरण है कि "विरंची एक बार राज की गवाही देने के लिए कचहरी गया था तो तहसीलदार ने पूड़ी-जलैषी खिलाई थी। इस पर उसका हुक्का पानी बन्द कर दिया जाता है। गांव में न जाने कैसे, यह हल्ला हो गया कि विरंची ने तहसीलदार का झूठा खाया है। जनैऊ देने के लिए जाति के पण्डित जी आये थे, विरंची के सिर पर सात घंटे तक थैला सुपाड़ी रखने की सजा दी गई.... पांच सुपारी पर थैला भर पानी। जरा भी थैला हिला, एक बूंद भी पानी गिरा कि ऊपर सेझाड़ू की मार। तहसीलदार साहब क्या कर सकते हैं। जाति विरादरी का मामला है, इसमें वे कुछ नहीं बोल सकते। आखिर पांच रुपया जुर्माना और जाति के पण्डित को एक जोड़ा धोती देकर विरंची का हुक्का पानी खुलवाया था।" इसके अलावा एक जाति की दूसरी जाति के प्रति भेद

बुद्धि के अतिरिक्त जाति के भीतर आपसी भेद बुद्धि भी देखने को मिलती है। ब्राह्मण टोली के लोग बालदेव जी से पूछते हैं, "डाक्टर बाबू का नौकर तो दुसाध है। और डाक्टर बाबू कौन

जात है? दुसाध का बनाया हुआ खाते हैं।" "अलग अलग जातियों के लोग एक पंक्ति में बैठकर या साथ साथ खाना नहीं खाते जो कि जीवन की सामान्य परिस्थितियों के प्रति मोह है और रूढ़िवादिता की मनोवृत्ति है। विवाह शादी व श्राद्ध भोज के समय पुरखों से चली आ रही रीतियों व परम्पराओं को नहीं छोड़ना चाहते। "गांव में किसी के यहां शादी-व्याह या श्राद्ध का भोज हो, गृहपति स्नान करके गले में कपड़े का खूंट डालकर कमला मैया के पान सुपारी के निमन्त्रित करता है।" "जबान कमला के रिश्ते के सम्बन्ध में लोगों का अन्धविश्वास इन पंक्तियों में प्रस्तुत है। "यह देखिए न। तीन जगह बातचीत चली, मगर पहली जगह से तो पान देने की बात भी पक्की हो गई थी। ठीक तिलकपान के दिन लड़के की मां मर गई। दूसरी जगह बातचीत ठीक हुई तो उसके घर में आग लग गई। तीसरे लड़के को 'मैया' हो गया, इन्तकाल हो गया।" "यह सब प्राकृतिक बातें हैं परन्तु लोगों के विश्वास में कमला मैया (नदी) नहीं चाहती है कि कमला की शादी हो। यह सब कमला मैया का प्रकोप है। इस तरह कौरी के मूल जंगल में बगुले की तरह उजली प्रेतनी का रहना, डायन के प्रभाव से डाक्टर के घर में ढाई हाथ का घोड़ा करैत सांप का निकलना, पीर का रूप बदल कर घूमना, किसी पेड़ को पीर का वास समझ कर चिथड़े लटकाना, टोकना, नजर लगाना, गर्भवती का बौने को देखने की व वर्जना, सिन्दूर लगाने से नाक पर झड़ने से पति का लाड़ मिलना आदि ऐसे प्रचलित अन्धविश्वास हैं जिन्हें यह लोग छोड़ना नहीं चाहते और अपनी सोच में नूतनता से परहेज करते हैं। उपन्यास में असंख्य ऐसे उदाहरण और भी हैं जिनमें मेरीगज की सांस्कृतिक विलम्बना, वैचारिक पिछड़न, अन्धविश्वास, व नूतनता के प्रति भय दृष्टि व अलगाव को खोजा जा सकता है। अमूमन अभौतिक संस्कृति का यह पक्ष जिसमें ग्रामीणों की अबूझता के दर्शन होते हैं, मेरीगज के माध्यम से यह सारे भारत के गांवों की वैचारिक पिछड़न का प्रतीक है, जहां आज भी समाज अन्धविश्वासों, पुरातनताओं व भेदभाव के दृष्टिकोण पर चलता है जबकि विज्ञान इन सब भावों को असत्य व व्यर्थ ठहरा चुका है। यह उपन्यास तो बीसवीं शती के छठे दशक के भारतीय ग्रामीण परिपार्श्व को प्रस्तुत करता है परन्तु अभूतपूर्व वैज्ञानिक तरक्की के बाद भी हम अभी तक भारतीय मानसिकता में वैज्ञानिक सोच सृजित नहीं कर पाए हैं। आज भी अन्धविश्वासों व पुरातन भावों के चलते भारतीय समाज शोषण का शिकार है। व्यक्तियों की रूढ़िवादिता, आपसी वैमनस्य, परस्पर व्यवहार, निहित स्वार्थों, अतीत के प्रति लगन, वहां के लोगों का नवीन विचारों व वस्तुओं के प्रति भय तथा नवीन विचारों की परीक्षा में कठिनता ही ऐसे कारण हैं जिससे मेरीगज की अभौतिक संस्कृति में अधिक परिवर्तन नहीं हो पाते। अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन न हो पाना ही सांस्कृतिक विलम्बना है।

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. डॉ० लक्ष्मी सागर वर्ण्य - हिन्दी उपन्यास।
2. डॉ० गोपाल राय - हिन्दी उपन्यास का विवरण।
3. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आंचल की भूमिका।
4. जी के अग्रवाल, समाजशास्त्र, साहित्य भवन, आगरा पृ० 283।
5. सचदेव और गुप्ता, सरल समाजशास्त्र अंजता प्रकाशन दिल्ली पृ० 238।
6. रायट वीरस्टीह, द सोशल आर्डर, पृ० 167-170।
7. वीरस्टीह, द सोशल आर्डर, पृ० 158-60।
8. डा० जी० के० अग्रवाल समाजशास्त्र, 1983 साहित्य सदन आगरा।
9. डा० जी० के० अग्रवाल समाजशास्त्र, 1983 साहित्य सदन आगरा।
10. मैला आंचल पृ० 19।
11. मैला आंचल पृ० 30।
12. मैला आंचल पृ० 50।
13. मैला आंचल पृ० 45।
14. मैला आंचल पृ० 115।
15. मैला आंचल पृ० 58।
16. मैला आंचल पृ० 57।

डॉ. शिव कुमार मिश्रा

व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय,  
कोटा

शोध श्री



shodhshree@gmail.com

राजस्थान के भक्ति आंदोलन में मीरा, गवरीबाई, फूलीबाई, रानी रूपादे, रानी सोलखड़ी, सहजोबाई, दयाबाई आदि संत महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनमें मेवात की संत महिला सहजोबाई, दयाबाई, मलनीबाई आदि प्रमुख थी। उत्तर-पूर्वी राजस्थान के मेवात में चरणदासी एवं लालदासी सम्प्रदाय ने भक्ति आन्दोलन का विस्तार किया। चरणदासी सम्प्रदाय के संस्थापक चरणदास की शिष्या सहजोबाई एवं दयाबाई ने इस सम्प्रदाय की विचारधारा को विस्तारित किया। सहजोबाई चरणदास की शिष्याओं में प्रधान थी।

**सहजोबाई:-** सहजो बाई का जन्म अलवर के देहरा गांव में संवत् 1782 में हुआ। इनके पिता हरि प्रसाद एवं माता अनुपी देवी थी। इनकी माता अनुपी देवी चरणदास की बुआ थी। सहजो बाई जीवन भर अविवाहित रही। अपने गुरु चरणदास से दीक्षा प्राप्त करने के बाद में दिल्ली में रहने लगी और वही अपनी गद्दी स्थापित की। इन्होंने छोटी उम्र में ही 'सहज प्रकाश' नामक ग्रंथ की रचना की। इनकी अन्य कृतियों में 'सोलह तिथि' एवं 'सबद वाणी' है। 'सोलह तत्व निर्णय' इनकी रचना मानी जाती है।

इनके प्रमुख ग्रंथ 'सहज प्रकाश' से गुरु महिमा, प्रेम साधना, वैराग्य आदि विचारों का ज्ञान होता है। कबीर की भांति ही सहजोबाई ने भी गुरु की महत्ता पर बल दिया। उनका मानना था कि गुरु ही इस सांसारिक माया जाल से मुक्ति दिला सकता है। गुरु की महत्ता को उन्होंने 'सहज प्रकाश' में बताते हुए कहा-

“गुरु है चार प्रकार के, अपने-अपने अंग।  
गुरु पारस दीपक गुरु, मलयागिरि गुरु भृंग।।  
चरणदास समरथा गुरु, सर्व अंग तेहि माहिं।  
जैसे कूँ तैसा मिलै रीता छाँई नाहिं।।

गुरु के चार गुणों के बारे में बताते हुए वे कहती हैं कि गुरु पारस के समान है गुरु दीपक के समान है, गुरु मलयागिरि के समान है, गुरु भृंग के समान है।

उन्होंने तन-मन से परोपकारी बनने की बात कही। उन्होंने प्रेम की भावना के सम्बन्ध में कहा-

प्रेम दिवाने जे भये, मन भयी चकनाचूरा  
छके रहे घूमत रहे, सहजो देखा हजूरा।  
साहन कूँ तो भय घना, सहजो निर्भय रंका  
कुंजर के पग बेड़ियां, चींटी फिरै निसंका।  
अभिमानी नाहर बड़ी, भरमत फिरत उजारा।  
सहजो नन्ही बाकरी, प्यार करै संसारा।

उन्होंने अपनी प्रेम भावना को बकरी एवं चींटी के माध्यम से व्यक्त किया है। सहजो ने प्रेम में सुध-बुध खोने की बात करते हुए कहा-

प्रेम दिवाने जो भये, प्रीतम के रंग माहिं।  
सहजो सुधि बुधि सब गई, तन की सोधी नाहिं।।

संसार को क्षीण एवं अनित्य मानते हुए सहजो वैराग्य की बात करते हुए कहती हैं-

“..... अपना तो कोई है नहीं, अपनी सगी न देहा  
..... सहजो जीवित सब सगे, मुए निकट नहीं जायां

इनके विचारों में निर्गुण और सगुण दोनों ही विचारधाराओं का समन्वय दिखाई देता है। इनके गुरु चरणदास श्रीमद् भागवत में भी विश्वास करते थे।

सहजोबाई ने सामाजिक समानता, भ्रातृत्व, परनिंदा का त्याग, अहिंसा, मादक द्रव्यों का परित्याग, सत्य बोलना, अहंकार का त्याग, सेवा भावना आदि विचारों का प्रचार किया।

संत सहजोबाई के दस शिष्य माने गये जो बड़नामी कहलाये। सहजो बाई के प्रमुख शिष्यों में मलनीबाई, हरजी दास, रामप्रसाद, रामधन आदि थे, जिन्होंने इनके विचारों को प्रचारित किया। सहजो बाई की मृत्यु 80 वर्ष की अवस्था में संवत् 1812 में हुई।

**दयाबाई:-** इनका जन्म 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में देहरा में हुआ। दयाबाई चरणदास के चाचा केशव की पुत्री थी। ये अपनी बुआ रमा बाई की पुत्री अनुपी बाई के साथ चरणदास की सेवा में चली गईं। दयाबाई ने अपनी प्रमुख रचना 'दया बोध' में इस ग्रंथ के लेखन की तिथि का उल्लेख किया है। इस ग्रंथ की तिथि का उल्लेख करते हुए लिखा-

“संवत ठारा से समे, मुनि ठारा गये बीति  
चैत सुदी तिथि सातवीं, भयो ब्रंधा तुम रीति।।”

इनका अन्य ग्रंथ 'विनय मालिका' है। इनके गुरु भाई जोगजीत ने इनके कुल, साधना, गुरु एवं प्रेम भक्ति के बारे में 'लीला सागर' में लिखा-

दूसर कुल में प्रगट भाई, दयाबाई सिरताजा  
शरण लई गुरुमुखा भाई, कृपा पात्र महाराजा।।  
प्रेम परा भक्ति प्रगटाई, श्री हरिगुरु से लगन लगाई  
सर्व सुलक्षण जगत उजागर, शील क्षमा जत सत को सागर।।

इनकी रचनाओं में सहजो बाई के समान ही गुरु महिमा, प्रेम की भावना, वैराग्य आदि के बारे में वर्णन है। इनके विचारों की एक प्रमुख बात यह थी कि इन्होंने निर्गुण भक्ति की बात कही। दया बाई ने अपने गुरु चरणदास को ही ईश्वर मान लिया। उन्होंने 'दया बोध' में लिखा-

गुरु किरपा विन होत नहिं, भाव भक्ति विचारा  
जोग जज्ञ जप तप 'दया' केवल ब्रह्म विचारा।।  
प्रेम पंथा है अटपटी, कोई न जानत वीरा  
कै मन जानत आपनो के लागी जिह पीरा।।  
निरपच्छी के पछ तुम निराधार के धारा  
मेरे तुम ही नाथ इक, जीवन प्राण अधारा।।  
नहि संगम नहि साधना, नहि तीरथा वृतदाना  
मात भरीसौ रहत है, ज्यों बालक नादाना।।  
सीस नवै तो तुमहिं कूँ, तुमहिं सूँ आखुं दीना  
जो इगुरू तो तुमहिं सो तुम चरनन आधीना।।  
तुमहिं सूँ टेका लगौ, जैसे चन्द्र चकोरा  
अब कासूँ इंखा करौ, मोहन नन्दकिसोरा।।

दयाबाई ने अपने पदों में अपना नाम 'दया कुंवर' एवं 'दयादास' बताया। यह भी सहजो बाई की तरह अविवाहित रही। उनकी शैली सहजो बाई से मिलती जुलती है।

इन्होंने अपने विचारों का प्रचार-प्रसार उत्तर प्रदेश के कानपुर, बिदुर एवं प्रयाग में भी किया। इनकी समाधि कानपुर के बिदुर के पास 'रमेल' में है। यही इनकी मृत्यु हुई। उत्तरप्रदेश के इन इलाकों में इनसे सम्बन्धित कई मंदिर हैं। आज भी कानपुर, बिदुर के लोग इनकी भक्ति भावना की चर्चा करते हैं।

इस प्रकार मेवात की सहजोबाई एवं दयाबाई ने भक्ति परम्परा को न केवल मेवात में फैलाया बल्कि दिल्ली, कानपुर, बिदुर, प्रयाग में भी भक्ति की परम्परा को बढ़ाया।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. मेनारिया, पुरुषोत्तम लाल : राजस्थानी संत साहित्य, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2002, पृ. 95
2. अनुपम, राजेश : राजस्थान के संत, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2009, पृ. 97
3. पेमाराम : राजस्थान में धर्म, सम्प्रदाय एवं आस्थाएँ, इतिहास विभाग, वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान), 2004, पृ. 217
4. सहजो बाई : सहज प्रकाश, पृ. 2
5. उपर्युक्त, पृ. 34
6. उपर्युक्त, पृ. 17
7. माधुरीशरण, रूप : चरणवत वैष्णव सदाचार, पृ. 27
8. पेमाराम, पूर्वोक्त, पृ. 217
9. दयानाई : दयानोध, पृ. 11
10. जोगजीत : लीलासागर, पृ. 228
11. उपर्युक्त, पृ. 228
12. उपर्युक्त, पृ. 9
13. शुक्ल, श्यामसुन्दर : चरणदासी सम्प्रदाय और साहित्य, पृ. 569

## सुरेन्द्र वर्मा का नाट्य सृजन और आठवां सर्ग

डॉ. सुमन कँवर

प्रवक्ता, श्री भवानी निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जयपुर



shodhshree@gmail.com

1960 के पश्चात् हिन्दी नाट्य-साहित्य में अत्यधिक परिवर्तन आया। आज से पूर्व जो नाटक थके-हारे मन के मनोरंजन का साधन मात्र था, जिसने केवल धार्मिक-पौराणिक एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जनमानस में जागृति उत्पन्न की, वही साठोशर वर्षों में आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर एवं कल्पना से वास्तविक जगत की ओर मुड़ा। मानव-जीवन, उसके विविध पक्ष, उसकी समस्याएँ तथा समाधान, चिंतन आदि अब नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत किये जाने लगे। यहाँ पौराणिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विषयों को भी समकालीन बोध से संपृक्त कर प्रस्तुत किया जाने लगा। विष्णु प्रभाकर, भीष्म साहनी, जगदीश चन्द्र माथुर, लक्ष्मीकान्त वर्मा, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, ज्ञानदेव अग्निहोत्री और अमृतराय आदि ने इसी प्रकार के नाटक लिखे। श्री सुरेन्द्र वर्मा ने अपने नाटकों के माध्यम से समस्या नाटकों की इसी शृंखला को विकसित किया।

सुरेन्द्र वर्मा आठवें दशक के एक चर्चित साहित्यकार हैं, जिन्होंने अनेक उपन्यास लिखे। व्यंग्य लेख तथा समीक्षा लेखों पर भी इन्होंने अपनी लेखनी चलाई परन्तु इनकी योग्यता का चरमोत्कर्ष हमें इनके नाट्य-साहित्य में ही उभरता दिखाई देता है। इनके प्रारंभिक नाटकों में 'सेतुबंध', 'नायक खलनायक विदूषक' तथा 'द्रौपदी' नामक नाटक उल्लेखनीय हैं। इन सभी नाटकों का प्रकाशन 1972 में हुआ। 1975 में इनका एक अन्य नाटक 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशन के साथ ही वर्मा जी हिन्दी-नाट्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप में स्थापित हो गए। 1976 में इनका एक अन्य नाटक 'आठवां सर्ग' प्रकाशित हुआ। इसी दौरान सुरेन्द्र वर्मा ने 'नींद क्यों रात भर नहीं आती' नामक एकांकी - संग्रह की रचना की। इसमें छः एकांकियाँ संकलित हैं। इनमें 'शनिवार को दो बजे', 'हरी घास पर घंटे भर' तथा 'नींद क्यों रात भर नहीं आती' नामक एकांकी विशेष उल्लेखनीय हैं। 'शनिवार को दो बजे' में यौन संबंधों के बदलते स्वरूप को अभिव्यक्त किया गया है तो 'हरी घास पर घंटे भर' में शाम को पार्क में बैठे तीन दंपतियों की कहानी प्रस्तुत की गई है। इसी प्रकार 'नींद क्यों रात भर नहीं आती' नामक एकांकी में वर्तमान जीवन में बढ़ती अकेलेपन की समस्या को उभारने का प्रयास किया गया है।

सन् 1980 में इनका 'छोटे सैयद बड़े सैयद' नाटक तथा 1987 में इनका 'एक दूनी एक' नाटक प्रकाशित हुआ। यह एक प्रयोगशील नाटक है तथा इस नाटक में स्त्री-पुरुष संबंधों को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात् इन्होंने 'कैद-ए-हयात' और 'शकुंतला' की अंगूठी नामक नाटक लिखे। इसमें कोई संदेह नहीं कि सुरेन्द्र वर्मा आठवें दशक के उभरते हुए नाटककार हैं। इनके अधिकांश नाटकों की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक तथा पौराणिक है परन्तु इस प्रकार की पृष्ठभूमि के माध्यम से उन्होंने परम्परा एवं आधुनिकता के द्वंद्व को तो प्रस्तुत किया ही है, साथ ही समकालीन संदर्भों की भी अत्यंत प्रभावशाली प्रस्तुति की है। उनके नाटकों में नवीन रंगमंचीय प्रयोग विशेष रूप से दृष्टिगत होते हैं। उनके प्रमुख नाटकों में 'द्रौपदी', 'आठवां सर्ग', 'छोटे सैयद बड़े सैयद', 'कैद-ए-हयात', 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' तथा 'एक दूनी एक' का नाम लिया जा सकता है।

'आठवां सर्ग' सुरेन्द्र वर्मा का एक उल्लेखनीय नाटक है। इस नाटक के प्रकाशन के साथ ही उन्होंने हिन्दी नाट्य-जगत में अपना उल्लेखनीय स्थान बना लिया। प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु उस ऐतिहासिक एवं पौराणिक संदर्भ से जुड़ी है, जहाँ कालिदास के द्वारा 'कुमार संभव' नाटक लिखने का उल्लेख किया गया है। ऐतिहासिक तथ्य कालिदास को चन्द्रगुप्त-द्वितीय के दरबार के नवरत्नों के रूप में प्रमाणित करते हैं। इसी तथ्य को आधार बनाकर सुरेन्द्र वर्मा ने इस नाटक की रचना की है। 'कुमारसंभवम्' के व्याज से लिया गया अश्लीलता

का पक्ष तो समकालीन कला के लिए प्रासंगिक है ही, पर अगर आपातकालीन भारत में लेखकीय अभिव्यक्ति बनाम शासन के रेखांकन की दुहरी सार्थकता की प्रतीति न होती, तो .....आत्मान्वेषण के मोह के बावजूद-यह कृति शुरू न की जाती।" इस नाटक की कथावस्तु उज्जयिनी नगरी तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्र के ही आसपास मंडराती रहती है। प्रस्तुत नाटक प्रमुखतः तीन अंकों में विभक्त है।

इस नाटक में कालिदास, प्रियंगुमंजरी, चन्द्रगुप्त, अनुसूया, प्रियंवदा, सौमित्र, कीर्तिभट्ट आदि प्रमुख पात्र हैं। नाटक का प्रारम्भ उज्जयिनी में कालिदास के भवन के बाहरी कक्ष में ढलती दोपहर के समय से होता है। कथानक का प्रारम्भ कालिदास के द्वारा 'कुमार संभव' महाकाव्य के आठवें सर्ग की रचना के समापन से होता है। कविवर नगर से पचास कोस दूर एक कुटीर में रहकर महाकाव्य का आठवां सर्ग पूर्ण करके नगर में लौटते हैं। यह पूर्व निर्धारित है कि कविवर को कामोत्सव के दिन राजसभा में आठवें सर्ग का काव्यपाठ करना है तथा उसी समारोह में उनका पट्टबंध सम्मान भी होना है। प्रियंवदा और कीर्तिभट्ट नामक सेविका और सेवक के पारस्परिक वार्तालाप से नाटककार यह स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार एक रचनाकार को रचना करते समय आत्मान्वेषण की कठिन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। मूल प्रसंग के साथ-साथ नाटककार ने सेवक-सेविकाओं के वार्तालाप के माध्यम से गुप्तकालीन परिवेश को पाठकों के समक्ष जीवंत करने का भी प्रयत्न किया है। संस्कृत-साहित्य में वसन्तोत्सव को कामोत्सव के रूप में मनाने की परंपरा को भी नाटककार ने भली-भाँति निभाया है। प्रथम अंक में ही एक मास में कुटीर-प्रवास के पश्चात् लौटे कालिदास के पत्नी प्रियंगुमंजरी के साथ कुछ श्रृंगारिक प्रसंगों की ओर भी संकेत किया गया है। वह दिन, जबकि कविवर कुटीर-प्रवास के पश्चात् नगर को लौटे हैं, कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण बन गया है। नाटककार ने संकेत किया है कि एक मास के प्रवास के पश्चात् प्रियतम का लौटना प्रिय के लिये यों भी महत्वपूर्ण होता है, इस पर यदि वह दिन वसन्तोत्सव का हो तो उत्साह दुगुना हो जाता है और यदि वसन्तोत्सव पर ही राजसभा में कालिदास को 'आठवें सर्ग' का पाठ करना हो और सम्राट के द्वारा उनका पट्टबंध सम्मान किया जाने वाला हो तो इस दिन का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।<sup>1</sup>

इतने मांगलिक एवं आह्लादकारी पर्व पर भी प्रियंगुमंजरी को अनेक अपशकुन होते हैं तथा उसके हृदय में अनेक प्रकार की आशंकाएँ जन्म लेने लगती हैं। सेविका प्रियंवदा उसे समझाती है कि इतने मांगलिक एवं शुभ अवसर पर उन्हें इस प्रकार के अशुभ विचार मन में नहीं लेने चाहिए। कालिदास पत्नी प्रियंगुमंजरी के समक्ष राजसभा में दिये जाने वाले वक्तव्य का पूर्व अभ्यास करते हैं। इसके माध्यम से 'कुमारसंभव' महाकाव्य की प्रथम सात सर्गों की मूल कथा ज्ञात होती है तथा यह भी ज्ञात होता है कि आठवें सर्ग में उमा और महादेव की श्रृंगार लीलाओं का वर्णन किया गया है।<sup>2</sup> इसी सर्ग में प्रियंगुमंजरी 'कुमारसंभव' के आठवें सर्ग के चित्रण से स्वयं को जुड़ा हुआ अनुभव करके लज्जित अनुभव करती है। इसी समय महारानी प्रियंगुमंजरी को समारोह से कुछ पूर्व आने के लिये रथ भेजती है परन्तु वह अस्वस्थता के बहाने अपने भवन में ही रुकना पसंद करती है। कालिदास के इस कथन के साथ कि 'अगले जन्म में किसी कवि या लेखक से ब्याह मत करना। अच्छा।'<sup>3</sup> प्रथम अंक का समापन हो जाता है।

नाटककार ने द्वितीय अंक का प्रारम्भ उस अमंगलकारी समारोह से किया है, जिसमें कालिदास को आठवें सर्ग का पाठ करना था। कतिपय धर्माध्यक्षों और राजनीतिज्ञों की आपत्ति पर समारोह रद्द कर दिया जाता है। जिस समारोह में कालिदास की काव्य-प्रतिभा का सम्मान होता था, वही समारोह उनके अपमान-समारोह में बदल जाता है। प्रियंगुमंजरी अपने भवन में समारोह के समाचार जानने के लिए व्यग्र है कि उसकी दोनों सेविकाएँ, प्रियंवदा तथा अनुसूया आ जाती हैं। अनुसूया उसे बताती है कि किस प्रकार कालिदास के काव्यपाठ के दौरान उमा और महादेव की क्रीड़ा-केलि के वर्णन को लेकर धर्म-गुरु ने कालिदास पर जगतपिता महादेव और जगत जननी पार्वती के भोग विलास का अश्लील चित्रण करने का आरोप लगाया तथा उन्हें एवं समारोह के सभी श्रोताओं को पापी बताया। उनके पश्चात् राजपुरोहित एवं धर्माध्यक्ष ने समारोह का बहिष्कार किया और सम्राट से इसके लिए क्षमायाचना की। महादण्डनायक ने इस सर्ग को मर्यादाहीन बताया तथा मंत्री-परिषद् के पौंच-छः वृद्ध सदस्यों ने कहा कि इस प्रकार के वर्णन से उनकी धार्मिक भावनाओं को गहरी ठेस पहुँची है। यहाँ तक कि व्यापारी वर्ग के प्रधान सोमदत्त ने भी इस सर्ग को अश्लील बताया तथा प्राध्यापक विद्या भास्कर ने 'कुमार संभव' को प्रतिबंधित करने की माँग की क्योंकि उन्हें आशंका थी कि यह सर्ग नवयुवकों एवं नवयुवतियों पर बुरा प्रभाव

डालेगा। केवल आर्य सौमित्र ने सर्ग को अश्लील कहने का विरोध किया। उन्होंने कहा कि जो लोग पति-पत्नी के संबंधों में अश्लीलता देखते हैं, अश्लीलता उनकी आँखों और उनके मन में है।<sup>4</sup> उनके पश्चात् कुछ नवयुवक रचनाकारों ने भी सर्ग का समर्थन किया और कहा कि पुरानी पीढ़ी की साहित्यिक चेतना केवल वाल्मीकि रामायण तक ही सिमट कर रह गयी है। इस प्रकार का वाद-विवाद जब अत्यधिक बढ़ गया तब सम्राट ने विवश होकर सम्मानायोजन के स्थगन की घोषणा कर दी तथा दोनों दलों के चुने हुए लोगों के साथ-भीतरी कक्ष की ओर चले गये।

यह समाचार सुनकर प्रियंगुमंजरी परेशान हो उठती है तथा सेविका से स्वामी के विषय में पूछती है। अनुसूया बताती है कि सभामण्डप में अव्यवस्था होते ही स्वामी चुपचाप वहाँ से चले गये। यह किसी को नहीं मालूम कि वे कहाँ गये? यह सुनकर प्रियंगुमंजरी व्याकुल हो उठती है। तभी आर्य सौमित्र वहाँ आते हैं, जो कालिदास के मित्र भी हैं। प्रियंगुमंजरी और आर्य सौमित्र के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि यह दुर्घटना कालिदास की बढ़ती हुई ख्याति से ईर्ष्या करने वाले दिङ्नाग आदि रचनाकारों के वर्ग के षडयंत्र का प्रतिफल है। सौमित्र के जाते ही कालिदास घर लौटते हैं। उनके वस्त्र मलिन हैं, बाल बिखरे हैं तथा हाथ में 'कुमार संभव' की पाण्डुलिपि है। प्रियंगुमंजरी के पूछने पर वे बताते हैं कि वे मन की शांति के लिए नगर के बहार शिप्रा के निर्जन तट की ओर चले गये थे। इसी समय उन्हें धर्माध्यक्ष के आगमन की सूचना मिलती है। प्रियंगुमंजरी मिलने से इंकार करने के लिए कहती है परन्तु कालिदास उन्हें बुलाने का आदेश देते हैं। दोनों के मध्य व्यंग्यात्मक वार्तालाप होता है। धर्माध्यक्ष के द्वारा कालिदास को ज्ञात होता है कि 'कुमारसंभव' का आठवां सर्ग अश्लील है या नहीं, इसकी जाँच के लिए एक समिति गठित की गयी है, जिसमें नगर के सम्पन्न व्यवसायी दिवाकरदत्त, विख्यात आयुर्वेदाचार्य श्री पुंडरीक, प्रधान अधिकरणिक आर्य सौमित्र तथा धर्माध्यक्ष आदि को शामिल किया गया है। इस समिति की अध्यक्षता प्रधान अधिकरणिक को सौंपी गयी है जो वयोवृद्ध होने के साथ-साथ न्याय पटु भी है।<sup>5</sup> नाटककार ने इस वर्णन के द्वारा समकालीन राजनीति की समिति गठित करने की प्रथा पर व्यंग्य किया है जो केवल एक औपचारिकता होती है तथा उसमें उन सदस्यों को शामिल किया जाता है जो समिति गठित करने के उद्देश्य को समझते ही नहीं हैं।<sup>6</sup> इस प्रसंग के द्वारा नाटककार ने यह भी इंगित किया है कि प्रत्येक युग में एक साहित्यकार की रचनाशीलता को अत्यधिक संघर्ष से गुजरना पड़ता है। वार्तालाप के दौरान धर्माध्यक्ष महोदय कालिदास को यह भी संकेत देते हैं कि गठित न्याय समिति 'कुमार संभव' पर तो प्रतिबंध लगायेगी ही, साथ ही नागरिकों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के लिए लेखक को सार्वजनिक रूप से क्षमायाचना करने के लिए भी बाध्य करेगी।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि आधुनिक हिन्दी नाटकों में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण आधुनिक हिन्दी साहित्य में काम को मंगलमय श्रेय के धरात पर चित्रित करने की चेष्टा की गई है। स्वयं प्रसाद ने 'कामायनी' में 'काम मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम' कहकर इसी विचारधारा का समर्थन किया है। सुरेन्द्र वर्मा ने 'आठवां सर्ग' में काम के इसी पक्ष की पैरवी की है।<sup>7</sup>

तीसरा अंक प्रस्तुत नाटक का एक महत्वपूर्ण अंक है। यहाँ नाटककार हर्ष और विषाद नामक जीवन की दोनों स्थितियों को साथ लेकर चला है। यही कारण है कि नाटककार ने इस अंक को दो दृश्यों में विभक्त किया है। प्रथम दृश्य में नाटककार ने पुनः प्रथम अंक के वसन्तोत्सव के उल्लास को अभिव्यक्त किया है तथा दूसरे और तीसरे अंक के कथासूत्र में तीन वर्ष के लंबे अंतराल को कुशलता पूर्वक समेटने का प्रयास किया है। तीसरे अंक के प्रथम दृश्य का प्रारम्भ नाटककार ने रंगों के पात्रों में पानी भरती, 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक की पंक्तियों गुनगुनाती अनुसूया से किया है। सेवक कीर्तिभट्ट और अनुसूया की आपसी छेड़छाड़ के माध्यम से नाटककार ने तीन वर्ष के दीर्घ अंतराल के बाद एक बार पुनः मदनोत्सव एवं कालिदास के राजकीय सम्मान के कथासूत्र को पकड़कर नाटक की कथा को सफलतापूर्वक चरमोत्कर्ष तक पहुँचाया है। अनुसूया और कीर्तिभट्ट के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि कालिदास एक लब्धप्रतिष्ठ कवि एवं नाटककार के रूप में स्थापित हो चुके हैं। उनका 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक भारत के कोने-कोने में प्रशंसित तथा मंचित हो चुका है तथा अब इस मदनोत्सव पर वे नगर के कोलाहल से दूर एक कुटीर में 'रघुवंश' नामक महाकाव्य की रचना में तल्लीन हैं। उनकी व्यापक ख्याति को देखकर तीन वर्ष बाद एक बार पुनः शासन उन्हें सम्मानित करने की योजना बनाता है।

इसी उद्देश्य से रंगशाला में कालिदास के सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया जाता है। प्रियंवदा

एवं अनुसूया नामक परिचारिकाओं के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि आज वसंतोत्सव के दिन राजधानी में अच्छी खासी बहल-पहल है। चारों ओर 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' एवं उसके पात्रों की चर्चा है आज से पूर्व संस्कृत नाटकों के इतिहास में किसी भी नाटक को इतनी लोकप्रियता एवं गौरव प्राप्त नहीं हुआ, जितना कि 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' को। इसी समय कालिदास की पत्नी प्रियंगुमंजरी का मंच पर प्रवेश होता है। वह दोनों परिचारिकाओं को अपने अपशकुनों के विषय में बताती है। दोनों ही उन्हें आश्चर्य करती हैं कि आज के दिन ऐसा कुछ भी अशुभ एवं अपमानजनक नहीं होने वाला जैसा कि आज से तीन वर्ष पूर्व हुआ था। आज का दिन निस्संदेह ही मांगलिक है। वे कहती हैं कि कालिदास तो पहले ही लोक-मानस के द्वारा अभिनंदित हो चुके हैं, शासन के द्वारा उनका अभिनंदन तो एक औपचारिकता मात्र है। यह सुनकर भी प्रियंगुमंजरी आश्चर्य नहीं हो पाती क्योंकि वह राजधानी में चल रहे राजनीतिक कुचक्रों और षडयंत्रों से भली-भाँति परिचित है। इसी समय कीर्तिभट्ट का प्रवेश होता है और प्रियंगुमंजरी उनसे पूछती है कि स्वामी (कालिदास) अभी तक क्यों नहीं आये? कीर्ति भट्ट बताता है कि कविवर रचना में तल्लीन है तथा वे चल रहे प्रसंग को समाप्त कर सीधे ही रंगशाला के समारोह में पहुँचेंगे। इसके पश्चात् वह प्रियंगुमंजरी को बताता है कि वह आजकल कितनी मानसिक यातना झेल रहा है। वह कवि का निकटतम सेवक है परन्तु फिर भी कवि ने किसी कृति में उसका जिक्र नहीं किया जबकि प्रियंवदा और अनुसूया 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के माध्यम से पर्याप्त ख्याति अर्जित कर चुकी है प्रियंगुमंजरी उसे कवि से इस संदर्भ में बातचीत करने का आश्वासन देती है। इसी समय राजभवन से रथ आ जाता है। प्रियंगुमंजरी दोनों परिचारिकाओं के साथ समारोह में चली जाती है। यही पर तीसरे अंक का प्रथम दृश्य समाप्त हो जाता है। प्रथम दृश्य का समापन मंच पर फैले अंधकार से होता है और द्वितीय दृश्य का प्रारंभ भी मंच पर फैले अंधकार एवं उदास संगीत से होता है। प्रथम दृश्य का अंधकार मंचीय पटाक्षेप का संकेतक है तो द्वितीय दृश्य का अंधकार वातावरण में व्याप्त अवसाद एवं निराशा का संकेतक है।

समारोह से लौटकर प्रियंवदा व अनुसूया घर में दीप प्रज्वलित कर प्रकाश की व्यवस्था करती हैं। इसी समय प्रियंगुमंजरी वहाँ आती है और उनसे कहती है कि उसे जो अपशकुन हो रहे थे, वे असत्य एवं निरर्थक नहीं थे। दोनों परिचारिकायें व्यथित होकर कहती हैं कि ऐसा प्रतीत होता है मानो वसंतोत्सव को इस घर से बैर हो रहा है। इसलिए वसंतोत्सव यहाँ प्रसन्नता और आल्हाद लेकर नहीं आता। प्रियंगुमंजरी रंगशाला में आयोजित सम्मान समारोह तथा वहाँ एकत्र विशाल जन समुदाय के उत्साह का स्मरण करने लगती है। उसके इसी स्वगत कथन से ज्ञात होता है कि इस बार के सम्मान समारोह में नगर के सभी प्रतिष्ठित जन उपस्थित थे किन्तु कविवर का आसन खाली था क्योंकि वे वहाँ पहुँचे ही नहीं। कविवर को बुलाने के लिए एक धाव को कुटीर तक भी भेजा गया परन्तु वे वहाँ भी नहीं थे। अतः समारोह एक बार फिर विफल रहा। राज्य एक बार फिर कवि को सम्मानित करने का गौरव प्राप्त नहीं कर सका। इसी बीच आर्य सौमित्र प्रियंगुमंजरी से भेंट करने आते हैं। वे बताते हैं कि उन्हें कविवर का मन कुछ समय से उचाट-सा प्रतीत हो रहा है। इसी वार्तालाप से यह संकेत भी मिलता है कि पिछले दिनों राजधानी में अनेक विभूतियाँ पधारी, जिनमें वीणावादक तुषारगिरी, कवि मयंक सागर, विदर्भ की नाट्य मण्डली परन्तु कविवर किसी भी समारोह में उपस्थित नहीं हुए। उन्होंने पहले इन्द्र धनुष के स्वागत में आयोजित उत्सव में भी भाग लिया। सौमित्र बताते हैं कि आज प्रातःकाल उन्होंने आज की पीड़ा का अभिव्यंजक एक श्लोक उन्हें सुनाया था, जिसे सुनकर उनका हृदय आशंका से भर गया। प्रियंगुमंजरी भी उन्हें अपनी आशंकाओं के विषय में बताती है। इसी समय कालिदास वहाँ आ जाते हैं। प्रियंगुमंजरी उनसे पूछती है कि वे इस समय कहाँ से आ रहे हैं? तब वे बताते हैं कि वे शिप्रा के तट पर बैठे प्राकृतिक सौन्दर्य को निहार रहे थे। वे उस सौन्दर्य में इतने डूब गये कि उन्हें लगा कि इस अतुलित सौन्दर्य राशि को छोड़कर सम्मान समारोह में जाना व्यर्थ है। कहीं ये निष्कलंक और पावन सौन्दर्य और कहीं ईर्ष्या-द्वेष, षडयंत्र और छल से भरपूर वह मायानगरी? वे बताते हैं कि उन्हें यह सम्मान-समारोह निरर्थक प्रतीत हुआ क्योंकि वे जनमानस की अथाह प्रशंसा पहले ही प्राप्त कर चुके हैं। इस प्रशंसा ने उन्हें जो आत्म संतोष प्रदान किया है, वह इस सम्मान समारोह से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

इसी समय सम्राट चन्द्रगुप्त वहाँ आ जाते हैं। कालिदास उन्हें बताते हैं कि वे समारोह में अनुपस्थित रहकर किसी भी प्रकार की अविनय का परिचय नहीं देना चाहते थे। उन्हें अचानक तीन वर्ष पहले का वह राजकीय सम्मान समारोह स्मरण हो आया था जो क्षणभर में अपमान समारोह में बदल गया था। वे सम्राट से कहते हैं कि वे

अपने अश्वमेध यज्ञ के दौरान जिन-जिन क्षेत्रों में गये, वहाँ-वहाँ उन्होंने स्वयं देखा कि उनके भीतर का रचनाकार जनमानस में कितनी गहराई तक बस चुका है। वे सम्राट से प्रश्न पूछते हैं कि क्या वे इस सम्मान समारोह के द्वारा उस अपमान समारोह को अनकिया करना चाहते हैं, जिसमें उन पर कुसंस्कृत और अश्लील रचनाकार होने का आरोप लगाया गया था? आगे वे कहते हैं कि जब वे साहित्याकाश के उभरते सितारे थे, तब उन्हें स्थापित होने के लिए राजकीय संरक्षण की आवश्यकता थी परन्तु आज जबकि वे अपनी रचनाओं के माध्यम से जनमानस में गहराई तक पैठ चुके हैं, तब उन्हें इस सम्मान समारोह की कोई आवश्यकता नहीं। तब वे अकेले थे और आज उनके साथ सम्पूर्ण जनसमुदाय है। चन्द्रगुप्त उनकी ये बातें सुनकर अपराध बोध से ग्रस्त हो राजकीय संरक्षण की आवश्यकता थी परन्तु आज जबकि वे अपनी रचनाओं के माध्यम से जनमानस में गहराई तक पैठ चुके हैं, तब उन्हें इस सम्मान समारोह की कोई आवश्यकता नहीं। तब वे अकेले थे और आज उनके साथ सम्पूर्ण जनसमुदाय है। चन्द्रगुप्त उनकी ये बातें सुनकर अपराध बोध से ग्रस्त हो जाते हैं। कालिदास लंबी सांस छोड़कर कहते हैं कि एक और वसंतोत्सव बीत गया और एक और वर्ष चला गया। प्रियंगुमंजरी उन्हें सहारा देती है। चन्द्रगुप्त का प्रस्थान हो जाता है और कालिदास प्रियंगुमंजरी से 'कुमार संभव' की पांडुलिपि मंगवाते हैं। यहीं पर नाटक समाप्त हो जाता है। इस नाटक का यह समापन वास्तव में रचनाकार के जीवन में नवीन आशाओं के उदय का संकेतक है। जो 'कुमार संभव' षडयंत्रों और कुचक्रों के जाल में फंसकर मंजूषा में कैद होकर रह गया था, वह पुनः मंजूषा से बाहर आकर अपनी अस्मिता की तलाश कर रहा है। आज कालिदास सभी राजनीतिक कुचक्रों, षडयंत्रों से ऊपर उठ चुके हैं। अब वे अपनी रचनाओं को समाज तक संप्रेषित करने के लिए स्वतंत्र हैं। एक रचनाकार के लिये यही सबसे बड़ा सम्मान है कि उसकी अभिव्यक्ति प्रतिबंधित न की जाए। निस्संदेह एक रचनाकार की अपनी रचनाओं को संप्रेषित न कर पाने की पीड़ा यहां साकार हो उठी है।

'आटवा सर्ग' इस दृष्टि से विशिष्ट बन गया है कि इसके माध्यम से नाटककार ने राजनीतिक दबावों में पिसती एक रचनाकार की प्रतिभा की त्रासदी को अधिक सशक्त रूप में उठाकर चरमोत्कर्ष तक पहुंचाया है। प्रस्तुत कृति में प्रसंगवश अनेक अन्य समसामयिक मुद्दे भी उठाये गये हैं यथा श्लीलता-अश्लीलता का प्रश्न, रचनाकार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न तथा किसी भी जटिल विवादास्पद स्थिति से बाहर निकलने के लिए निर्णायक समिति गठित करने का सरकारी प्रावधान और उससे भी महत्वपूर्ण यह है कि समिति के सदस्यों की समझ का दायरा उस मुद्दे से कमजोर हो, जिसके लिए समिति गठित की गई है। इस नाटक की एक खासियत यह भी है कि यहाँ रचनाकार राजनीतिक चक्रव्यूह में पिस कर दम नहीं तोड़ता वरन् उसे तोड़कर बाहर निकलता है और अपने अस्तित्व को सशक्त रूप में स्थापित करने में सफल होता है। नाटककार ने यहाँ यह अभिव्यंजित करने का प्रयास किया है कि कोई भी रचनाकार अपनी रचना की उत्कृष्टता से जनसामान्य में जड़ जमा कर सता के सम्मुख विराट हो जाता है।<sup>10</sup>

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 9-10
2. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, पृ. 124
3. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 21
4. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 32
5. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 35
6. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 39
7. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 42
8. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 44-45
9. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 45-49
10. सुरेन्द्र वर्मा : आठवां सर्ग, निदेशकीय वक्तव्य, पृ. 9

## मीरा की भक्ति भावना

डॉ. संजय कुमार यादव

राजकीय श्री धूलेश्वर आचार्य संस्कृत महाविद्यालय,  
मनोहरपुर (जयपुर)

शोध श्री



shodhshree@gmail.com

राजस्थान की धरती भक्ति, वीर एवं शृंगार की त्रिवेणी रही है। एक ओर यहां का कण-कण मातृभूमि पर उत्सर्ग होने वाले वीरों के रक्त से रंजित है, तो दूसरी ओर यह भूमि संतों एवं भक्तों की अमृतमयी वाणी से सिंचित है। इन भक्तों ने समय-समय पर अवतीर्ण होकर मरण धर्मा मानव-जीवन को चरम एवं परम अमृत का संदेश दिया है। ये संत एवं भक्त उत्कृष्ट कोटि के कवि भी रहे हैं। यही कारण है कि इनकी वाणी काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त होकर लोकमानस को रस प्लावित करती हुई जन-जन का कंठ हार बन गयी।

प्रेम की पीर और विरह वेदना की अमर गायिका मीरा का कृष्ण-भक्ति के साधकों एवं कवियों में महत्वपूर्ण स्थान है। उनके प्रेम की कसक आज भी उनके विरह गीतों के माध्यम से सहृदयों एवं संगीतकारों की धड़कनें बढ़ा देती हैं। वास्तव में प्रेम की पीर और विरह की अनवरत धड़कन का नाम ही मीरा है।

“म्हारे तो गिरिधर गोपाल दूसरो ना कोई”

भक्ति की अनन्यता और सच्ची समर्पण भावना की दृष्टि से कवयित्री मीरा का नाम सबसे महत्वपूर्ण है। मीरा ने अपने पदों में अपने हृदय की समस्त वेदना को उड़ेल दिया है, इसलिए इनके पद आज भी लोकप्रिय हैं। मीरा का जन्म राजस्थान के प्रसिद्ध मेड़ता क्षेत्र के राठौड़ रत्नसिंह की पुत्री थी तथा इनका विवाह उदयपुर के महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ था। किंतु विवाह के थोड़े दिन (लगभग 10 वर्ष बाद) बाद ही मीरा विधवा हो गई और वे संतों की संगति में श्री कृष्ण की भक्ति में लीन हो गयी। सांसारिक को मीरा ने बलीभांति समझ लिया था।

यथा-

“ऐसे बर को ब्या बरूँ जो जनमै और मरजाया

बर बरिये एक सांवरो (री) जासो चुड़लो अमर हो जाया”

मीरा की सारी भक्ति-साधना प्रभु के प्रति माधुर्य भाव की थी। अतः उन्होंने ऐसे बर को बरा, जो कालातीत है- जन्म मरण से नित्यमुक्त है। अतएव मीरा अपने आपको कहीं भी विधवा प्रकट नहीं करती, कहीं भी वे एक अनाश्रित विधवा नारी की भांति विवश होकर भगवत-शरण में जाती नहीं दिखती। उनकी गिरिधर के प्रति जो प्रीति है, वह ‘बालपणे’ की है और वह उनको ‘जनम-मरण रा साथी’ तथा अपने को ‘जनम-जनम की दासी’ बताती हुई अमर सुहागिनी मानती है।

जीवन के इन आघातों को सहन कर मीरा श्री कृष्ण-भक्ति में अधिक दृढ़ता से लीन हो गयी। उनका अधिकांश समय वैष्णव साधुओं की संगति में व्यतीत होने लगा। कभी-कभी तो मीरां भाव-विह्वल होकर कृष्ण-मूर्ति के सामने नाचने लग जाती थी।

‘पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे

में तो अपने नारायण की आप ही हो गई दासी रे”

राणा सांगा की मृत्यु के बाद मीरां का देवर विक्रमादित्य मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। मीरां का आचरण राजकुल की मर्यादा के प्रतिकूल समझकर परिवारजन उनकी उपासना में बाधा डालने लगे। मीरा को अनेक कष्ट दिये जाने लगे और मारने के भी अनेक प्रयास किये। मीरां को विष के प्याले एवं सर्प दंश से मारने का भी प्रयास किया गया।-

“सांप पिटासा राणा भेज्या, मीरा हाथा दियो जाया

जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाया”

‘नरसी जी का मायरा’ ‘गीत गोविन्द की टीका’ राम गोविन्द तथा ‘रामसोरठ’ आदि मीरां की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। मीरां बाई की पदावली का अनेक विद्वानों द्वारा संपादन किया गया है।

मीरां अपने पारमार्थिक नित्यपति श्री कृष्ण को पाकर सर्वथा निश्चित हो गयी हैं, लोकापवाद की परवाह

उन्हें नहीं है वे तो कहती हैं-

‘राणा जी म्हानै या बढनामी लागै मीठी  
और- “मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई  
छाँड़ि दई कुल की कामि का करिहै कोई”’

मीरां के पदों में हमें स्थान-स्थान पर उनके सुहाग के दिव्य प्रसाधनों का उल्लेख अनायास ही मिल जाता है, जिनसे वे अपनी मानसिक सजावट करके अपने प्राणपति श्री कृष्ण प्रेम को कोटि गुणा करने के लिए गाया और नाचा करती थी। वे एक विधवा भक्तितन की भांति बैठी-बैठी वलय-शून्य करों से कोरी राम-नाम की माला नहीं जपती। उन्हें अलौकिक सुहाग मिला है- वे तो ‘पग घुंघरू बांध नाचती हैं’, ‘पंचरंग-चोला’ पहन कर झिरमिट खेलने जाती हैं और झिरमिट में जब उनका ‘सांवरा’ स्वामी मिल जाता है तो वे उनसे ‘तनगाती’ छोड़कर मिलती हैं।

वे सुहाग का महत्वपूर्ण चिन्ह चुड़ला भी धारण करती हैं।

“चूड़ो म्हारै तिलक अरू माला सील बरत सिणगारो।

और सिंगार म्हारे दाय न आवै यो गुर-ग्यान हमारो।”

मीरां ने अपने अलौकिक स्वामी को रिझाने के लिए दिव्य चून्ड़, कुसुम्भी सारी और केसरिया चीर चुने हैं-

“ओढ़ी चून्ड़ प्रेम की गिरिधर जी भरतारा”

“सांवरिया के दरसन पाऊं पहर कसुंभी साड़ी

‘केसरि चीर दरियाई को लँगो ऊपर अंगिया भारी।

‘आवत देखी किसन मुरारी छिप गई राधा प्यारी।”

धान्य है मीरां की एकांत अनन्य भक्ति को-

“सांवलिया सूँ प्रिति औरां सूँ आखाड़ी”

अब इसी जीवन में अनवरत साधना के परिणामस्वरूप सुखमणा सेज पर सोने के लिए मीरां को शुभ घड़ी की भी प्राप्ति हो गयी। अपने प्रियतम प्रभु की उस दिव्य सेज का शृंगार बनने के लिए मीरां की पूरी तैयारी भी देखिए-

‘पचरंगी झालर सुभ सौँहै फूलन फूल कली।

बाजूबंद कडूला सौँहै सिद्धर मांग भारी।

सुमिरण धाल हाथ में लीन्हों सोभा अथाक खरी।

सेज सुखमणा मीरां सौँहै सुभ है आज धारी।”

‘दरद दिवानी’ मीरां को वृन्दावन में भी शांति नहीं मिली वृन्दावन से वे कृष्ण की कर्म भूति द्वारिका तीर्थ-धाम आ गयी। यहां वे रणछोड़ के मन्दिर में अपने आराध्य में लीन हो गई- ‘मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, मिलि बिछुरन मत कीजै।”

यह संवत 1610 की बात है। मीरा ने अपने एक पद में बालों का सफेद होना लिखा है, जिससे पता चलता है कि वे मृत्यु के समय वार्द्धक्य को प्राप्त हो गई थी। मीरां कहती हैं-

“दरद दीवानी भाई बावरी, डोली सब ही देशा

मीरां दासी भाई है पंडर, पलट्या काला केषा”

मीरां द्वारा रणछोड़ मन्दिर कर मूर्ति में सामने की घटना की पुष्टि नागरीदास, प्रियादास, गरीबदास आदि के उल्लेख से होती है।

मीरां का काव्य मन की तीव्र वेदना और भावों की करुणात्मक मार्मिकता का काव्य है, यही कारण है कि आज भी मीरां के पद दुखी जन के मन के भावों को अभिव्यक्ति देने में समर्थ हैं। उनके पदों में कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य भक्ति है। सम्पूर्ण समर्पण भाव है और करुणामयी विवधता भरी विरह वेदना है। परिवार जनों के व्यवहार की कटुता भी मीरां के पदों में यत्र-तत्र प्रकट हुई है। किन्तु मीरां के काव्य का मूल भाव, वेदना युक्त भक्ति है। उनके पदों में भावों की सहजता है, माधुर्य है, और लालित्य है। लोक जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति उनके पदों में मिलती है। उनकी भाषा राजस्थानी तथा गुजराती का मिश्रित रूप है पर उनके पदों की भाषा उनकी मार्मिक भाषा राजस्थानी वेदना को वहन करने में समर्थ है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं मीरां के बचपन में शुरू होने वाली भक्ति की भावना समय के

साथ-जीवन क कष्टों के कारण अमर-बेल की तरह फैलती चली गई। मीरां सच्चे अर्थों में प्रेम की दीवानी थी। इस प्रेम में उसने अनेक कष्टों को सहन किया। मीरां ने अपना सर्वस्व श्री कृष्ण को मानकर उन्हीं में लीन हो गई। इन दुखों ने भक्ति की नींव में दृढ़ता प्रदान की। त्रिपाठी कैलाश 'आजाद' ने मीरां के बारे में उचित ही कहा है-

“भक्ति के प्रदेश में, आज भी एक संदेश है मीरा  
प्रीति के परिवेश में आज भी एक उपदेश है मीरा  
चित्तौड़ की महिमा गरिमा कहूँ या मेहुता की पूर्णिमा  
विरक्ति के क्षेत्र में आज भी एक निर्देश है मीरा।।”

इसी संदर्भ में डॉ. हरीश का कथन भी दृष्टव्य है-

“आज भी चित्तौड़ के, उस दुर्ग पर साकार,  
प्रणयनी की प्रीति-ममता, खुले हैं द्वारा  
कीर्ति का वह स्तम्भ, गौरव की लिए मुस्कान,  
प्रणयनी की साधना से, हुआ अमर राजस्थान।।”

और अन्त में मैं अपनी 'भारतभूति कविता की दो पंक्तियां उद्धृत करना चाहूँगा-

“पश्चिम तो अपना सादा है  
मीरां ही यहां की राधा है।।  
हल्दी घाटी ही माथा है।  
यह रणवीरों की गाथा है।।”

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. मीरा पदावली- शंभुसिंह मनोहर, पृ. 8
2. मीरा वाई की पदावली- आ. परशुराम चतुर्वेदी, पृ. 111
3. वही, पृ. 112
4. वही, पृ. 104
5. वही, पृ. 107
6. वही, पृ. 204
7. मीरा पदावली. शंभुसिंह मनोहर, पृ. 16
8. वही, पृ. 16
9. मीरायन (त्रैमासिक पत्रिका) सित. से नवम्बर-2007, पृ 3
10. महियसी मीरा- डॉ. हरीश, पृ. 92
11. तिरंगा (भारत भूमि कविता) - डॉ. संजय कुमार यादव, पृ.

## स्मृति साहित्य में अहिंसाधर्म

हरकेश बैरवा

व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय,  
बून्दी

'स्मृति' शब्द की व्युत्पत्ति 'स्मृ' धातु में स्त्रीलिंग प्रत्यय 'क्तिन्' के योग से मानी है, जिसका अर्थ स्मरण करना, याद करना, चिन्तन करना, मन में ध्यान करना, मानव धर्मशास्त्र, धर्मसंहिता, धर्मसूत्र, धर्म के नियम, स्मृतिग्रन्थ, स्मृति का मूल पाठ आदि लिया है। शब्दकल्पद्रुम में लिखा है कि जिस ग्रन्थ के माध्यम से वेदों के सारांश का स्मरण किया जाता है वह ग्रन्थ विशेष 'स्मृति' कहलाता है। डॉ. राजबली पाण्डेय ने लिखा है कि अनुभूत विषय का ज्ञान अथवा अनुभव संस्कारजन्य ज्ञान 'स्मृति' कहलाता है। उन्होंने 'उज्ज्वलनीलमणि' में उद्धृत मत का भी उल्लेख किया है- पुर्वानुभूत और अपने प्रिय विषय का स्मरण करना अथवा चिन्तन करना 'स्मृति' है- अनुभूतप्रियादीनामार्थानां चिन्तनं स्मृतिः। प्रसिद्ध दार्शनिक अन्नं बट्ट ने तर्कसंग्रह में लिखा है कि संस्कार मात्र से उत्पन्न ज्ञान को 'स्मृति' कहते हैं- संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः। तर्कभाषाकार केशवमिश्र ने कहा है कि जिस ज्ञान का विषय पहले ही ज्ञात रहता है उसे स्मृति कहते हैं- ज्ञातविषयं ज्ञानं स्मृतिः। शास्त्रीय दृष्टि से 'स्मृति' शब्द मन्वादि महर्षियों द्वारा प्रणीत शास्त्र विशेष के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है, जो धर्मशास्त्रों या धर्मसंहिताओं के लिए प्रयुक्त हुआ है। मनु ने स्पष्ट शब्दों में वेद को श्रुति और धर्मशास्त्र को स्मृति नाम से अभिहित किया है- श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः। बौधायनधर्मसूत्र के व्याख्याकार गोविन्दस्वामी ने अनुभूतार्थ विषयक विज्ञान को स्मृति माना है- अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः। तात्पर्य है कि प्राचीन ऋषियों द्वारा परम्पराओं को आत्म-साक्षात्कार के द्वारा स्मरण किया उसे ही 'स्मृति' कहा जाता है।

वामन शिवराम आपटे ने किसी प्राणी को न मारना या मनसा, वाचा, कर्मणा से किसी को कष्ट न पहुँचाना अहिंसा माना है अर्थात् सजीव प्राणियों का मन, वचन और कर्म से अहित न करना ही अहिंसा है। कायिक, वाचिक, मानसिक को जैन सम्प्रदाय में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दृष्टि एवं सम्यक् चरित्र के नाम से जाना जाता है, इन तीनों को कर्म की दृष्टि से विभक्त किया है। दक्ष ने नौ उत्तम और नौ निन्दनीय कायिक कर्म बताये हैं- संध्यावादन, स्नान, जप, होम, स्वाध्याय, देवपूजा, वैवदेव यज्ञ, अतिथिपूजा और शक्ति के अनुसार पितरों, देवों, मनुष्यों, दीनों, अनाथों, तपस्वियों, माता-पिता तथा गुरुजनों को स्थाली से निकले हुए भोजन का यथायोग्य विभाग करना उत्तम कर्म बताये हैं, जिन्हें नित्य करना चाहिए। झूठ बोलना, पराई स्त्री से सम्बन्ध रखना, अभक्ष्य का भक्षण करना, अगम्या स्त्री से संभोग करना, न पीने योग्य पेय को पीना, चोरी करना, हिंसा करना, वेद-विरुद्ध कर्मों का आचरण करना और मित्र-धर्म का बहिष्कार करना- ये निन्दनीय कर्म हैं, जिन्हें सदैव त्यागना चाहिए। सत्य एवं प्रियसम्भाषण, सद्ग्रन्थों का अध्ययन, भजन-कीर्तन, भगवद्भक्ति आदि वाचिक कर्म हैं तथा सौम्य, करुणा, धैर्य, सहानुभूति आदि मानसिक कर्म हैं। यह स्पष्ट है कि आत्मा का सम्बन्ध अहिंसा से है तथा अहिंसा का सम्बन्ध आत्मा से होता है और एकमात्र आत्मा ही अमर एवं शाश्वत है, जिसके अभाव में शरीर तो दुर्गन्धमय है ही, साथ ही सारे आचरण दुर्गन्धित हो जाते हैं। मनुष्यों को शरीर से पूर्व आत्मा को शुद्ध रखना श्रेयस्कर है, क्योंकि आत्मा के मलिन होने पर ही मनुष्य हिंसा करने को प्रवृत्त होता है।

अधिकांश धर्मशास्त्रकारों ने 'अहिंसा' को सभी वर्णों के लिए धर्म की श्रेणी में माना है। मनु का कथन है कि जो व्यक्ति शास्त्र विरुद्ध आचरण करता है, झूठ बोलना ही जिसका धन है और जो निरपराध की हिंसा करता है, वह इस लोक में सुखी होकर भी उन्नति प्राप्त नहीं करता है- अधार्मिको नरो यो हि यस्य चात्यन्तं धनम्। हिंसारतश्च यो नित्यं नेहासौ सुखमेधते।।

महाभारत के आदिपर्व में लिखा है कि अहिंसा सभी प्राणियों के लिए परमधर्म है, अतः ब्राह्मण को किसी प्राणी को कष्ट नहीं देना चाहिए- अहिंसा परमो धर्मः सर्वप्राणभूतांवर। तस्मात्प्राणभूतः सर्वात्र हिंस्याद् ब्राह्मणः क्वचित्।। आश्वमेधिकपर्व में स्पष्ट है कि अहिंसा ही परमधर्म है और हिंसा अधर्म है, अतः अधर्म ही सभी के लिए अहितकारक होता है- अहिंसा परमो धर्मो हिंसा चाधर्मलक्षणा।।

मनु का कथन है कि जिस प्रकार दीमक धीरे-धीरे वल्मीक (वामी या मिट्टी की दीवार) का संचय करते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को संसार के किसी जीव को कष्ट न देते हुए परलोक सुधारने हेतु अपनी शक्ति के अनुसार



शनैः शनैः धर्म का संचय करना चाहिए- धर्म शनैः संचिनुयाद्दल्मीकमिव पुत्तिकाः। परलोकसहाययाथ सर्वभूतान्यपीडयन् ॥<sup>12</sup>

कूर्मपुराण का मत है कि सदैव विचार, शब्द एवं कर्म से किसी को क्लेश न देना अहिंसा है। अहिंसा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, अहिंसा (के व्यवहार) से बढ़कर कोई सुख नहीं है, ऐसा वचन परम ऋषियों का है। वैदिक विधि से जो हिंसा हो जाय वह अहिंसा ही घोषित है- कर्मणा मनसा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा। अवलेशजननं प्रोक्ता अहिंसा परमर्षिभिः ॥ अहिंसायाः परमो धर्मो नात्यहिंसापरं सुखम्। विधिना या भवेद्धिंसा त्वहिंसैव प्रकीर्तिता ॥<sup>13</sup>

मनु एवं विष्णु का मत है कि ब्रह्मा ने यज्ञ के लिए पशुओं को स्वयं बनाया है और यज्ञ सम्पूर्ण संसार की उन्नति के लिये है, इस कारण यज्ञ में पशु के वध का दोष नहीं है। मधुपर्क, यज्ञ (ज्योतिषोम आदि), पितृकार्य (श्राद्ध) तथा देवकार्य में ही पशु का वध करना चाहिए अन्य किसी कार्य के लिए नहीं, ऐसा मनु का वचन है- यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा। यज्ञश्च भूतैः सर्वस्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ मधुपर्कं च यज्ञे च पितृदेवतकर्मणि। अत्रैव पशवो हिंस्या नान्यत्रैत्यब्रवीन्मनुः ॥<sup>14</sup> दोनों ने वेद विहित हिंसा का अनुमोदन अवश्य किया है और उसे उचित भी ठहराया है, लेकिन उनके अपने व्यक्तिगत विचार कुछ भिन्न प्रतीत होते हैं- बिना प्राणियों की हिंसा किए, मांस उत्पन्न नहीं हो सकता और जीवों की हिंसा करना स्वर्ग निमित्तिक नहीं होता, अतएव मांस को खाना छोड़ दे तो सबसे उत्तम है। मांस की उत्पत्ति और जीवों के वध तथा बन्धनों के दुःख को अच्छी तरह समझकर सब प्रकार के मांस भक्षण का त्याग कर देना चाहिए- नाकृत्या प्राणिनां हिंसां मांसमुत्पद्यते क्वचित्। न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत् ॥ समुत्पत्तिं च मांसस्य वधबन्धौ च देहिनाम्। प्रसमीक्ष्य निवर्तत सर्वमांसस्य भक्षणात् ॥<sup>15</sup>

पद्मपुराण में आया है कि प्राणीहिंसा करने वाले वेदाध्ययन, दान, तप एवं यज्ञों से स्वर्ग की प्राप्ति नहीं करते, अहिंसा सर्वोत्तम धर्म, तप एवं दान है, ऐसा मुनियों का कहना है, जो लोग अहिंसक (दयालु) हैं वे मच्छरों, रेंगने वाले प्राणियों, जूँओं आदि तथा मानवों को अपने समान ही मानते हैं- न वेदैर्न च दानैश्च न तपोभिर्न चाध्वरैः। कथंचित् स्वर्गतिं यान्ति पुरुषाः प्राणिहिंसकाः ॥ अहिंसा परमो धर्मो ह्यहिंसैव परं तपः। अहिंसा परम दानमित्याहुर्मुनयः सदा ॥ मशकान् सरीसृपान् दंशान्यूकाद्यान्मानवांस्तथा। आत्मौपम्येन पश्यन्ति मानवा ये दयालवः ॥<sup>16</sup>

मनु एवं विष्णु का मत है कि प्राणी हनन करने वाला एक व्यक्ति ही नहीं होता बल्कि मारने की अनुमति देने वाला, हनन करने वाला, उसके अंग प्रत्यंग पृथक् करने वाला, खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला तथा उसका भक्षण करने वाला- ये सभी हिंसक (घातक) होते हैं- अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी। संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकः ॥<sup>17</sup> इससे आगे दोनों ने एक प्रकार से वेद की हिंसा को भी उचित नहीं समझा- जो मनुष्य सौ वर्ष तक बराबर अश्वमेध यज्ञ करता है और जो बिल्कुल ही मांस नहीं खाता, इन दोनों का पुण्यफल समान माना गया है। पवित्रफल, मूल एवं मुनियों के नीवार आदि हविष्यान्न खाने से वह फल नहीं मिलता है, जो केवल मांस त्यागने से मिलता है। मांस शब्द का निर्वचन बड़ा तार्किक बताया है- माँ (मुझको) स (वह) अर्थात् जिसका माँस मैं इस लोक में खाता हूँ, परलोक में वह मेरा माँस खायेगा, विद्वान लोग 'माँस' शब्द का यही माँसत्व (माँस शब्द की निरुक्ति) बतलाते हैं- वर्षे वर्षेऽश्वमेधेन यो यजेत शतं समाः। मांसानि च न खादेद्यस्तयोः पुण्यफलं समम् ॥ फलमूलाशनैर्मेधैर्मुन्यन्नानां च भोजनैः। न तत्फलमवाप्नोति यन्मांसपरिवर्जनात् ॥ मांसभक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहादम्यहम्। एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥<sup>18</sup> दोनों के वचनों से कहा जा सकता है, ये परम अहिंसावादी थे- जो व्यक्ति अहिंसक जीवों का अपने सुख की इच्छा से हिंसा करता है, वह जीता हुआ तथा मरकर भी कहीं पर सुख प्राप्त नहीं कर सकता। जो जीवों की हिंसा तथा बन्धन नहीं करता वह सबका हिताभिलाषी अत्यन्त सुख प्राप्त करता है- योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया। स जीवश्च मृतश्चैव न क्वचित्सुखमेधत ॥ यो बन्धनवधक्लेशाम्प्राणिनां न विकीर्षति। स सर्वस्य हितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥<sup>19</sup>

याज्ञवल्क्य का मानना है कि जो दुराचारी विधीहीन रूप से (बिना देव, पितर के उदे य से अपने लिये) जीवों की हिंसा करता है वह जितने रोयें उस पशु के शरीर में हैं उतने दिन तक नरक में निवास करता है- वसेत्स नरके घोरे दिनानि पशुरोमभिः। संमितानि दुराचारी यो हन्त्यविधिना पशून् ॥<sup>20</sup> आपस्तम्ब ने सदैव अहिंसा से ही मोक्ष की प्राप्ति मानी है- मोक्षो भवेन्नित्यमहिंसकरस्य ॥<sup>21</sup> डॉ. काणे ने लिखा है कि अहिंसा सम्बन्धी धार्मिक अनुशासन करुणा की भावना का उद्ग्रेक नहीं है, प्रत्युत यह व्यक्ति को अदृष्टित रखने की भावना से उत्पन्न हुआ है ॥<sup>22</sup>

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि मानव को समाज में रहने वाले प्राणियों की रक्षा एवं उनके प्रति दयाभाव रखना चाहिए। अतः अहिंसा का पालन करना मानव मात्र का पुनीत धर्म है, फलतः महाभारत में इसे सर्वोत्तम धर्म स्वीकार किया है- अहिंसा परमो धर्मः ॥

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृष्ठ 1309
2. शब्दकल्पद्रुम, भाग पंचम, पृष्ठ 464
3. हिन्दू धर्म कोष, पृष्ठ 692
4. मनुस्मृति 2.10
5. बोधायनधर्मसूत्र 1.1.1.3 पर गोविन्दस्वामी की व्याख्या
6. संस्कृत हिन्दी कोष, पृष्ठ 134
7. सन्ध्या स्नानं जपो होमः स्वाध्यायो देवतार्चनम्। वैश्वदेवं तथातिथ्यमुद्धृतं चापि शक्तिः ॥ पितृदेवमनुश्याणां दीनानायतपस्विनाम्। मातापितृगुरुणां च संविभागो यथार्हतः ॥ एतानि नव कर्माणि विकर्माणि तथा पुनः। अनृतं पारदार्यं च तथाभक्ष्यस्य भक्षणम्। अगम्यागमनापेयपानः स्तेयं च हिंसनम्। अश्रौतकर्माचरणं मित्रधर्मवहिष्कृतम्। नयेतानि विकर्माणि तानि सर्वाणि वर्जयेत् ॥ (दक्षस्मृति 3.8-12)
8. मनुस्मृति 10.63, याज्ञवल्क्यस्मृति 1.122, वृद्धगौतमस्मृति 12.2, विष्णुस्मृति 2.8
9. मनुस्मृति 4.170
10. महाभारत, आदिपर्व 2.13-14
11. महाभारत, आश्वमेधिकपर्व 43.21
12. मनुस्मृति 4.238
13. कूर्मपुराण 2.14-15
14. मनुस्मृति 5.39,41, विष्णुस्मृति 51.60,63
15. मनुस्मृति 5.48-49, विष्णुस्मृति 51.70-71
16. पद्मपुराण 1.31.26-28
17. मनुस्मृति 5.51, विष्णुस्मृति 51.73
18. मनुस्मृति 5.53-55, विष्णुस्मृति 51.75-77
19. मनुस्मृति 5.45-46, विष्णुस्मृति 51.67-68
20. याज्ञवल्क्यस्मृति 1.180
21. आपस्तम्बस्मृति 10.7
22. धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग 5, पृष्ठ 408

राजेश कुमार बैरवा  
व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय,  
बून्दी

शोध श्री



shodhshree@gmail.com

वैदिक विश्व-संस्कृति के प्रवर्तक, सृष्टि के समग्रज्ञान के अजस्र स्रोत, पर्यावरणीय समस्या-समाधान की कुंजी, लौकिकालौकिक विराट् ज्ञान-रश्मियों के प्रकाशक तथा सह अस्तित्व के पर्याय हैं। वेदों में प्रज्ञा-ऋतम्भरा को जागृत करने की विलक्षण-क्षमता है। वैदिक ऋचाओं को अनादि नित्या व वाक् के रूप में परिभाषित किया गया है। वैदिक चिन्तन सन्त्रस्त मानवता के लिए रक्षाकवच है-

सत्यं बृहद्दत्तमुग्रं ढीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

अर्थात् मानव स्वयं अपने अन्दर सत्य, ऋतु, तेज, संकल्प, शक्ति, तप, ज्ञान और त्याग जैसे सद्गुण व शुभ कर्मों का संपादन करें, जिससे विज्ञान पर्यावरण में शुद्धता विद्यमान रहे। वैदिक वाङ्मय में सत्य, अहिंसा, तप, सहिष्णुता, राष्ट्रप्रेम, विश्व-बंधुत्व की भावना, दान आदि मानवीय मूल्यों को आत्मसात् करने की प्रेरणा दी गई है। वैदिक वाङ्मय में वर्णित मुख्य मानवीय मूल्य निम्न हैं-

1. **कर्मशीलता:**- वैदिक वाङ्मय में मानव को कर्मशील बनने की प्रेरणा दी गई है। जो मनुष्य निरन्तर गतिशील रहता है, देवता भी उसकी सहायता करते हैं। मनुष्य का भाग्य उसके अपने हाथ में है। जैसा और जितना कर्म मनुष्य करता है, वैसा ही उसका भाग्य होता है। जो मनुष्य अकर्मण्य होकर सोया रहता है, उसका भाग्य भी मारों सोता है परन्तु कार्यशील व्यक्ति का भाग्य उसका साथ देता है। इसी बात को इन्द्र द्वारा रोहित से कहे गए कथन में स्पष्ट किया गया है-

आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वरिष्ठति तिष्ठतः।

शेते पद्यमानस्य चराति चरतो भगश्चरैवेति इति।

अर्थात् बैठे हुए का भाग्य बैठ जाता है, उठकर खड़े होने वाले का ऊँचा खड़ा रहता है, सोने वाले का सोया रहता है व चलने वाले का भाग्य चलता है। अतः चलते ही रहना चाहिए।

ईशावास्योपनिषद् (1-2) में कहा गया है - कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत् समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

सौ वर्ष जीने की अभिलाषा रखो परन्तु कर्मों का सुचारु सम्पादन करो, इस तरह जीवन में कोई कठिनाई उपस्थित न होगी तथा कर्मों का कोई कुप्रभाव भी नहीं पड़ेगा।

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।

अर्थात् क्षणभर भी कोई बिना काम किये रह ही नहीं सकता। यह प्राकृतिक कर्म बन्धन का नियम सबसे साथ है।

ऋग्वेद में सुकृत अथवा शुभ कर्मों की अत्यधिक प्रशंसा की गई है। देवताओं के सुकृत अथवा शुभ कर्मों की अत्यधिक प्रशंसा की गई है। देवताओं के लिए 'सुकृतः' एवं 'सक्रतुः' विशेषणों का प्रयोग किया गया है। इन्द्र अपने महान् कर्मों के कारण ही संसार में प्रसिद्ध हुआ 'यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतोऽभूत्।' शुभ कर्म वाले ही मधुरस अर्थात्- समस्त आनन्द का भोग करते हैं- 'सुकृतमाः मधुनो भक्षमाशत्।'।

ऋग्वेद में दुष्कर्मों की निन्दा की गई है। दुष्कृत व्यक्ति ऋतु के मार्ग को पार नहीं कर सकते। 'ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः।' 'देवता भी दुराचारियों का विनाश करते हैं। ऋग्वेद में मानव को शुभ कर्म करने व दुष्कर्म से दूर रहने के लिए कहा गया है।

2. **दान** :- वैदिक वाङ्मय में मानव को दान देने के लिए प्रेरित किया गया है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 117वें सूक्त में दान की महिमा का बखान किया गया है-

न स सखा यो न बढाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।

अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति पुणन्तमन्यमरणं विदिच्छेत्।

ऋग्वेद में पुनः कहा गया है कि दान न देकर धन को केवल अपने ही स्वार्थ के लिए जो व्यय करता है, वह निस्संदेह पाप को ही खाता है -

'केवलाघो भवति केवलादी'।

ईशावास्योपनिषद् में भी कहा गया है - तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्य खिद्व धनम्। ईश के केन्द्र से जो त्यक्त हो चुका है उसी से हमारा भोग होना संभव है, किसी अन्य के उपभोग्य धन का ग्रहण मत करो। अर्थ या काम की आसक्ति से परद्रव्य पर अधिकार नहीं जमाना चाहिए। अतः मानव को त्यागपूर्वक उपभोग करना चाहिए।

3. **सत्य, तप एवं दम**:- वैदिक वाङ्मय में सत्य को ब्रह्म का आयतन 'निवास स्थान' ही बताया गया है- 'सत्यमायतनम्'। मुण्डकोपनिषद् में भी कहा गया है- 'सत्यमेव जायते नानृतम्' अर्थात् सत्य ही विजयी होता है अनृत नहीं। केनोपनिषद् में तप, दम और कर्म को ब्रह्म की प्रतिष्ठा बतलाया गया है - तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा' मुण्डकोपनिषद् में भी सत्य, तप, सम्यक् ज्ञान और ब्रह्मचर्य को ब्रह्म प्राप्ति का साधन बतलाया गया है - सत्येन लभ्यस्तपासा ह्येष आत्पा सम्यग्ज्ञाने ब्रह्मचर्येण नित्यम्।

इस मंत्र में ब्रह्मचर्य का अभिप्राय ब्रह्मचर्याश्रम से नहीं है अपितु आत्मसंयम, पवित्रता, अपरिग्रह तथा आत्मसंतुष्टि से है। बलहीन के द्वारा भी यह प्राप्त नहीं होता 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः।' जिसका मन और इन्द्रियों वश में नहीं है वह अनुचित मार्ग पर जाकर अवनति के गर्त में गिरता है। कठोपनिषद् में कहा गया है कि वह मनुष्य परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता जो बुरे आचरण से निवृत्ति नहीं हुआ है, जो अशान्त है, जिसका मन और इन्द्रियाँ संयत नहीं हैं और जो अशान्त मन वाला है -

नाविरतो दुश्चरितान्तनाशान्तो नासमाहितः।

नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैवाप्नुयात्।

4. **पूजनीय जन के प्रति आदर भाव**:- वैदिक वाङ्मय में माना गया है कि जब भी माता, पिता, गुरु, अतिथि एवं अन्य आदरणीय व्यक्ति खिन्न हैं, तब तक मनुष्य को कभी शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। अतिथि सत्कार पर भी उपनिषदों में पर्याप्त बल दिया गया है। तैत्तिरीयोपनिषद् में माता, पिता, आचार्य व अतिथि को देवतुल्य समझने का उपदेश दिया गया है - 'मातृ देवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव।'।

कठोपनिषद् में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जिसके घर में ब्राह्मण अतिथि बिना भोजन किए निवास करता है, उस मन्द बुद्धि मनुष्य की आशा और प्रतीक्षा उनकी पूर्ति से होने वाले सब प्रकार के सुख, मधुर वाणी, इष्ट और आपूर्त एवं पुत्र और पशु सबको वह नष्ट कर देता है - आशा प्रतीक्षे संगतं सून्तां च इष्टापूर्तं पुत्रपशूश्च सर्वान् एतद् वृद्धक्ते पुरुषस्यालयमेधसो यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे।

5. **अहिंसा** :- वैदिक वाङ्मय में हिंसा का निषेध किया गया है। यज्ञ में पशुओं की बलि देने का निषेध वेद में किया गया है। यज्ञ में बलि या हिंसा न हो, इसलिए यज्ञ को 'अध्वर' भी कहा जाता है। 'ध्वर' नाम हिंसा का है जिसका वेद में कोई स्थान नहीं है। वहां हिंसा न करने का स्पष्ट संकेत भी दिया है -

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरिसा

स इद् द्वेषु गच्छति।

वैदिक वाङ्मय में यह स्पष्ट रूप से आदेश दिया गया है कि हिंसादि दोषों से दूर रहने व उन्हें सम्पादित न करने के कारण ही वे यज्ञ देवों को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में भी कहा गया है कि यज्ञ व यज्ञपति की हिंसा मत करो -

मा यज्ञं हिंसिष्य मा यज्ञपतिम्।

6. **राष्ट्र के प्रति प्रेम**:- वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रीय भावना जागृत करने का प्रयत्न किया गया है। अथर्ववेद में भूमि सूक्त (12.1) राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हैं। यहाँ भूमि को माता एवं स्वयं को उसका पुत्र बतलाया गया है 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' अथर्ववेद में राष्ट्र की एकता पर बहुत बल दिया गया है। विविध भाषाभाषी व धर्मावलम्बी होने पर भी लोगों में परस्पर वैमनस्य व द्वेष नहीं था। जैसा कि प्रस्तुत मंत्र से स्पष्ट है -

जनं विभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यशौकसम्।

सहसं धारा द्रविणस्य मे दुहां, ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।

अथर्ववेद के सामनस्य सूक्त में पारस्परिक स्नेह, सौहार्द व सौमनस्य की कामना की गई है। परिवार राष्ट्र की मूल इकाई है। यदि परिवार में शांति व प्रेम है तो समाज में भी शांति व्याप्त होगी और यदि समाज में किसी प्रकार का कलह, द्वेष, वैमनस्य व ईर्ष्या नहीं है तो राष्ट्र में भी सर्वत्र शांति का साम्राज्य स्थापित होगा। परिणामतः राष्ट्र प्रगति व समृद्धि की तरफ अग्रसर होगा। प्रस्तुत मंत्रों में यही कामना की गई है कि परिवार के सदस्य एक दूसरे के प्रति द्वेष व ईर्ष्याभाव न रखें। वे एक-दूसरे का आदर व सम्मान करें तथा मधुर एवं प्रियवाणी बोलें।

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।  
अन्यो अन्यमभि हृतं वत्सं जातमिवाध्न्याम्।  
अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु शान्तिवाम्।  
मा धाता धातरं द्विद्वान्मा स्वासारमुत स्वसा।  
स्मयश्चः सन्नता भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥<sup>19</sup>

7. विश्व-बंधुत्व एवं विश्व-मैत्री की भावना:- वैदिक वाङ्मय में विश्व के सब मनुष्यों की क्रियाओं, गतियों, विचारों, मन और बुद्धि में पूर्ण सामंजस्य की भावना उत्पन्न करने की कामना की गई है। वेदों में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' की कामना की गई है। वेदों में मानव के कल्याण की कामना करते हुए कहा गया है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।  
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखाभाण् भवेत्।

अर्थात् सब सुखी हों, सब नीरोग हों, सब कल्याण को देखें, कोई भी दुःख का भागी न बने। ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 191 सूक्त में कहा गया है कि जब भी जनों के मन, विचार, संकल्प और कार्य एक जैसे होंगे तो परस्पर किसी भी प्रकार का द्वेष, कलह व वैमनस्य नहीं होगा। फलस्वरूप राष्ट्र भी उन्नति करेगा।

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।  
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥<sup>20</sup>  
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।  
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहाति॥<sup>21</sup>

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लौकिक पदार्थों के साक्षात्कार के लिए जैसे नेत्रों की आवश्यकता है वैसे ही अलौकिक तत्वों के साक्षात्कार के लिए वेदों की उपयोगिता स्वतः सिद्ध है। धर्म को जानने की इच्छा वालों के लिए वेद ही परम प्रमाण है। वेद ही विद्वानों, देवों और सामान्य मनुष्यों की आँख है। वैदिक वाङ्मय में दान, सदाचरण, अहिंसा, परहित भावना, सत्य, दम, तप, कर्म आदि मानवीय मूल्यों का विवेचन किया गया है।

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1. अथर्ववेद 12.1.1
2. ऐतरेय ब्राह्मण 33.3.3
3. ऋग्वेद 3.36.1
4. ऋग्वेद 9.73.6
5. ऋग्वेद 10.117.4
6. ऋग्वेद 10.117.6
7. कैनोपनिषद् 4.8
8. मुण्डकोपनिषद् 3.1.5
9. कठोपनिषद् 1.3.24
10. कठोपनिषद् 1.1.8
11. ऋग्वेद 1.1.4
12. अथर्ववेद 12.1.45
13. अथर्ववेद 3.30.1-3
14. ऋग्वेद 10.191.2
15. ऋग्वेद 10.191.4

## पंचायती राज व्यवस्था एवं महिला सशक्तिकरण

मुकेश कुमार मालवीय,  
सहायक प्राध्यापक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,  
वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

“जब महिलाएँ आगे बढ़ती हैं, तो परिवार आगे बढ़ता है, समाज आगे बढ़ता है और राष्ट्र भी अग्रसर होता है।” - पंडित जवाहरलाल नेहरू

भारतीय समाज में सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्र में स्थानीय जातीय संस्तरण का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। परम्परागत रूप से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में उच्च जातियों का प्रभुत्व रहा है और इसमें भी पुरुषों का प्रभुत्व रहा है। महिलाओं की स्थिति चाहें वह उच्च जाति वर्ग से हो या निम्न जाति या वर्ग से, हासियें पर रही है। समाज में उसे दोयम दर्जे का स्थान प्राप्त रहा है। सामाजिक क्षेत्र में सामाजिक सरोकार के विषयों एवं परिवार में भी उसे जिम्मेदारी पूर्ण भागीदारी से वंचित रखा गया। परम्परागत श्रम विभाजन, अशिक्षा, पर्दा प्रथा, लिंगभेद एवं पुरुष प्रधान समाज के मूल्यों के द्वारा उसका विकास और आत्मविश्वास बाधित रहा। सार्वजनिक क्षेत्र में भागीदारी को परिवार की प्रतिष्ठा के नाम पर बाधित किया जाता रहा राजनीतिक प्रक्रिया में केवल मत देने के अधिकार तक उसे सीमित रखा गया। निर्णय निर्माण प्रक्रिया में उसकी भूमिका नगण्य है। इन सब कारणों से देश की आधी आबादी-महिला-को क्षमता निर्माण, निर्णय निर्माण, योजना निर्माण जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं से और स्वयं एवं समाज के विकास की प्रक्रिया में जिम्मेदारी पूर्ण भागीदारी के अवसर नहीं मिल पाये। किसी सम्य समाज की स्थिति वहाँ की महिलाओं से स्पष्ट होती है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति, उनको प्राप्त अधिकार, शिक्षा राजनीतिक सहभागिता एवं सामाजिक निर्णय लेने की क्षमता इत्यादि ऐसे विषय हैं जिनसे उनके स्तर को समझा जा सकता है। गांधीजी महिलाओं की सत्ता के पक्षधर भी रहे और उनकी इस सोच को महिलाएँ स्थापित भी कर रही हैं। 73 वें एवं 74 वें संविधान संशोधन के पश्चात महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया गया है। पंचायती राज संस्थानों एवं नगर निकायों के माध्यम से महिलाओं ने अपनी प्रतिभा, समर्पण व कार्यकुशलता से सभी को परिचित कराया है। पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को नेतृत्व जैसे कार्य को संचालन करना बहुत कठिन है इस परिस्थितियों में भी महिलाओं ने मिसाल कायम की है। दृष्टव्य है कि उन्होंने कहीं-कहीं तो नए प्रतिमान भी स्थापित किये हैं। निर्णय लेने की प्रक्रिया और सत्ता संचालन में भागीदारी मिलने से स्वयं महिलाओं का ही नहीं बल्कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में भी मदद मिली है।

पंचायती राज व्यवस्था का महत्व - पंचायती राज के विकास हेतु शासन ने कई अधिकार उसे दिए हैं वही पंचायतों ने भी अपने इन कर्तव्यों को बहुत ही अच्छे ढंग से क्रियान्वित किया है। अतः इनका महत्व दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। पंचायतों के चुनाव व संबंधों में जो वाद-विवाद होते हैं उससे ग्रामीण जीवन में नवीन राजनीतिक जागरूकता व उत्साह पैदा हुआ है। पिछड़े वर्ग के सदस्यों, महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। पंचायती-राज व्यवस्था का महत्व निम्न बातों से स्पष्ट है-

- पंचायत लोगों में सामुदायिक चिंतन, सहयोग व सहकारिता को बढ़ावा देती है।
- इनसे स्थानीय संसाधनों का व्यवस्थित उपयोग सम्भव होता है।
- इसको की प्रभाविता से जन समस्याओं का निबटारा आसान होता है।
- ये संस्कृति व सभ्यता की पोषक होती है।
- ये सामाजिक सुधारों को गति देने में सहायक है।
- पंचायती राज लोकतंत्र में जागरूकता व जिम्मेदार नागरिक बनाने में पाठशाला के समान कार्य करती है।
- पंचायतें स्थानीय सूचना केन्द्र का कार्य भी करती हैं।
- इनसे लोगों को विभिन्न विकास व प्रशासनिक गतिविधियों में सहभागिता का अवसर मिलता है। गाँव के उत्थान से ही देश का उत्थान संभव है। ग्राम पंचायत गाँव का उत्थान करते हुए देश के उत्थान में



सहायक है। ग्राम पंचायतें समुदाय को आत्मनिर्भर बनाती हैं। इससे सरकार का भार कम होता है। ग्रामीण जनता को संयुक्त कर उनमें राजनैतिक चेतना, विकसित करती है। पंचायती राज ग्रामीण क्षेत्रों के समुचित प्रशासन में भी सहायक है।

**पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका:**— महिलाओं के सशक्तिकरण से अभिप्राय है उनके हर पहलू को सशक्त बनाना और राजनीति में प्रवेश कराया जाना इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारत सरकार ने सत्ता के विकेन्द्रीकरण के अन्तर्गत पंचायत स्तर पर महिलाओं की सक्रियता हमें उनकी क्षमता के बारे में आश्वस्त कराती हैं तथा यह विश्वास दिलाती है कि यदि लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू किया गया तो सभी सरकारें उन मामलों पर विचार करने के लिए बाध्य हो जायेगी जिनका महिलाओं से सीधा सम्बन्ध है। ग्रामीण स्तर पर सदियों से महिलाओं की स्थिति केवल ग्रहणी तक सीमित रखी गई लेकिन सत्त विकेन्द्रीकरण के इस ऐतिहासिक प्रयास में महिलाओं को घर की चार दिवारी से निकालकर सत्ता का मुख्य केन्द्र बिन्दु बना दिया गया है। महिला सशक्तिकरण इस दिशा में आरंभिक प्रयास है किन्तु स्थानीय ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत, जिला प्रचायत में 33 प्रतिशत महिलाओं के आरक्षण के फलस्वरूप राज्य में पहली बार महिलाओं की बड़े पैमाने पर राजनीति में भर्ती हुई है। इस कार्य को पूर्ण करने हेतु कई समितियों का गठन किया गया जिसमें “राष्ट्रीय महिला उत्थान समिति 2001” विचारणीय बिंदु में महत्वपूर्ण है। देश में महिलाओं के लिए ऐसा वातावरण तैयार करना जिससे वे ऐसा महसूस कर सकें कि वे स्वयं आर्थिक, सामाजिक नीति बनाने में शामिल हैं, महिलाओं का मानव अधिकारों का उपयोग करने हेतु सक्षम बनाना, महिलाओं के प्रति समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए महिलाओं और बालिकाओं के प्रति किसी प्रकार के अपराध के रूप में व्याप्त असमानताओं को दूर करना प्रमुख उद्देश्य है। भारत में त्रिस्तरीय पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी के लिए की गई व्यवस्था एक क्रांतिकारी कदम है इससे एक नया नेतृत्व महिला शक्ति के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। इस तरह महात्मा गांधी का वाक्य है कि “पहले गाँवों का उत्थान करो” उनके निवासियों को ऊपर उठाओ तभी देश ऊपर उठेगा। यह बात पंचायतों में महिला सरपंचों की भागीदारी से ही आ सकती है क्योंकि पंचायतों के माध्यम से ही एक गृहणी जो अपने परिवार को सुचारु रूप से चला रही है। वह पहले गाँव व बाद में देश को भी बहुत अच्छे ढंग से विकास की राह पर ले जाएगी। इस तरह पंचायत विकास की पहली सिढ़ी है व इस कमजोर पहली सिढ़ी को महिलाओं की भागदारी को सशक्त रूप दिया जा सकता है जो हमारे समानता के सिद्धांत को पूर्ण करेगा।

**महिला सशक्तिकरण में प्रशासन की भूमिका:**— संविधान की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए संसद द्वारा महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण एवं महिला सशक्तिकरण के लिए समय-समय पर कानूनों का प्रणयन किया गया। समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976, प्रसूति प्रसूति अधिनियम 1961, बाल विवाह निषेध अधिनियम 1976, वैश्यावृत्ति निवारण अधिनियम 1986, सतीप्रथा निरोधक अधिनियम 1987, प्रसव पूर्व निदान तकनीकी अधिनियम 1994, अनैतिक व्यापार निरोधक अधिनियम 1956 (1986 में संशोधन), स्त्री अशिष्ट निरूपण निषेध अधिनियम 1986, घरेलू हिंसा रोकथाम अधिनियम 2005, हिंदू उत्तराधिकार संशोधन अधिनियम 2005 आदि अधिनियम महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए बनाए गए। इसके अलावा राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन कर महिला अधिकारों के हनन के मामलों की जांच का दायित्व उसे सौंपा गया।

पिछले एक दशक में केन्द्र सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में कई कार्यक्रमों, योजनाओं को चलाया गया। स्वधार, स्वावलम्बन, स्वशक्ति, स्वयंसिद्धा, महिला समाख्या कार्यक्रम, जननी सुरक्षा योजना, आशा योजना, स्वर्णिम योजना, बालिका प्रोत्साहन राशियोजना, छात्रवृत्ति योजना, अल्पावधि प्रवास गृह, बालिका समृद्धि योजना, परिवार परामर्श केंद्र, किशोरी शक्ति योजना, वंदेमातरम् योजना आदि योजनाएँ शुरू की गयीं। वर्ष 2008-09 के बजट में शुरु की गई उज्ज्वल योजना यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

**महिला सशक्तिकरण की समस्या:**— लैंगिक भेदभाव भारत में नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ी बाधा है। उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में कन्या भ्रूण हत्या के मामले अधिकाधिक पाये जाते हैं। केरल मात्र एक ऐसा राज्य है जहाँ लैंगिक असंतुलन के मामले कम हैं। भरत में आज भी शिक्षा, पोषण, विकितीय सुविधा तथा सामान्य देखभाल के मामले में लड़के तथा लड़कियों में भेद किया जाता है। अस्वस्थता की स्थिति में आज भी परम्परागत भारतीय परिवारों में लड़को के मामले में जहां

तत्परता दिखाई देती है। वहीं लड़कियों के मामले में उदासीनता दिखाई देती है। इस घातक प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिए धार्मिक, सामाजिक, नैतिक तथा कानूनी स्तर पर प्रयास किया जाना चाहिए। लड़कों के प्रति अतिरिक्त सजगता तथा पुत्रियों के प्रति उदासीन रवैय, पुत्र के नाम पर वंश चलाने की संकीर्ण विचारधारा, दहेज की कुप्रथा आदि ऐसे कारक हैं जो महिला सशक्तिकरण की गति को रोक रहे हैं। केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारों को बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण इत्यादि पर विशेष ध्यान देते हुए सक्रिय पहल करनी चाहिए।

उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला गया कि 73 वें संविधान संशोधन 1992 ने पंचायतीराज को नया जीवन दिया व इनके कार्य निर्धारण के लिये 29 कार्य क्षेत्र के साथ 11 वीं अनुसूची संविधान में जोड़ी गई व यह सुनिश्चित किया गया कि पंचायतों के चुनाव नियमित रूप से हर पाँच वर्ष में कराये जावें। उनके लिए निश्चित वित्तीय सहायता की व्यवस्था के लिए राज्य निर्वाण आयोग से कराये जाये, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति को उनकी जनसंख्या के आधार पर आरक्षण मिले, महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें संवैधानिक दर्जा देने की सबसे पहले वकालत एल.एम. सिंघवी ने की थी।

भारत में त्रिस्तरीय पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी के लिए की गई व्यवस्था एक क्रांतिकारी कदम है इससे एक नया नेतृत्व महिला शक्ति के रूप में उभरकर सामने आ रहा है। 73 वें व 74 वें संविधान संशोधन के परिणामस्वरूप देश की ग्रामीण एवं नगरीय दोनों प्रकार की पंचायतें महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण की व्यवस्था हो जाने से लगभग 14 लाख महिलाओं को जन प्रतिनिधियों के रूप में विभिन्न प्रकार के उत्तरदायित्व एवं अधिकार प्राप्त हुए हैं अर्थात् अब इन्हें लोकतन्त्र के आधारभूत स्तर पर राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने के सुअवसर मिले हैं। सन् 2001 में देश में महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास में बराबर की भागीदारी के अवसर प्राप्त करने के उद्देश्य को लेकर “राष्ट्रीय महिला उत्थान समिति 2001” की घोषणा की गयी थी जिसमें वे अपने संकुचित दायरे से बाहर आ सकें। पंचायती राज में महिला सरपंचों की भूमिका होने से एक दिलचस्प बात सामने आयी कि ज्यादातर महिलाएँ अनपढ़ व कम पढ़ी-लिखी होने के बाद भी उन्होंने गलत निर्णयों का जबरदस्त विरोध किया। गाँव के विकास में ज्यादा जिम्मेदारी से रुचि ली व गांधीजी के सपनों को साकार बनाने में अपनी भूमिका निभाई।

**नीतिगत सुझाव**—: प्रस्तुत अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में ग्राम पंचायतों में महिलाओं के आरक्षण से वांछित सफलता के लिए निम्नांकित सुझाव दिये जा सकते हैं—

- अध्ययन की गई ग्राम पंचायतों की अधिकांश आरक्षित महिलायें या तो अशिक्षित हैं या फिर अर्द्धशिक्षित हैं। ग्राम विकास की समस्याओं और कार्यक्रमों को समझने के लिए शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। कम से कम हाईस्कूल शिक्षा प्राप्त महिलाएँ प्रतिनिधि व प्रधान के पद के लिए योग्य समझी जायें तो महिलायें ग्रामीण विकास में अपना दायित्व निर्वाह करने में सफल और सक्षम हो सकती हैं।
- शिक्षा के साथ-साथ प्रतिनिधियों को नियमित वे गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है।
- पंचायती राज की सफलता स्थानीय और जनसहभागिता पर आधारित है। जन-जन को उनसे जोड़ा जायें और उनके सफल संचालन में सभी का सहयोग, सहभागिता लेने का प्रयास किया जायें।
- पंचायत के प्रतिनिधियों में न तो अभी ग्रामीण विकास की कोई तस्वीर स्पष्ट है और न ही इसके लिए कोई दृढ़ संकल्प। जब तक प्रतिनिधियों में सेवा और समर्पण का भाव दृढ़ नहीं होगा, निष्ठा और कर्मठता नहीं होगी तब तक ग्राम पंचायतें ग्रामीण गणतंत्र और ग्रामीण स्वशासन की इकाई नहीं बन सकती।
- आरक्षित महिला अपनी नई भूमिका का निर्वाह सफलतापूर्वक कर सकें, इसके लिए उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार व आर्थिक स्वावलम्बन की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है।
- महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि की जाए तभी राजनीतिक नेतृत्व व सहभागिता आरक्षण से प्राप्त हो सकती है। अभी नेतृत्व लचर और कमजोर है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची:**—

1. सिन्हा अर्चना- “पंचायतों के जरिये ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका” कुरुक्षेत्र, प्रकाशन विभाग-नई दिल्ली-दिसम्बर 2002, पृष्ठ-7
2. सिंह ध्रुव मुषण- “महिलाएँ एवं राजनीतिक सहभागिता”-सामाजिक विज्ञान विकास संस्थान-बिजनौर-उ.प्र.-जनवरी-जून

- 2010-11 (1) पृष्ठ-(111-113)
3. शर्मा राकेश "पंचायती संस्थाओं में महिलाओं की बढ़ती भूमिका" कुरुक्षेत्र, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली-2007 पृष्ठ-19
  4. मोहनती विद्युत "युमन एण्ड पॉलिटिकल इम्प्लायमेंट" नई दिल्ली-2002
  5. एस.एम.त्र सईद "भारतीय राजनीतिक व्यवस्था" भारत बुक सेंटर-लखनऊ, 2006
  6. परीक्षा मंथन "महिला सशक्तिकरण" निबन्ध (भाग-5) ईयर बुक (ब) मंथन प्रकाशन - इलाहाबाद (उ.प्र.)2010-11 पृष्ठ(129-131)
  7. नन्दकिशोर यादव "पंचायतीराज व्यवस्था का अध्ययन"
  8. पंत यंदाकिनी "पंचायतीराज में महिला सहभागिता और स्वयं सहायता समूह" - पंचायतवार्ता (अक्टूबर-दिसम्बर)- 2004

## आधुनिक भारत में युवाओं की समस्याएँ एवं विवेकानन्द

शोध श्री



shodhshree@gmail.com

बवसा राम

शोधार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,  
उदयपुर

राष्ट्र विशेष की गौरवान्वित प्रगति का आधार उसकी युवा पीढ़ी होती है, वही उसे आज और भविष्य को निर्धारित करके समन्वयात्मक पुल का कार्य करती है।

लेकिन आज का युवा वर्ग शासन प्रणाली की शिथिलता, शिक्षा के व्यावसायीकरण के कारण असन्तुष्ट ही नहीं, वरन् पूर्वाग्रह से ग्रसित भी है। आध्यात्म और वेदान्त की तो बात ही क्या करें, उसे तो हमारी प्राचीन गौरवशाली संस्कृति भी, मूल्यविहीन, पाश्चात्य संस्कृति के समक्ष तुच्छ लगती है। उन्हें धोती-कुर्ता एवं जीवन मूल्यों की बातें सुनकर व देखकर सम्मान का नहीं वरन् पिछड़ेपन का अहसास सताता है।

यदि हमें भारत का उत्थान करना है, तो युवाओं की कुंठित मानसिकता को बदलना होगा। जब युवा वर्ग सच्चे अर्थों में स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त तथा आध्यात्मिकता के मर्म को समझेगा, तभी राष्ट्र स्वयमेव उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा।

'आखिर कैसा था, ऊर्जा के अजस्र स्रोत विवेकानन्द का जीवन? त्याग, तपस्या, प्रेम, करुणा, विशाल हृदयता, दृढ़ता ऐसे स्तम्भ हैं, जिन पर आचार्य नरेन्द्र का ओजस्वी व्यक्तित्व सम्बल पाता है। महत्वपूर्ण दृष्टान्त स्वामी विवेकानन्द के जीवन से संबंधित उनके कर्मयोगी जीवन एवं महानता को स्पष्ट करता है।

एक बार 'सिरासिप' नामक युद्धपोत जो कलकत्ता-बन्दरगाह पर आया, जो सभी के आकर्षण व उत्सुकता का केन्द्र बना हुआ था, उसे देखने वालों की भीड़ में 11 वर्षीय अल्प आयु बालक भी था, जिसे अन्दर कार्यालय में प्रवेश नहीं करने दिया गया। लेकिन संकल्प की दृढ़ता के कारण बालक पीछे बालकनी की लौहे की सीढ़ियों से कार्यालय में प्रवेश कर अनुमति पत्र पर अधिकारी के हस्ताक्षर करवाए और अन्दर जाने की अनुमति न देने वाले द्वारपाल को अनुमति पत्र दिखाकर चिढ़ाया, उसने आश्चर्य से पूछा- 'तू ऊपर कैसे गया।' बालक ने हँसकर कहा- 'हमें जादू आता है।' तत्पश्चात मित्रों सहित सानंद युद्धपोत देखा। यह बालक विवेकानन्द ही था। यह घटना उनकी दृढ़ संकल्प शक्ति, नेतृत्व, उत्सुकता आदि गुणों का परिचायक है।

वर्तमान में युवाओं के समक्ष अनेक चुनौतियाँ सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, मूल्यों के अवमूल्यन के कारण आई हैं। युवाओं में असन्तोष व कुण्ठा का कारण बेरोजगारी, आरक्षण नीति व प्रतिभा पलायन है। आज देश में शिक्षित-बेरोजगारों में सबसे ज्यादा तादाद पहली बार रोजगार के क्षेत्रों में उतरने वाले युवाओं की हैं। 15 से 59 वर्ष की आयुवर्ग की इस फौज की 76 फीसदी ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 24 फीसदी शहरी इलाकों में है। लेकिन अहम सवाल यह है कि अगर शिक्षा जगत का यही हाल रहा तब तो 2020 तक देश में शिक्षित और अर्द्ध शिक्षित बेरोजगारों की एक कुण्ठा और आक्रोश से उबलती युवा फौज खड़ी हो जाएगी।

विश्व में तेजी से फैले बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद ने जहाँ एक ओर वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि की है, वहीं जीवन मूल्यों का दम भी किया है। आदमी ने आदमी को वस्तु और विशेष रूप से स्त्री को केवल 'अबला' समझ कर उसे 'यूज एण्ड थ्रो' की वस्तु मात्र बनाने की वृत्ति अपना ली है।

युवा वर्ग में 'लिव इन रिलेशनशिप' तथा 'समर्लैंगिक संबंधों' से पारिवारिक उच्च परम्पराएँ, शान्ति तथा सम्मान तेजी से कम हो रहा है। अलगाव, क्रूरता, दहेज प्रताड़ना, संवेदनहीनता, असमानता, मनोवैज्ञानिक थकान, कैरियर में आजादी, बांझपन, अहम के टकराव आदि कारणों से पश्चिम देशों की तरह यहाँ भी तलाक की संख्या तेजी से बढ़ने लगी है। (वर्ष 2012 में अकेले दिल्ली में ही 27 से 35 वर्ष की उम्र के बीच के दंपतियों के तलाक दर में 28 फीसदी बढ़ोतरी हुई है) युवाओं का एक बड़ा वर्ग विशेष रूप से तथाकथित बड़े लोगों की बिगड़ल सन्तान लूट, डकैती, धोखा, बलात्कार एवं कत्ल जैसे संगीन अपराधों में लिप्त होकर समाज में अनाचार फैलाती दिखाई देती है।

विडम्बना तो देखो जहाँ एक ओर दरिद्रनारायण व मेहनतकश वर्ग की कमर व पेट का अन्तर समाप्ति पर है, वहीं युवा पीढ़ी की पहली पसंद पिज्जा, बर्गर, जैसी अनेक चीजें बनी हुई है।

शहरों व महानगरों की बात ही क्या करें आज गाँव-ढाणियाँ भी इस दौड़ में पीछे नहीं हैं। वर्तमान सदी में बाल अपराधों की रिकॉर्ड तोड़ स्थिति, हाईटेक खिलोना-संस्कृति, मॉडर्न बनने की अंधी दौड़, बढ़ते इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों की भूमिका ने थकान, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन, क्रूरता, हत्याएँ, बलात्कार, जैसी समस्याओं को बुलावा दिया है। यही नहीं पश्चिमी संस्कृति का हमला 'खाओ-पीओ-मौज-उड़ाओ' की प्रवृत्ति, महत्वाकांक्षाओं की अभिवृद्धि, लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उदासीनता ने युवा पीढ़ी को खोखला बनाने में अहम भूमिका निभाई है।<sup>1</sup> सोने की चिड़िया कहलाने वाले आर्यवृत में आज साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, नक्सलवाद, राजनीति का अपराधीकरण (आज 15 वीं लोकसभा में लगभग 162 सांसद ऐसे हैं, जिन पर हत्या, ढगी, अपहरण आदि के मुकदमे चल रहे हैं।) जैसी समस्या ही नहीं बल्कि हमारे जनप्रतिनिधियों के गैर जिम्मेदाराना तमाशों व सड़क छाप भाषा में गर्जना को पूरी दुनिया ने देखा है। इनके कारनामों को देख-सुनकर हमारी युवा पीढ़ी पथभ्रष्ट होती जा रही है।<sup>2</sup>

आज स्वामी विवेकानन्द के बताये आदर्शों पर चलते हुए धरती की खुशबू का अहसास तथा आध्यात्म का लगाव, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, वीरता व परिश्रम जैसे राम-बाण औषधियों से युवा-वर्ग को सरोबार होने की आवश्यकता है। ताकी भारत-भूमि महक उठे।<sup>3</sup>

जहाँ एक ओर स्वामी विवेकानन्द 'लोहे के पुट्टे और फोलादी शरीर' को देश का सुरक्षा प्रहरी मानते थे, वहीं आज की युवा पीढ़ी ड्रग्स व नशीले प्रदार्थों के सेवन के साथ ही देश में युवा-वर्ग की 32 फीसदी आबादी बीते पांच वर्षों में तनाव की चपेट में आ चुकी है। और तो और किशोरों के अपराधों के आंकड़ों में भी बढ़ोतरी खतरे का संकेत दे रही है, तो दूसरी ओर युवा वर्ग धार्मिक उन्मादता के चक्कर में फंसता जा रहा है।

आज वैश्विक मंच पर एक ओर जहाँ हमारी सबसे ज्यादा युवा शक्ति है, उसकी तरफ पूरी दुनिया की निगाहें टिकी हैं, लेकिन युवा पीढ़ी इस शक्ति को गलत कार्यों में लगाकर अपनी इहलीला समाप्त कर देना चाहती है। अब समय आ गया है कि युवा-वर्ग को जागना होगा, स्वार्थसिद्धि त्याग कर, मेहनत, ईमानदारी, संयम, लगन, चरित्रवान, दृढ़ इच्छा शक्ति, बलिष्ठ शरीर,<sup>4</sup> व सकारात्मक सोच द्वारा अपने स्वर्णिम भविष्य को रचना होगा। आज राष्ट्र बोझिल आँखों से अपने सपूतों (युवा वर्ग) के जागने की बाट जोह रहा है। अन्ततः स्वामी विवेकानन्द के महान् सन्देश को अपने जेहन में उतार कर सार्थकता का अमली जामा पहनाना ही है यथा-

भले ही तुम्हारा सूर्य बादलों से ढक जाय,  
आकाश उदास दिखाई दे,  
फिर भी धीरे धीरे कुछ हे वीर हृदय,  
तुम्हारी विजय अवश्यभावी है।

शीत के पहले ही ग्रीष्म आ गया,  
लहर का दबाव ही उसे उभारता है  
धूप-छाँह का खेल चलने दो  
और अटल रहो, वीर बनो।

जीवन में कर्तव्य कठोर हूँ,  
सुखों के पंख लग गये हूँ,  
मजिल दूर, धुँधली सी झिलमिलाती है,  
फिर भी अन्धकार को चीरते हुए बढ़ जाओ,  
अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ।

कोई कृति खो नहीं सकती और  
न कोई संघर्ष व्यर्थ जाएगा,  
भले ही आशर्राँ क्षीण हो जाएँ  
और शक्तियाँ जवाब दे दें।  
हे वीरात्मन, तुम्हारे उत्तराधिकारी  
अवश्य जनमेंगे  
और कोई सत्कर्म निष्फल न होगा।

यद्यपि भले और ज्ञानवान कम ही मिलेंगे,  
किन्तु जीवन की बागडोर उन्हीं के हाथों में होगी,

यह भीह सही बातें ढेर से समझती है,  
तो भी चिन्ता न करो, मार्ग-प्रदर्शन करते जाओ।

तुम्हारा साथ दे देंगे, जो दूरदर्शी हैं,  
तुम्हारा साथ शक्तियों का स्वामी है,  
आशीषों की वर्षा होगी तुम पर,  
ओ महात्मन,  
तुम्हारा सर्वमंगल हो।<sup>5</sup>

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. विद्योत्तमा, वर्मा, 'भारत गौरव-स्वामी विवेकानन्द', केन्द्र भारती हिन्दी प्रकाशन जोधपुर, पृष्ठ-6
2. डॉ० सुरेश चन्द्र राजोरा, 'समकालीन भारत की सामाजिक समस्याएँ', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ-173
3. हिन्दुस्तान, दिल्ली, 25 फरवरी 2013, पृष्ठ-8
4. केन्द्र भारती, जोधपुर, जनवरी 2010, 'भारतीय अस्मिता और युवा चेतन', पृष्ठ-35-36
5. सुमित सरकार, अनुवाद-सुशीला डोमाल, 'आधुनिक भारत', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-91
6. मानचंद खण्डेला, 'आधुनिकता और भारतीय समाज', पृष्ठ-101, 102, 103, 105, 107, 111, 117
7. राजेन्द्र कसवा, 'भारत बनाम इण्डिया', पृष्ठ-236,  
डॉ० रूपामगलानी, 'भारतीय शासन और राजनीति', पृष्ठ-450  
राजस्थान पत्रिका, अजमेर, 24 जुलाई 2012, पृष्ठ-8
8. स्वामी विवेकानन्द, 'भारत और उसकी समस्याएँ', पृष्ठ-21
9. वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा, 'भारतीय समाज मुद्दे और समस्याएँ', पृष्ठ-291
10. हिन्दुस्तान, दिल्ली, 3 अप्रैल 2013, पृष्ठ-2
11. हिन्दुस्तान, दिल्ली, 5 फरवरी 2013, पृष्ठ-13
12. हिन्दुस्तान, दिल्ली, 7 मार्च 2013, पृष्ठ-11
13. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड-5, पृष्ठ-338
14. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड-10, पृष्ठ-189



भारत विविधता वाला देश है। प्राचीन काल से ही यहाँ विभिन्न मतों, धर्मों, सम्प्रदायों, संस्कृतियों, जातियों के लोग निवास करते हैं। जिन्हें भौगोलिक आधार पर विभाजित किया जा सकता है। इन समुदायों में एक वर्ग ऐसा भी है जो यहाँ के मूल निवासी हैं जो अपने रहन-सहन, खान-पान, जीवन शैली, विशिष्ट विचारधारा, अकेलापन, पिछड़ापन, गरीबी से त्रस्त हैं एवं परम्परावादी रीति-रिवाज को मानने वाला समुदाय है जिसे आदिवासी के नाम से जाना जाता है। यह समुदाय अनेक दुर्गम क्षेत्रों में पिछले सैंकड़ों वर्षों से शेष मानव समाज व सभ्यता से दूर रहकर अपनी पहचान बनाए हुए है। ये आदिवासी मानव समूह घने जंगलों, पर्वतों, पठारी क्षेत्रों, पर्वतीय गुफाओं में निवास करते हैं। आदिवासी भौतिक सुख-सुविधाओं से दूर अपने ही उपागमों में जीवन व्यतीत करते हैं जो अपनी विशिष्ट भाषा, धार्मिक कर्मकाण्ड, आस्था-विश्वास, उत्सव-त्यौहार, वैवाहिक सम्बन्ध इत्यादि परम्पराओं से अन्य समाजों से भिन्न होते हुए भी एकजुटता का परिचय देती है। इन लोगों को वन्य जाति, वनवासी, गिरिजन आदि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है। इन्हें आदिवासी इसलिए कहते हैं कि ये भारत के प्राचीनतम निवासी हैं। वेरियर एल्विन ने इन्हें आदिवासी तथा जी.एस.धर्म ने पिछड़े हिन्दू के नाम से सम्बोधित किया है।

आदिवासी शब्द किसी क्षेत्र के मूल निवासी के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जनजाति शब्द भी परिवारों एवं पारिवारिक वर्गों के समूह की सूचक है। जनजाति और आदिवासी शब्द एक-दूसरे के पर्याय हैं। जनजाति शब्द को अंग्रेजी में ट्राइब कहा जाता है। ये अपेक्षाकृत पृथक् एवं अन्तर्मुखी है। आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से पिछड़े होने के कारण अन्य लोगों द्वारा इनका शोषण होता रहा है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आदिवासी कठिन परिस्थितियों में अपना जीवन-यापन करते हैं। इनके समक्ष सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक, चिकित्सा, संचार, यातायात, रोजगार इत्यादि समस्याएँ रहती हैं।

भारत में जनजातियों की बात करें तो कुल आबादी का लगभग आठ प्रतिशत आदिवासियों की आबादी है। जिनकी कुल अलग-अलग जातियों की संख्या 635 से अधिक है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इनमें 426 जनजातियाँ ही मान्य है यह 200 से अधिक 'डी-नोटीफायड' आदिवासी क्यों है यह भी आदिवासी के लिए बड़ा सवाल है?

आदिवासियों के पिछड़ेपन का मुख्य कारण निर्धनता एवं अशिक्षा है। आदिवासी अपने विशिष्ट सामाजिक परम्परा नियमों से आबद्ध होकर कपोल-कल्पित धारणाओं में जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

**वैश्वीकरण क्या है:-** मनुष्य एक सामाजिक एवं आर्थिक प्राणी है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक प्रकार की क्रियाओं को सम्पादित करता है, व्यक्ति द्वारा की गई क्रियाएँ जब सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करें तो इसे भूमण्डलीकरण कहा जाता है। आज सम्पूर्ण विश्व एक गाँव की भाँति है जहाँ एक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी है तो दूसरा क्षेत्र श्रम शक्ति से सरोबार है, जहाँ एक क्षेत्र के लोग विलक्षण बुद्धि के स्वामी हैं तो दूसरे क्षेत्र में इन्हें पहचानने वाले हैं। अर्थात् आज हम एक छोटे से ग्लोब में समा गये हैं। एक क्षेत्र विशेष की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था जब सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था बन जाती है, वैश्वीकरण कहलाता है।

वर्तमान में विश्व के देश वैश्वीकरण की दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं। आज संचार एवं यातायात साधनों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। आज वैश्वीकरण के कारण विश्व में घटित होने वाली घटनाओं का प्रभाव शीघ्रतासे अन्य देशों पर पड़ रहा है। आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक दूसरे देशों में होने वाले अनुसंधानों का काफी कुछ प्रभाव विश्व के अन्य देशों पर भी पड़ रहा है और वे देश प्रगति भी कर रहे हैं। वैश्वीकरण के दौर में नगरों, कस्बों, महानगरों का ताना-बाना परिवर्तित हुआ है, वाणिज्यिक क्षेत्र में दूरियाँ कम हुई हैं।

वर्तमान में हम जिस परिवेश में जी रहे हैं उसमें अप्रत्याशित परिवर्तन भी दिखाई दे रहे हैं जैसे पहले ग्रामीण इलाकों में गिने चुने टी.वी. हुआ करते थे। टेलीफोन की भी यही स्थिति थी और मोबाइल कनेक्शन हेतु तो 2002 तक लम्बी कतार लगी रहती थी और अच्छी-अच्छी सर्विस वालों के पास भी मोबाइल 2 से 3 प्रतिशत तक ही

थे। जो मोबाइल पहले दस हजार का आता था आज वह दो हजार में मिल रहा है, गाँवों में ठण्डे पेय पदार्थ उपलब्ध नहीं होते थे, आज पेप्सी, कोका-कोला, थम्स-अप मिल रहे हैं, बॉलीवुड की फिल्में भी दूरदराज गाँवों में देखने को मिल रही हैं। कम्प्यूटर, इन्टरनेट, रहन-सहन, खान-पान, विचारधारा सबमें वैश्वीकरण का प्रभाव देखने को मिल रहा है इसलिए जनजातीय समुदाय भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है।

**वैश्वीकरण के प्रभाव:-** भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण के दौर में यदि सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तन आ रहा है तो भला ऐसे में आदिवासी समाज भी बिना परिवर्तन के कैसे रह सकता है। वर्तमान में जो सुविधाएँ उपलब्ध हैं आदिवासी समाज में भी उन सुविधाओं का धीरे-धीरे विस्तार हुआ है। पूर्व में शिक्षा से वंचित रहने का मूल कारण शिक्षा सम्बंधी संसाधनों का अभाव था। परन्तु वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा सम्बन्धी संसाधनों में वृद्धि हुई साथ ही आंगनबाड़ी केन्द्रों की भी दिनांदिन संख्या बढ़ती गई और उनमें काम करने वाली महिला उसी ग्राम पंचायत या मोहल्ले की होने के कारण आदिवासी बच्चों का भी ऐसे केन्द्रों में ठहराव सुनिश्चित हुआ और धीरे-धीरे शिक्षा की ओर ध्यान आकर्षित हुआ। इसके अतिरिक्त विचारों, पहनावे, खान-पान, रहन-सहन, आदि में भी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। पहले जंगलों में जीवन-यापन करते थे। आज दुनिया में नया क्या हो रहा है- इन सब बातों से परिचित होने लगे हैं तो निश्चय ही कहा जा सकता है कि आदिवासी समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव देखने को मिल रहा है।

- अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई है।
- स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता आई है।
- शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ है।
- कृषि के क्षेत्र में भी, उन्नत बीज, खाद व मशीनरी आदि का उपयोग हुआ है।
- समाज के जीवन स्तर में सुधार हुआ है।
- भौतिक संसाधनों का प्रयोग करने लगे हैं।
- पंचायत, खण्ड स्तर पर, विधानसभा व लोकसभा में प्रतिनिधित्व में वृद्धि हो रही है।
- परम्परागत त्यौहार व मेलों में आधुनिकता का प्रभाव।
- विचोलियों एवं साहूकारों द्वारा शोषण का विरोध।
- नेतृत्व क्षमता में वृद्धि।
- अन्य संस्कृतियों का आदिवासी संस्कृति पर प्रभाव।
- खाद्य सामग्री में परिवर्तन।
- रोजगार गारन्टी योजना से पलायन पर रोक।
- अंधविश्वासों को त्यागकर अस्पतालों, सामुदायिक केन्द्रों की ओर अग्रसर होने से जीवन स्तर में वृद्धि व मृत्यु दर में कमी।
- सभ्य समाज के सम्पर्क में आने से आधुनिक शैली व साजो-सामान को प्रयुक्त करने लगे हैं।
- संचार व यातायात के साधनों से जुड़ाव।
- कानून व्यवस्था में परिवर्तन।
- झूम खेती पर खतरा मंडराने लग गया है।
- सरकारी सेवा में अहम भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।
- समाज में इनका सम्मान बढ़ा है तथा इनके प्रति भेदभाव में कमी आई है।
- आदिवासियों में आत्मविश्वास बढ़ने लगा है जिसके कारण वे विकासात्मक गतिविधियों से जुड़ने लगे हैं।

**चुनौतियाँ:-** 1991 से वैश्वीकरण की नीतियों को लागू करते वक्त जनता से लुभावने वादे किये गये थे कि इस नीति के फलस्वरूप नये उद्योग धन्धे खुलेंगे और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे जिससे सामाजिक आर्थिक असमानता को भी कम किया जा सकेगा। लेकिन वैश्वीकरण के दौर में बेरोजगारी की समस्या ने और विकट बना दिया। आज किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में मशीनरी की आवश्यकता ज्यादा व मजदूर, श्रमिक, कर्मचारी की आवश्यकता कम पड़ती है। मेरे विचार में वैश्वीकरण के दौर में खूब चमक-दमक बढ़ी है, मोबाइल क्रांति आई है, कम्प्यूटर

क्रांति आई है, संचार, यातायात, एयरकंडिशनर, विचारधारा इत्यादि में आशा से अधिक वृद्धि हुई। किन्तु गरीब के लिए रोजगार कम होता नजर आ रहा है। आदिवासी भी वैश्वीकरण के दौर में भले ही आर्थिक रूप से कमजोर होंगे परन्तु इस चक्रावधि ने उन्हें न केवल मोबाइल व अन्य वस्तुएँ खरीदने पर विवश किया है बल्कि कुछ युवा मोटर साइकिल के प्रति भी आकर्षित हो रहे हैं। परिवार की स्थिति अच्छी नहीं है फिर भी अन्य प्रकार के ऋण लेकर अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर रहे हैं। आदिवासी विकास की ओर यदि चर्चा करते हैं तो हमारा ध्यान उनकी चुनौतियों की ओर जाता है। आदिवासी समाज के सम्मुख निम्नलिखित समस्याएँ हैं-

- दुर्गम निवास स्थानों के कारण पर्याप्त रूप से आवागमन एवं संचार के साधनों का अभाव।
- सरकार द्वारा गठित वन विभाग के कानून एवं कृषि भूमि का अभाव।
- झूम खेती का धीरे-धीरे कम होना।
- श्रमिकों एवं समाज का विचौलियों एवं साहूकारों द्वारा शोषण।
- आधुनिक चिकित्सा सुविधा सम्बन्धी समस्याएँ।
- धर्मपरिवर्तन एवं दूसरी संस्कृति को अपनाना।
- प्रशासन द्वारा भेदभाव व भ्रष्टाचार।
- नेतृत्व एवं राजनैतिक चेतना का अभाव।
- पृथक् भाषा के कारण अलगाव की समस्या।
- दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों, वनों में निवास।
- ऋण ग्रस्तता, बेरोजगारी व निर्धनता।
- रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, अशिक्षा।
- कारखानों में परिश्रम अधिक व वेतन कम मिलना।
- वैश्वीकरण के प्रभाव से मूल संस्कृति का धीरे-धीरे हास होना।
- आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने के कारण चोरी, डकैती, अपराध को अपनाना।
- आधुनिक नशीले पदार्थों तथा मादक द्रव्यों का सेवन।

**आदिवासी विकास हेतु सुझाव :-**

1. कृषि व्यवसाय के क्षेत्र में - स्थायी कृषि व्यवसाय हेतु उन्नत बीज, रासायनिक खाद, सिंचाई के साधन उपलब्ध करवाना व ऋण दिलाना।
2. शिक्षा के क्षेत्र में - शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु प्रौढ एवं सतत् शिक्षा व्यवस्था प्राथमिक स्तर से ही पृथक् आवासीय विद्यालयों की स्थापना कर उच्च शिक्षा तक का खर्चा सरकार ही वहन करे तथा छात्रवृत्ति, छात्रावास व शिक्षण सुविधाएँ नियमित दी जानी चाहिए।
3. गरीबी के क्षेत्र में - नियमित रोजगार प्राप्त करावें, स्वरोजगार मूलक शिक्षा एवं व्यवसाय दिलाना, शिक्षित बेरोजगारों को साहूकारों व विचौलियों के शोषण से मुक्ति दिलाना।
4. यातायात के क्षेत्र - सड़कों का निर्माण व यातायात के साधनों का विकास करना।
5. स्वास्थ्य के क्षेत्र में - चिकित्सालय खोलना, चिकित्सकों एवं दवाइयों की व्यवस्था व वितरण, प्रशिक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति, सामान्य रोगों की जानकारी देना, स्थानीय कर्मचारियों को प्रशिक्षण देकर नियुक्ति देने से भी विकास की संभावनाएं अधिक हो सकती हैं।
6. आवास के क्षेत्रों में - आदिवासी जहाँ रह रहे हैं वहीं आवास दिलाना, आवास में बिजली, पानी, स्वच्छता और सफाई की व्यवस्था करना।
7. विकास के क्षेत्र में - समाज कल्याण के अन्तर्गत, विकास की जानकारी देना, दवाइयों का वितरण, महिलाओं व बच्चों का सही समय पर टीकाकरण एवं जाँच, सभी का समय पर स्वास्थ्य परीक्षण करना व पौष्टिक आहार देना, वृद्धों को पेंशन दिलाना, कल्याणकारी विकास योजनाओं से लाभान्वित कराना, नेतृत्व क्षमता का विकास एवं किसी भी प्रकार की नीति को थोपा नहीं जाना।
8. भेदभाव एवं शोषण के क्षेत्र में - भेदभाव एवं शोषण दूर करना, आत्मविश्वास पैदा करना, प्रचलित कानूनों का कठोरता से पालन करना।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आदिवासी समाज जो परम्परागत अवधारणाओं आदि पर आधारित समाज था, पर वैश्वीकरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। आज आदिवासी समाज के खान-पान, रहन-सहन, पूजा-पाठ के तौर-तरीकों, चिकित्सा एवं मनोवृत्तियों सम्बन्धी अनेक परिवर्तन आये हैं। आज इस समाज की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था केवल इन तक सीमित नहीं रही है, वरन् आज यह सम्पूर्ण विश्व की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था बन रही है। यदि पूर्व आलेखित चुनौतियों को ध्यान में रखा जाए तो इस समाज पर वैश्वीकरण के और भी सकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते हैं।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची:-**

1. समाजशास्त्र विश्वकोष - हरिकृष्ण रायत - रायत पब्लिकेशन, जयपुर।
2. सा. मानवशास्त्र - एम. एल. गुप्ता, डी. डी. शर्मा - साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
3. सा. मानवशास्त्र - विरेन्द्र कुमार शर्मा - पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
4. सा. परिवर्तन- डॉ. हरिशचन्द्र उल्हेति, यशदेव, कश्यप- राज. हिन्दी ग्रन्थ साहित्य अकादमी, जयपुर।
5. भारत की जनजातीय संस्कृति- विजयशंकर उपाध्याय, शर्मा- म. प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6. कुरुक्षेत्र जनवरी 2006 - ग्रामीण विकास मन्त्रालय, नई दिल्ली।
7. कुरुक्षेत्र दिसम्बर 2006 - ग्रामीण विकास मन्त्रालय, नई दिल्ली।
8. प्रतियोगिता दर्पण - मार्च 2000, आगरा।

## कोख से कब्र तक संघर्ष ही संघर्ष (भारत के विशेष संदर्भ में)

डॉ. प्रेमलता परसोया,  
व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय, कोटा



shodhshree@gmail.com

आज महिला सशक्तीकरण एक ऐसा शब्द है जिस पर अन्तहीन बहस कहीं पर भी की जा सकती है, कितने ही सेमिनार और कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं परन्तु इन बहसों व कार्यशालाओं का सुखद परिणाम अभी तक प्राप्त नहीं किया जा सका है। महिला सशक्तीकरण शब्द का अभिप्राय मेरे अनुसार यही होता है कि महिला को पुरुषों के समान कानूनी, राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में, उनके परिवार, समान एवं राष्ट्र की गतिविधियों में निर्णय लेने का अधिकार होना।

आज महिला साइकिल से लेकर हवाई जहाज, जेट विमान चला रही है, खेत की क्या रियों से लेकर देश की सीमाओं की रक्षा तक में अपनी भूमिका निभा रही है, एक क्लर्क से लेकर सर्वोच्च प्रशासनिक, पुलिस अधिकारी आई.ए.एस व आई.पी.एस. के दायित्वों को बखुबी निभा रही है, इंग्लिश चैनल पार कर चुकी है, हिमालय को फतह कर चुकी है, अन्तरिक्ष में छ' महीने रहने का रिकॉर्ड बना चुकी है.....। इन बातों के आधार पर अक्सर यह कहा जाता रहता है कि महिलाएँ आजकल बहुत सशक्त (Powerful) हो गई हैं। हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर अधिकारों का उपभोग कर रही हैं। परन्तु उपरोक्त वाणिर्णित भूमिकाएँ मात्र उँगलियों पर गिनने लायक हैं। महिलाओं की वास्तविक स्थिति के तस्वीर का पहलू दूसरा ही है।

राजनीतिक क्षेत्र पर दृष्टि डाली जाये तो पन्द्रहवीं लोकसभा में 543 में से मात्र 59 महिलायें चुनकर आई है, जिसमें सर्वाधिक कांग्रेस दल से 23 है। उत्तर प्रदेश इस मामले में प्रथम स्थान पर है जहाँ परी से 13 महिलाएँ चुनकर आई हैं।

➤ राज्यसभा में भी 1952-1999 तक 23 से अधिक महिलायें नहीं रही। राजस्थान विधानसभा में 2008 में तेरहवीं विधानसभा में 200 में 29 महिलायें चुनी गईं। ये अध्ययन बताते हैं कि महिलाओं का राजनीतिक क्षेत्र में कितना बराबर का हक है तथा सशक्त है? महिला आरक्षण विधेयक का क्या हश्र हो रहा है, जग जाहिर हैं। जबकि बहुत पहले राजनीतिक विचारक मिल ने महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व की वकालत की थी, कि जहाँ पर महिलाओं से सम्बन्धित कानून बनाये जाते हैं। वहाँ महिलाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व होना चाहिये।

अर्थिक क्षेत्र में बराबरी पर गौर कर लीजिये अभी भी लगभग 20-30 प्रतिशत महिलाएँ अधिकतम सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। आर्थिक संगठित क्षेत्र (सरकारी व निजी दोनों) में कुल 4.95 मिलियन महिलायें रोजगार में लगी हुई हैं जो देश में कुल संगठित रोजगार का मात्र 18 प्रतिशत है। आँधी दूनिया को मात्र 18 फिसदी हिस्सा। क्या इस असमानता को महिला विकास माना जा सकता है, क्योंकि समानता तो विकास की पहली शर्त है।

➤ यह तो संख्यात्मक नजारा है, इसके अतिरिक्त कार्यस्थल की दशाएँ तथा माहौल भी कम निराशाजनक नहीं है। हालांकि एक ओर कामकाजी महिलाओं को अनुपात बढ़ता जा रहा है। तो दूसरी ओर बढ़ रहा है कार्यस्थल पर उनके साथ होने वाला दुर्व्यवहार। 'अवाग' (अहमदाबाद बुमैस एक्शन ग्रुप) नामक एक गैर-सरकारी स्वैच्छिक संस्था ने सन् 2004 की शुरुआत में एक सर्वेक्षण किया। उस शोध के नतीजों ने भी इस धारणा को ही पुष्ट किया कि आज भी कार्यस्थल पर महिलाओं का शोषण होता है।

➤ ये तो आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में बराबरी का हम हम ढूँढ़ रहे थे, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न है महिलाओं के अस्तित्व की सम्मानपूर्ण रक्षा का? मानवधिकार के दृष्टिकोण से गौर किया जाय तो बड़ी शर्मनाक स्थिति सामने आती है क्यों कि सम्मानपूर्ण व गरिमापूर्ण जीवन के स्थान पर आज महिला को अन्नद्रता, मृत्यु, शोषण आदि ही मिल पा रहे हैं। महिला न तो जन्म से पूर्व सुरक्षित है और न ही जीवन प्राप्त करने के बाद। आज समाज की इस तरह विकृत सोच हो गई है कि लड़की/महिला को देखते ही कुछ अर्द्धपुरुष प्रकृति के भूखे भेड़िये की तरह दौड़ते हैं तथा अपने क्षणिक आनन्द या भूख के लिए

महिला के जीवन को नासूर की तरह करके छोड़ देते हैं या जीवन ही खत्म कर देते हैं। आज लड़की न घर में सुरक्षित है, न ही बाहर, यहाँ तक कि समाज को सुरक्षा के लिए बनाये गये स्थान जैसे थानों में भी सुरक्षित नहीं हैं। उदाहरण लिखते बैठे तो शायद दुनिया भर के कागज कम पड़ जायेंगे। दिल्ली की दामिनी का उदाहरण अभी ताजा ही है परन्तु कितनी ही दामिनियों के प्रकरण प्रकाश में नहीं आते परन्तु अनकही दासता बयां करते हैं। पिछले एक सप्ताह के पत्र-पत्रिकाओं के उदाहरण देखकर ही जी घबराने लगता है। 11.02.2013 के राजस्थान पत्रिका के पेज न. 9 पर यह घटना कि झाड़ियों में मिली नवजात बालिका, हालत नाजुक 01.02.2013 की खबर भाई-बहन की की नृशंस हत्या, इसके पीछे भी पुरुष के रूप में छिपा भूखा भेड़िया ही था जिससे दो मासूम जिन्दगियों का एक क्षण में अन्त कर दिया। महिला की ज्यादाती में किसी काल, परिस्थिति, देश..... का भी महत्व नहीं है। अभी हाल ही में कनाड़ा के एक परिवार के साथ बून्दी आई 10 वर्षीय बालिका के साथ किसी पुरुष ने ज्वैलरी की दुकान पर अभ्रदता की।

➤ 10 फरवरी राजस्थान पत्रिका की खबर चूहे की दवा खिलाकर महिला का पति व ससुराल वालों ने मारा। आज 16.02.2013 को छबड़ा (बांरा) की खबर- पति के सामने महिला से दुष्कर्म। इसी तरह अकलेरा में भी महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया। इससे भी अधिक शर्म सार करने वाली घटना उदयपुर जिला मुख्यालय से 90 किमी. दूर ऋषभदेव थाना परिसर में एक सिपाही ने महिला सिपाही की 14 वर्षीय पुत्री के साथ दुष्कर्म किया। सुबह-सुबह अखबार को हाथ लगाने में अनजाना सा भय छिपा रहता है कि आज कौनसी दिल दहलाने वाली घटना से सामना होगा। इन सब घटनाओं के पीछे बड़ा कारण यह है कि बहुत सी घटनाओं में दोष साबित नहीं हो पाते हैं तथा अपराधी को सजा नहीं मिल पाती है तो वह अपराधी व्यवस्था की इसी खामी का फायदा उठाते हुए और अधिक अपराध करता है। सन् 2009-11 के बीच महिलाओं के साथ छेड़खानी के मामले व कितने लोगों पर दोष साबित हो पाया, देश के कुछ खास शहरों का नजारा निम्न तालिका से समझ में आता है:-

तालिका-1

क्र. सं.	स्थान जहाँ छेड़छाड़ हुई	मामले दर्ज	दोष साबित हो पाया
1	मध्य प्रदेश	19618	6091
2	महाराष्ट्र	10651	595
3	उत्तर प्रदेश	9030	958
4	केरल	9232	718

इसी प्रकार वर्ष 2010 में देश भर में बलात्कार के भी कई मामले दर्ज हुए, परन्तु एक चौथा पर भी दोष साबित नहीं हो पाता है। देश कुछ खास शहरों के आँकड़े, निम्न तालिका से समझे जा सकते हैं:-

2010 में बलात्कार के मामले

तालिका-2

क्र.सं.	स्थान जहाँ छेड़छाड़ हुई	मामले दर्ज	दोष साबित हो पाया
1	मध्य प्रदेश	9539	986
2	पश्चिम बंगाल	10000	381
3	उत्तर प्रदेश	3816	364
4	आसाम	5052	517

उक्त दोनों तालिकाएँ यही दर्शाती हैं कि 10 प्रतिशत अपराधियों पर भी अपराध साबित नहीं हो पाता है और वह खुले आम घूमकर दूसरे अपराधों को अन्जाम देते हैं। दिल्ली शहर आजकल महिलाओं से संबंधित अपराधों में पहले स्थान पर हैं। अभी कुछ दिन पूर्व ही दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा था कि दिल्ली महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं है। आज स्थिति इस प्रकार की है कि बच्ची किसी भी काम से जैसे पढ़ने कुछ खरीददारी करने या घूमने गई है तो किसी पल किसी भी क्षण वह शी दरिन्दों की शिकार बन सकती है। किसी जमाने में महिला अपराधों में उम्र का कम से कम लिहाज अपराधी रखा करते थे परन्तु वर्तमान में छः माह की उम्र से 98 वर्ष की उम्र तक कभी भी महिला के साथ ज्यादती हो सकती है।

उपाय:- महिला शोषण व उत्पीड़न जो कोख से लेकर कब्र तक निरन्तर चलता रहता है, अब समझ आ गया है हमें इसे रोकने में ज्यादा देर नहीं करनी चाहिये अन्यथा प्रकृति की रचना, सुन्दर संसार नष्ट हो जायेगा। इसे रोकने की प्रथम पहल महिलाओं को ही करनी होगी। कोख में पल रहे बच्चे के लिंग का पता लगाने में महिला यदि स्वयं सहयोग नहीं करेगी तो परिवारजन व पुरुष किसी भी कीमत पर गर्भ में पल रहे भ्रूण का पता लगाकर, कन्या भ्रूण को नष्ट नहीं कर पायेंगे। महिलाओं को स्वयं यह कदम कठोरतम रूप में अपनाना होगा। महिला स्वयं अपनी सास को नैतिकता की कहानियाँ सुनाकर, सास का स्वयं लड़की होने का अहसास कराकर, उन्हें कन्या जन्म को दुर्भाग्यपूर्ण मानने की भावना से मुक्त करना होगा। दूसरे में महिलाएँ अपराध रोकने में इस प्रकार सहायता कर सकती हैं कि उनका पुत्र, भाई या पिता किसी ने भी किसी महिला के साथ अपराध किया है तो उस व्यक्ति को सिर्फ अपराधी समझकर सजा दिलवाने में समाज अपराध के अनुसार सजा नहीं मिलेगी तो अपराधों पर रोकथाम भी नहीं हो सकती। अक्सर यही होता है कि अपराधी अपराध तो अकेला करता है परन्तु उसे बचाने के लिए सारा परिवार, रिश्ते, नातेदार सभी लग जाते हैं जबकि ऐसा नहीं होना चाहिये। जो भी व्यक्ति अपराध करता है उसके परिवारजनों व खासकर उस परिवार की बालिका/महिलाओं के साथ यह अपराध होता तो कैसा अहसास होता। यदि यह भावना सभी महिलाओं में आ जाये तो अपराधों पर अंकुश अवश्य लग पायेगा। राज्य एवं राष्ट्रीय महिला आयोगों को भी अपनी भूमिका और सक्रिय करनी होगी। इन आयोगों का ऐसा सन्देश समाज में हो कि हर अपराधी परिवार अपनी फरियाद इन आयोगों तक पहुँचा सके तथा सही समय पर न्याय मिल सके इस चीज की सुनिश्चिता करावें। फास्ट ट्रेक अदालतें विशेषकर महिला अपराधों पर विचार व निर्णय के लिए स्थापित की जायें। कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति को अपराध के 25-30 सालों बाद सजा मिलती है तो उसका न तो अपराधी के लिए कोई मायने है और न ही पीड़ित को न्याय के रूप में कोई मायने। समाज में व्यक्ति के अन्दर छिपी नैतिकता को जगाना होगा ताकि आधी आबादी इस संसार में गरिमापूर्ण जीवन जी सके। अपराधियों के संरक्षण के लिए राजनेताओं को भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार का संरक्षण नहीं दिया जाना चाहिये। महिला शिक्षा को और बढ़ावा देकर महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है। शिक्षा ही महिलाओं को मानसिक रूप से सक्षम बना सकती है तथा अधिक से अधिक रोजगार दिये जाए ताकि महिलाएँ स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बन सकें। यदि महिला आर्थिक रूप से सक्षम होगी तो अन्य अपराधों का स्वयं ही मुकाबला कर पायेगी। महिलाओं से संबंधित कानूनों के निर्माण हेतु सहभागिता के लिए महिला आरक्षण विधेयक भी शीघ्र ही पारित किया जाना चाहिये। महिला सशक्तीकरण हेतु

एक व्यक्ति नहीं, एक संस्था से नहीं अपितु समग्र रूप से मिलकर हम सभी के प्रयास करना होगा। राजनीतिक तथा गैर-राजनीतिक सभी संगठनों को मिलकर प्रयास करना होगा तभी हम सुदृढ़ समाज का निर्माण संभव हो पायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. राजस्थान पत्रिका, इयर बुक 2010, पृष्ठ - 191
2. प्रो. मधुसूदन त्रिपाठी, संविधान और महिला अधिकार, पृष्ठ - 202
3. प्रो. मधुसूदन त्रिपाठी, संविधान और महिला अधिकार, पृष्ठ - 200
4. राजस्थान पत्रिका, 10 फरवरी 2013
5. पंजाब केसरी 4 फरवरी 2013
6. पंजाब केसरी 4 फरवरी 2013

## 19वीं सदी में सामाजिक चिन्तन गांधीजी के विशेष सन्दर्भ में

यामिका व्यास

शोधार्थी, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय,

अजमेर

शोध श्री



shodhshree@gmail.com

“19वीं शताब्दी” भारतीय इतिहास का ऐसा युग जबकि भारत में राजनीतिक, सांस्कृतिक जागरण आरंभ हो चुका था। यह समय यूरोप में तर्क एवं बौद्धिक कारणत्व की प्रभूता का काल था। 18वीं सदी में जहाँ “यूरोप में एक नवीन बौद्धिक लहर ने एक जाग्रति के युग” का सूत्रपात किया। वहीं इस समय भारत एक निष्पन्न, निश्चल तथा गिरते हुये समाज का चित्र प्रस्तुत करता था। “सुषुप्त भारतीय समाज” और चारों ओर अराजकता, अंधविश्वास और अवनति के ब्रह्म, फूट और एकता का अभाव जिसका विदेशी आक्रान्ताओं ने भरपूर लाभ उठाया। इसी समय पाश्चात्य शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के प्रभाव से युक्त और अपनी भारतीय सामाजिक परम्पराओं से दूर भागते भारतीयों में से अनेक ईसाई धर्म अपनाने लगे। ऐसे सामाजिक और धार्मिक अवनति के युग में कुछ प्रबुद्ध पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय संस्कृति का निष्पक्ष अध्ययन प्रस्तुत कर बुद्धिवादी भारतीय जनमानस में नवीन चेतना का संचार किया जिसके परिणामस्वरूप शनैः-2 प्रबुद्ध भारतीयों का एक वर्ग विशुद्ध भारतीय प्राचीन गौरवमयी परम्परा को प्रतिष्ठापित करने हेतु उद्भूत हुआ। इन प्रबुद्ध भारतीयों जिनमें राजाराममोहनराय, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नाम प्रमुख है, ने अनुभव किया कि यदि भारत के सामाजिक-धार्मिक जीवन में सुधार नहीं हुआ तो सम्पूर्ण हिन्दू समाज छिन्न-भिन्न हो जायेगा और इसके फलस्वरूप 19वीं सदी में भारतीय सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हुये।

यहाँ ये उल्लेखनीय है कि भारतीयों को अपनी गौरवमयी सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान, पाश्चात्य शिक्षा, अंग्रेजी राज की स्थापना से उत्पन्न राजनैतिक एकता, संचार साधनों के विकास प्रबुद्ध पूर्वात्यविदों द्वारा भारतीय सभ्यता संस्कृति के समृद्ध पक्षों के निर्देशन से भी हुआ। फिर भी ये कहना भी उतना ही तर्कसंगत होगा कि इन समृद्ध पक्षों (अंग्रेजी राज द्वारा कृत) में अंग्रेजी राज की स्वार्थपरक नीति समाहित थी। “भारत में धर्म की अस्थायी अस्वीकृति से एक नये युग का प्रादुर्भाव 18वीं सदी के आखिर से मान सकते हैं। इस प्रादुर्भाव हेतु सुधार आन्दोलनों का योगदान उल्लेखनीय है। इनमें राय का ब्रह्मसमाज आन्दोलन भारत का पहला सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन था। राय के समय व उससे पूर्व भारत में अंग्रेजीराज स्थापित हो चुका था। सामाजिक क्षेत्र में व्याप्त कुरीतियाँ जैसे बालविवाह, सतीप्रथा, कन्यावध, विधवा-पुनर्विवाह निषेध आदि के कारण भारतीय समाज पतनोन्मुख था।

19वीं सदी में हुये सुधार आन्दोलन मुख्यतः दो प्रकार के थे - एक उग्र सुधारवादी या पुर्ननवीकरण आन्दोलन जो प्राचीन भारतीय पद्धतियों, परम्पराओं से ही सुधार लाना चाहते थे - जैसे आर्यसमाज, रामकृष्णमिशन तो कुछ पाश्चात्य सुधारवादी विचारधारा से ओत-प्रोत हो इस मार्ग पर सुधार हेतु उद्भूत थे जैसे ब्रह्मसमाज, प्रार्थना समाज आदि।

यद्यपि प्रारंभ में कंपनी शासन ने भारत के सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र में अहस्तक्षेप की नीति अपनायी किन्तु बाद में अपनी इस नीति को परिवर्तित (1757 के झॉसी के युद्धोपरान्त) किया। अंग्रेजों ने अपने हितों को ध्यान में रखते हुये ईसाई मिशनरियों के शिक्षा-प्रसार कार्य को प्रात्साहित किया। कंपनी सरकार से प्रोत्साहित इन ईसाई मिशनरियों, ने ईसाई धर्म अपना लेने वालों के लिये विशेष सुविधाओं को, रियायतों को देना शुरू कर दिया जिसके फलस्वरूप भारतीयों की इस धर्म की ओर रुचि बढ़ने लगी। इसी सन्दर्भ में 1857 में ईस्ट इंडिया कंपनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के अध्यक्ष मॅगल्स ने ब्रिटिश संसद में कहा, कि “भारत का विस्तृत साम्राज्य हमें इसलिये मिला है ताकि हम इसे ईसाई बनाने का पूरा प्रयास करें।” अंग्रेजों ने मिशनरियों को प्रोत्साहन देने के

यामिका व्यास

39

साथ-साथ भारत की दो प्रमुख जातियाँ हिन्दू-मुसलमानों में साम्प्रदायिक वैमनस्य पैदा करने वाले प्रयासों में भी तीव्रता दिखाई।

ईसाई मिशनरियों द्वारा शनैः-2 जाति प्रथा, अस्पृश्यता, मूर्तिपूजा, सतीप्रथा तथा बालविवाह जैसी कुरीतियों के विरुद्ध किये गये प्रयासों के फलस्वरूप प्रबुद्ध भारतीय वर्ग भी इस ओर आकर्षित हुआ और इन्होंने सुधारवादी प्रयासों के साथ सुधारात्मक कानूनों की भी मांग की जिनके फलस्वरूप इन कुरीतियों को दूर करने हेतु सामाजिक विषयों में तटस्थता की अपनी नीति को अपनी आवश्यकतानुसार परिवर्तित करने हेतु अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रयास किये गये। इन्हीं परिस्थितियों में 1828 में उदारवादी उपयोगितावादी विलियम बेंटिक गवर्नर जनरल बने।

सामाजिक कानूनों के सन्दर्भ में दो शाखायें थी - प्रथम वह जो भारत में ब्रिटिश शासन को एक दैवीय अवसर मान, भारतीय समाज में सुधार एकमात्र उपाय ब्रिटिश सरकार को समझ उसके माध्यम से कानून-निर्माण मानते थे। इस शाखा के प्रतिनिधि राय, अक्षयकुमार दत्त, विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन तथा बी.एम. मालाबारी थे। द्वितीय शाखा वाले, भारतीय समाज में इस सुधार का उपाय देखते थे और विदेशी सरकार के सामाजिक क्षेत्र में कानूनी हस्तक्षेप को अनुचित मानते थे।

प्रथम शाखा के प्रतिनिधि श्री राय भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों, विशेषकर सतीप्रथा उन्मूलन की ओर प्रसासरत रहे। इन प्रयासों के प्रभाव के फलस्वरूप तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड बेंटिक ने सती प्रथा विरोधी कानून बनाया। यद्यपि 19वीं सदी के कट्टरपंथियों जिनमें राधाकांत देव का नाम प्रमुख है, ने इस प्रयास का विरोध किया। सुधारवादियों तथा परम्परावादियों के दृष्टिकोण में यह अन्तर सुधारों के प्रति उनके उपागम में भेद के कारण था। श्री राय ने ब्रह्म समाज, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने प्रार्थना समाज के माध्यम से रित्रियों की दशा सुधारने में योगदान दिया। यहाँ ये भी उल्लेखनीय है कि सरकार ऐसे कानून तभी बनाती थी जबकि उसकी आर्थिक, राजनैतिक आवश्यकता उसे ऐसा करने को विवश कर देती थी। इस दिशा में कम्पनी सरकार द्वारा कुछ कानून बनाये गये जो इस प्रकार से हैं- सतीप्रथा प्रतिबंध 1829, शिशुवध प्रतिबंध 1785-1804, हिन्दू विधवा पुनर्विवाह - 1856, नैटिव मैरिज एक्ट 1872, एज ऑफ कंसेट एक्ट 1891 आदि। इनमें से कुछ कानून जैसे - विधवा-पुनर्विवाह (1856) और विवाह की न्यूनतम आयु बढ़ाये जाने से सम्बन्धित कानून (1891) का सर्वत्र स्वागत नहीं हुआ। जैसे न्यूनतम अवस्था बिल पर तिलक द्वारा जिस प्रकार की राष्ट्रीय बहस छेड़ी गई, उसने सामाजिक सुधार आन्दोलन को एक देशव्यापी आन्दोलन का स्वरूप प्रदान किया जिसके फलस्वरूप सरकारी कानून द्वारा समाज सुधारात्मक नीति का त्याग कर दिया गया। हेमसेथ, सरकार के सम्मुख यह स्पष्ट हो गया कि भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक जीवन में हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप उसे काफी विरोध सहन करना पड़ेगा ने उसे, उस नीति को स्थगित करने पर विवश कर दिया। इस सामाजिक पृष्ठभूमि में एक और सन्तुलित दृष्टिकोण के महानतम व्यक्तित्व का अभ्युदय हुआ, जिनका नाम था मोहनदास करमचंद गांधी। श्री गांधी का जन्म गुजरात राज्य के उत्तर पश्चिमी भाग कठियावाड़ के पोरबंदर नामक स्थान पर 2 अक्टूबर, 1869 को एक व्यापारी वैश्य परिवार में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा स्वदेश में प्राप्त कर वकालत के अध्ययन हेतु 1888 में इंग्लैण्ड गये तथा 1891 में वहाँ से बैरिस्टर बन कर पहले राजकोट फिर बंबई में वकालत करने लगे। उन्होंने लंदन प्रवास के समय पाश्चात्य नैतिक, धार्मिक आन्दोलनों के संबंध में पुस्तकों, साक्षात्कारों और व्यक्तिगत वार्तालापों के माध्यम से जानकारी प्राप्त की। इसी प्रक्रिया के दौरान एडविन अरनोल्ड की रचना “दी लाइट ऑफ एशिया” (महात्मा बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं का उल्लेख), भगवद्गीता के अंग्रेजी अनुवाद “दी सांग सेलिस्टिअल” के अध्ययन से अपने जीवन दर्शन को समृद्ध बनाया।

1893 में श्री गांधी एक मुकदमें की पैरवी के लिए द. अफ्रीका गये और यहीं से उनकी सार्वजनिक और राजनीतिक जीवनयात्रा प्रारंभ हुयी। द. अफ्रीकी सरकार की इस रंगभेद की नीति के विरुद्ध उन्होंने “सत्याग्रह” जैसे सशक्त “हथियार के माध्यम से आवाज उठा, उनवरत् कष्टों और त्याग के परिणामस्वरूप द. अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति सुधारने में सफलतम प्रयास किये। गोखले, “बिना किसी प्रकार के स्वार्थ या लांछन के उन्होंने द. अफ्रीका में भारतीयों के लिए महान् संघर्ष किया और इसके लिए भारत सदैव उनका ऋणी रहेगा।” द. अफ्रीकी प्रवास के दौरान ही एक भारतीय सज्जन रायचन्द्र भाई के सान्निध्य में उन्होंने विशुद्ध हिन्दू आदर्शों

को अपने मानस पर गहरे प्रभाव के रूप में अंकित किया। रायचंद भाई के सान्निध्य में, रस्किन की अपनी रचना "अन्दू दिस लास्ट" तथा टायस्टॉय की अमरकृति "दी किंगडम ऑफ गांड इच विद इन यू" ने शाश्वत रूप से उन्हें प्रभावित किया। ऐसा उन्होंने अपनी आत्मकथा में स्वीकारा है।

द. अफ्रीकी सरकार के विरुद्ध सफलता प्राप्त कर 1914 में उन्होंने भारत पदार्पण किया। भारत आगमन के संबंध में उन्होंने लिखा, "मैं भारत को उस पद्धति से परिचित कराना चाहता था, जो मैंने द. अफ्रीका में अपनायी थी और मैं इस बात का भी परीक्षण करना चाहता था कि भारत में यह पद्धति किस सीमा तक अपनायी जा सकती है। 1920 में इस पद्धति का राष्ट्रव्यापी प्रयोग करने से पूर्व, 1915 में वीरग्राम चुंगी संरक्षण सेवा, सत्याग्रह करने की बात पर हटा ली गई। 1917 में चम्पारन सत्याग्रह, 1919 में अहमदाबाद मील-श्रमिकों को न्याय, गुजरात में खेड़ा क्षेत्र में लगान वापसी में सत्याग्रह के माध्यम से पूर्णतः सफलता प्राप्त की। उनके जीवन के मूलभूत सिद्धान्तों के रूप में प्रमुख तत्व थे - अहिंसा, ईश्वर में आस्था, समाज सुधार एवं समाज कल्याण के लिए कार्यशीलता। किन्तु पराधीन राष्ट्र में इन लक्ष्यों की प्राप्ति असंभव नहीं तो मुश्किल अवश्य थी, इसलिये उन्होंने अपने समाज-सुधार कार्यक्रम को अपनी राजनीतिक गतिविधियों के साथ ही जारी रखा।

वे समाज में प्रचलित अंधविश्वासों, कुरीतियों जैसे पर्दा-प्रथा, अस्पृश्यता, साम्प्रदायिकता के उन्मूलन हेतु कार्य करने के साथ-2 कुटीर उद्योग की स्थापना द्वारा सभी की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली अर्थव्यवस्था को प्रारंभ करना चाहते थे। गांधीजी के लिए भारत के पुनर्जागरण का अभिप्राय था - ग्रामीण जीवन में परिवर्तन, स्त्रियों की स्वतंत्रता, अस्पृश्यता का अंत, जनसाधारण की आर्थिक स्थिति में सुधार, ग्रामीण जीवन का पुनर्निर्माण वसुधार।<sup>10</sup>

गांधीजी ने सामाजिक क्षेत्र में जो सर्वाधिक क्रान्तिकारी और महत्वपूर्ण सुधार किया वह था - "अस्पृश्यता का निवारण व हरिजनोत्थान"। अस्पृश्यता के विषय में उन्होंने कहा कि यह भी "स्वराज" के मार्ग में बाधा है। इसका निवारण भी स्वराज के लिए उतना ही जरूरी है, जितना हिन्दू-मुस्लिम एकता।

"मैं अस्पृश्यता को हिन्दुत्व पर पड़ा सबसे बड़ा धब्बा मानता हूँ।" - गांधीजी (अहमदाबाद में 13 अप्रैल, 1920 में दलित वर्ग कांफ्रेंस में गांधीजी ने कहा)

गांधीजी हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। वे राम-अल्लाह की आधारभूत एकता में आस्था रखते थे। उनका मानना था कि सभी धर्मों का सार नैतिकता था। उनके अनुसार साध्य और साधन दोनों ही श्रेष्ठ होने चाहिये।<sup>11</sup> गांधीजी ने सत्य, अहिंसा, प्रेम, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अभय में आस्था रखते हुये उन्होंने कार्यों को कर्ता से अलग करके देखने का विचार किया। गांधीजी की हिन्दुत्व में अटूट आस्था थी। उनकी धारणा थी कि इस धर्म में अनेक अमूल्य रत्न छिपे हुये हैं। हिन्दुत्व न केवल सभी मनुष्यों की वरन् सभी प्राणियों की मौलिक एकता में विश्वास रखता है। वे मानवता के संबंध में सोचते थे कि देशप्रेम तथा मानवता में कोई भेद नहीं है। कवि रविन्द्र "गांधीजी राजनीतिज्ञ संगठनकर्ता मनुष्य नेता और नैतिक सुधारक के रूप में महान् है। निःसंदेह गांधीजी आदर्श व्यावहारिक सामाजिक व्यक्ति थे जिन्होंने सम्पूर्ण समाज को सम्बोधित किया। उनकी शिक्षायें कोरी आदर्शवादी न होकर व्यावहारिक जीवन में प्रयोग की जा सकने वाली चर्चार्थ थी।<sup>12</sup> उनका लक्ष्य सामाजिक-आर्थिक मुक्ति, नैतिक विकास और आध्यात्मिक पुनरुत्थान था। वास्तव में उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में समाज को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हुये इन्सानियत और मानव धर्म को प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया। टैगोर, "..... यद्यपि वह असाध्य रूप से आदर्शवादी थे और अपने निश्चित मापदण्डों द्वारा प्रत्येक कार्य को मापते थे, फिर भी वे मानवप्रेमी है न कि खोखले विचारों के प्रेमी।"

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. J.N. Farquhar, Modern Religious Movements in India.
2. M.G. Ranade, The Miscellaneous writings of Mr. Justice Ranade, p. 191.
3. गोवर वी.एल. यशपाल - आधुनिक भारत का इतिहास, पृष्ठ 399।
4. भट्टाचार्य एच.डी. (सम्पादक) - दी कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया, जिल्द 4, पृष्ठ-614।
5. चन्द्र सुधीर - इयोल्यूशन ऑफ सोशल पॉलिसी ऑफ दी कम्पनीज गवर्नमेंट इन इंडिया, "क्वेस्ट" जिल्द 47, 1965।
6. दत्त आर. सी. - इंडिया एंड इंग्लैण्ड।

7. पोछंदन ए. - बंगाल रिनेसांस - क्वेस्ट एंड कन्फ्रन्टेशन्स पनिकर के.एन. द्वारा उद्धृत।
8. हेमसेथ सी.एच. - इंडियन नेशनलिज्म एंड हिन्दू सोशल रिफॉर्मर्स।
9. यंग इंडिया - 11 नवम्बर, 1928
10. बोस एन.के. - सेलेक्शन्स फॉम गांधी
11. सेन एन.बी. - विट एंड विज्डम ऑफ महात्मा गांधी, पृष्ठ 118
12. प्रसार राजेन्द्र - एम.के. गांधी सर्वोदय, पृष्ठ-13
13. कुमारप्पा जे. सी. द्वारा - एक्रिटिकल स्टडी ऑफ गांधीयन इक्रॉनामिक थॉट में उद्धृत।



शासन का सम्बन्ध राज्य की मशीनरी एवं प्रशासनिक व्यवस्था से है जिसमें नीति निर्माताओं को निर्णय लेने के लिये अधिकृत किया जाता है। उसमें कर्तव्य के तरीके, निर्णय करना एवं उन्हें क्रियान्वित करना शामिल है। सुशासन शासन के उस व्यवहार से सम्बन्धित है जिसमें राज्य की मशीनरी व संस्थाएँ अपनी उत्कृष्टता प्राप्त करती हैं अर्थात् एक अच्छा शासन, शासक और शासित के सतत् दायित्व, उनके पारस्परिक एवं सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों तथा निर्णय प्रक्रिया द्वारा व्यक्तियों के सर्वश्रेष्ठ लाभ की प्राप्ति से सम्बन्धित है। सुशासन सहभागी, पारदर्शी, उत्तरदायी, प्रभावशाली एवं न्यायपूर्ण होता है। इसमें सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक प्राथमिकताओं का निर्धारण सामाजिक एवं नागरिक सहमति से होता है। निर्णय लेने से पूर्व नागरिकों की बात सुनी जाती है इसमें सार्वजनिक संस्थाओं का आवंटन बेहतरीन विकास के लिये किया जाता है तथा इसका लाभ व्यवस्था के अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुँचता है। सभी सभ्य व विकसित देश सुशासन के लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयत्न करते हैं क्योंकि सुशासन शान्ति समृद्धि और विकास की स्थिति को प्रदर्शित करता है। सुशासन का क्षेत्र विस्तृत है। इसके क्षेत्र में परिवार, समाज, प्रशासनिक संस्थान, निजी संस्थाएँ, राजनैतिक दल, नागरिक समितियाँ सभी हो सकते हैं। सुशासन के माध्यम से ही समाज के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र के आधारभूत मूल्यों को पहचान कर ईमानदार व जवाबदेय प्रशासन की स्थापना की जा सकती है।

सुशासन के विकास की बात करे तो ये कोई नहीं धारणा नहीं है इसने इतिहास के विभिन्न कालों में विभिन्न रूप लिये हैं। इसकी झलक हमें प्लेटो, अरस्तु, रूसो तथा जे.एस. मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के विचारों में देखने को मिलती है। वहीं भारतीय दर्शन में भी सुशासन के दर्शन हमें जगह-जगह होते हैं। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में कहा है कि, "राजा राज्य का सेवक है जिसकी अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा नहीं है"। कौटिल्य भ्रष्ट अधिकारियों के विरुद्ध दण्ड की बात करता है। उसने कहा है कि राजा का दिल ही प्रजा का शील है। राजा या अधिकारी जैसे होंगे प्रजा भी वैसी ही होगी इसलिये राज्य कर्मचारियों को अपने नैतिक स्तर को ऊँचा रखना चाहिये ताकि वे जनता के लिये एक आदर्श बन सकें। कौटिल्य ने अधिकारियों की नियुक्ति पूर्व परीक्षा की बात कही है तथा इसके साथ ही वह अधिकारियों पर नियन्त्रण की बात भी करता है। किसी अपराध के लिये अधिकारियों को प्रजा से दुगुना या तिगुना तथा राजा को सौ गुणा दण्ड दिये जाने का प्रावधान भी अर्थशास्त्र में मिलता है।

इसी प्रकार तुलसीदासजी ने रामचरित मानस में लिखा है कि "दैहिक दैविक, भौतिक ताया राम राज्य काहूँ नहीं व्याया।" अर्थात् रामराज्य में मनुष्य शारीरिक, सांसारिक एवं दैवी परेशानियों से मुक्त होता है।

गांधीजी ने भी सुशासन को रामराज्य के रूप में परिभाषित किया है। उनका कथन है कि हम राज्य को रामराज्य तभी कह सकते हैं जब राजा और प्रजा दोनों सरल हो, दोनों के हृदय पवित्र हो तथा दोनों के बीच पिता और पुत्र जैसे सम्बन्ध हो। इसके साथ ही गांधीजी की अन्त्योदय योजना व ट्रस्टीशिप सिद्धान्त आदि में हमें सुशासन के दर्शन होते हैं।

वर्तमान में इस अवधारणा का विकास 1974 में नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित महासभा की घोषणा से हुई है। लेकिन 20वीं सदी में सुशासन को प्रभावी रूप में लाने का श्रेय विश्व बैंक, आई.एफ.एफ, ओ.ई.सी.डी., यू.एन.डी.पी. तथा यूनेस्को जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं को रहा है। ये संस्थाएँ विकासशील देशों को आर्थिक सहायता देने के लिये सुशासन के सूचकांकों को पैमाने के रूप में प्रयोग करती हैं। विकासशील देशों में सुधार योजनाओं की असफलता ने इस संस्थाओं को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि उदारीकरण व विकास कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं जबकि इन देशों में न सिर्फ शासन हो बल्कि अच्छा शासन हो जो कि अनुक्रियाशील, उत्तरदायी, दक्ष और प्रभावी हो।

सुशासन की आधारभूत विशेषताएँ:- सुशासन की आधारभूत विशेषताओं में प्रमुख निम्न प्रकार हैं:-

- कानून का शासन :- सुशासन के लिये आवश्यक है कि सभी को कानून का समान संरक्षण मिले। इसी से सभी वर्गों के मानवाधिकारों की रक्षा सम्भव है जिसके लिये ईमानदार व स्वतन्त्र न्यायपालिका तथा निष्पक्ष व सक्रिय पुलिस दल की आवश्यकता है।
- उत्तरदायित्व :- जवाबदेही एवं उत्तरदायित्व का निर्धारण भी सुशासन की मूलभूत आवश्यकता है। केवल सरकारी संगठन ही नहीं बल्कि निजी संस्थाएँ व नागरिक संस्थाएँ भी जनता के प्रति उत्तरदायी हो।
- पारदर्शिता :- सुशासन के लिये शासन व प्रशासन के एक उपयुक्त स्तर तक पारदर्शिता का होना आवश्यक है। बिना खुलेपन के नागरिक सहभागिता को बढ़ाना सम्भव नहीं है। भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिये भी पारदर्शिता अति आवश्यक है जिसके लिये सूचना के अधिकार को सही मायने में लागू करना आवश्यक है।
- संवेदनशीलता :- सुशासन की स्थापना के लिये प्रशासन को जन समस्याओं के प्रति संवेदनशील व तत्पर होना होगा। बिना संवेदनशीलता के समस्याओं का समाधान मुश्किल है।
- सहभागिता :- सुशासन के लिये जन सहभागिता अति आवश्यक है। जब तक जन-जन का सहयोग प्रशासन को नहीं मिलेगा तब तक न तो जन समस्याओं का पता चल सकता है और ना ही उनका उचित समाधान सम्भव है। सहभागिता स्वप्रेरित होनी चाहिये।
- दक्षता और प्रभावशीलता :- सुशासन की स्थापना के लिये प्रशासनिक कार्यकुशलता, दक्षता तथा प्रभावशीलता आवश्यक है। बिना प्रभावशीलता के जन सहयोग मिलना असम्भव है।
- समता व समावेशन :- सुशासन में महिला-पुरुष, गरीब-अमीर की समानता आवश्यक है। अवसर की समानता से ही सभी वर्गों का प्रशासन में समावेशन सम्भव है जो राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय की स्थापना के साथ-साथ कमजोर वर्गों को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिये आवश्यक है।
- मानव अधिकार :- सुशासन के लिये मानव अधिकार प्राप्ति को प्राथमिकता देनी होगी। मानवाधिकारों का हनन कर कोई भी प्रशासन अच्छा हो ही नहीं सकता।
- सतत् विकास :- सुशासन की प्राप्ति के लिये सतत् विकास आवश्यक है। बिना विकास के बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, अपराध व आतंकवाद जैसी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता।

सुशासन के समक्ष बाधाएँ या चुनौतियाँ :- अगर हम भारतीय संदर्भ में देखें तो सुशासन के समक्ष बाधाओं में राजनैतिक व प्रशासनिक भ्रष्टाचार, अदक्ष, अनुत्तरदायी, असंवेदनशील एवं नौकरशाही प्रवृत्ति से युक्त लोकसेवा, जागरूक मतदाता व जनसहभागिता का अभाव, जनमत की उदासीनता एवं कर्तव्यों से भागने की प्रवृत्ति, अकुशल व भ्रष्ट न्यायपालिका, सुधारों के प्रति संकीर्ण सामाजिक मानसिकता, जाति व धर्म आधारिक सामाजिक सोच, पुलिस व प्रशासनिक सुधार का अपर्याप्त होना, समाज का चारित्रिक पतन, भ्रष्टाचार को सामाजिक स्वीकृति मिलना, अमीर व गरीब के बीच बढ़ता अन्तर, संसाधनों के उचित दोहन का अभाव, जनसंख्या वृद्धि, राजनैतिक अस्थिरता, आतंकवाद तथा भ्रष्ट व अकुशल नेतृत्व आदि प्रमुख हैं।

भारत में सुशासन की प्राप्ति हेतु किये गये प्रयास:- भारत ने 73वें व 74वें संविधान संशोधनों के माध्यम से प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण के माध्यम से सुशासन की तरफ महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। इससे स्थानीय जनता की अपने प्रतिनिधियों तक पहुँच बढ़ी है। जनता प्रशासन में बढ़-चढ़ कर भाग लेती है तथा स्थानीय निकायों के माध्यम से विकास योजनाएँ प्रभावी रूप से लागू की जा रही हैं।

सामाजिक व आर्थिक विकास के लिये नागरिक समितियाँ व स्वैच्छिक संगठनों को प्रशासन से सम्बद्ध किया गया है। जिससे विकास को गति मिली है और विकास योजनाओं का सफल प्रवन्धन भी हो रहा है।

उत्तरदायित्व एवं कुशलता लाने के लिये लोकसेवाओं में सुधार लाया जा रहा है। राजस्थान में हाल ही लागू लोकसेवाओं की गारण्टी अधिनियम इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। यह अधिनियम 14 नवम्बर 2011 से सम्पूर्ण प्रदेश में लागू है। इस अधिनियम के तहत आम जनता से जुड़े 15 विभागों के 53 विषयों की 108 सेवाओं को समयबद्ध एवं पारदर्शी रूप से उपलब्ध कराने की गारण्टी दी गई है। इसका उद्देश्य सुशासन की दृष्टि से आम

जनता को राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं, कार्यक्रमों व सेवाओं को लाभ निर्धारित समय सीमा में सुगमता से उपलब्ध कराना है।

पारदर्शी व कुशल प्रशासन के लिये सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग भी शासन द्वारा किया जा रहा है। ई-गवर्नेन्स के माध्यम से प्रशासन तक जनता की पहुंच को सुगम बनाया जा रहा है। इससे लोगों के बीच की दूरियां घट रही हैं तथा वे प्रशासन के बारे में घर बैठे जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

प्रशासनिक पारदर्शिता के लिये भारत में 2005 से सूचना के अधिकार को लागू किया गया है। यह अधिकार सुशासन की राह में मील का पत्थर साबित हो रहा है। इस अधिकार से नागरिक लोक सेवकों तथा सरकार से उसकी कार्यविधियों, विभिन्न विकास योजनाओं एवं विकास फंडों की जानकारी मांग सकती है। सम्बन्धित अधिकारी को मांगी गई जानकारी 30 दिवस में उपलब्ध करानी होगी। गलत सूचना, अधूरी सूचना या सूचना देने से मना करने की स्थिति में सूचना आयोग में अपील की जा सकती है। दोषी पाये जाने पर सम्बन्धित अधिकारी के खिलाफ जुर्माने व दण्ड का प्रावधान है।<sup>1</sup>

सूचना का अधिकार धीरे-धीरे जन आंदोलन का रूप लेता जा रहा है जिसके माध्यम से जनता ने सुस्त प्रशासन के कान खड़े कर दिये हैं। जनता सरकारी व अनुदानित स्कूलों से एडमिशन प्रक्रिया, मिड-डे मिल, भवन निर्माण एवं निशुल्क सुविधाओं के वितरण की जानकारी प्राप्त कर रही है। नागरिक सांसद व विधायक कोटे का हिसाब मांग रहे हैं। गरीब व बी.पी.एल. परिवारों की चयन प्रक्रिया उनके लिये घोषित सरकारी योजनाओं, राशन कार्ड, बी.पी.एल. कार्ड, बी.पी.एल. आवास योजना, आजीविका भत्ता आदि की जानकारी प्राप्त कर इन योजनाओं में हो रहे भ्रष्टाचार को उजागर कर रहे हैं। सूचना के अधिकार के लिये अनेक संस्थाएं, कार्यकर्ता व पत्रकार सक्रिय हैं। 2जी स्पैक्ट्रम घोटाले व विदेशों में जमा काले धन का उजागर होना सूचना के अधिकार की ही उपलब्धि है। सूचना के अधिकार के तहत रिहायशी इलाकों में गैर रिहायशी गतिविधियां, अवैध खनन, सड़क व भवन निर्माण में घटिया सामग्री का प्रयोग, विकास योजनाओं में आये धन का भ्रष्टाचारियों के हाथों में पहुंचना आदि भ्रष्ट कार्यों का पर्दाफाश किया जा रहा है। यह सभी गतिविधियां निष्क्रिय जनता को सक्रिय कर रही है। प्रशासनिक गतिविधियों से दूर रहने वाली जनता इसमें रुचि ले रही है इससे जनसहभागिता बढ़ने लगी है। जनता के सवाल के जवाब के डर से अधिकारी सक्रिय, सचेत व जिम्मेदार हो रहे हैं। सरकार भी सूचनाओं का स्वतः प्रगटीकरण करने लगी है जिसके तहत जनप्रतिनिधियों व लोक सेवकों की सम्पत्ति सार्वजनिक की जा रही है। देश में हो रही सूचना अधिकार के कार्यकर्ताओं की हत्याएं इस अधिकार की उपयोगिता को सिद्ध करती हैं क्योंकि भ्रष्ट कारनामों को छुपाने के लिये इन लोगों को निशाना बनाया जा रहा है।

इसके अलावा भी अनेक विकास योजनाएं व कार्यक्रम सरकार, विदेशी संस्थाओं तथा स्थानीय संस्थाओं के द्वारा चलाये जा रहे हैं। पर विडम्बना ये है कि इन सब के बावजूद देश में गरीबी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, अपराध, जाति व धर्म आधारित हिंसा, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध आम बात है। सामान्य जनता से लेकर प्रशासनिक अधिकारी यहां तक कि सरकार के बड़े पदों पर बैठे मन्त्री भी भ्रष्टाचार व अपराधों में लिप्त पाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में सुशासन कल्पना सा लगता है। सुशासन की प्राप्ति के लिये हमें मीलों चलना बाकी है। इस हेतु अभी और अधिक प्रयास आवश्यक है।

इस हेतु निम्नलिखित प्रयास अपेक्षित हैं:-

- सुशासन को सफल बनाने के लिये सर्वप्रथम इसके प्रति लोगों की रुचि होना आवश्यक है। इसके लिये नागरिक, ईमानदार लोक सेवक, शोधकर्ता, संगठित उद्योग, युवा सांसदों, राजनेता व राजनैतिज्ञों, प्रेस व संचार माध्यमों को आगे आना होगा।
- हमें आम चुनाव में निष्पक्ष, ईमानदार व उच्च चरित्र वाले व्यक्ति को चुनना होगा।
- प्रशासन के स्तर पर पारदर्शिता, जवाबदेयता व सहभागिता के विकास के लिये सूचना के अधिकार की जन-जन तक पहुंच आवश्यक है। सूचना के अधिकार के लिये संघर्षरत कार्यकर्ताओं की सुरक्षा का पुख्ता इन्तजाम भी जरूरी है।
- भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिये जनमानस तैयार करना होगा। रिश्वत लेने वालों के साथ ही रिश्वत देने वालों के खिलाफ भी सख्त कानून की आवश्यकता है।
- हमें सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय की प्राप्ति के लिये ईमानदारी व सक्रियता से कार्य करना होगा।

- हमें लोक सेवा गारण्टी जैसे कानूनों को ईमानदारी से लागू करना होगा तथा जनता को इसकी जानकारी करानी होगी।
- हमें गरीबी व अशिक्षा को मिटाने के लिये जन सामान्य को साथ लेकर चलना होगा। हमें गरीबी को मिटाना होगा न कि गरीबों को।
- सुशासन हेतु हमें अपने अधिकारों की बजाय कर्तव्यों पर ध्यान देना होगा क्योंकि बिना कर्तव्यों के अधिकारों की प्राप्ति सम्भव नहीं है।  
अन्त में मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि हमें सुशासन की कल्पना को यथार्थ के धरातल पर उतारना होगा क्योंकि अक्सर ऐसी विचारधाराओं को अपनाते से बचने के लिये हम उसे आदर्शवादी कहकर पीछा छोड़ा लेते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. योजना जनवरी, 2013 प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ0 41
2. उपर्युक्त, पृ0 42
3. सुरेन्द्र मुंशी, बीजूपाल अन्नाहम, सोमा चौधरी, सुशासन, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ0 2
4. योजना जनवरी, 2013 प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ0 7
5. राजस्थान सुजस, दिसम्बर, 2011, पृ0 38
6. डॉ0 हनुमान गालवा, आम आदमी और सूचना का अधिकार, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, पृ0 50

## 18वीं शताब्दी में हाड़ौती की कृषि उत्पादन व्यवस्था

डॉ. गुंजन कुमावत

व्याख्याता, मानवता महिला महाविद्यालय,  
फुलेरा

शोध श्री



shodhshree@gmail.com

राजस्थान भारतवर्ष का एक गौरवशाली प्रदेश है, जिसका एक प्राचीन समय से चला आ रहा वीरतापूर्ण इतिहास है। हाड़ौती राजस्थान का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र जिसमें वर्तमान कोटा, बूंदी एवं झालावाड़ जिले सम्मिलित हैं, हाड़ौती कहलाता है।<sup>1</sup> हाड़ावंशीय राजपूतों के द्वारा राज्य करने के कारण मध्य एवं आधुनिक युग में हाड़ौती प्रदेश कहलाने लगा।<sup>2</sup>

हाड़ौती की अर्थव्यवस्था को यहां की भौगोलिक परिस्थितियों ने प्रभावित किया है। राजस्थान के कई दूसरे भागों की तुलना में हाड़ौती की अच्छी जलवायु, वर्षा करवाने में सहायक पर्वत श्रेणियों की बहुलता, वर्षा का सामान्य औसत, उपजाऊ भूमि, सघन वन एवं नदियों की बहुलता आदि विशेषतायें लिये हुए यहां की भौगोलिक परिस्थितियां कृषि के लिये उपयुक्त हैं।

हाड़ौती के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था और राज की आय का मुख्य स्रोत कृषि कर थे। अतः यह क्षेत्र कृषि की दृष्टि से राजस्थान का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है। कृषि उत्पादन में हाड़ौती क्षेत्र न केवल आत्म निर्भर था, बल्कि अन्य रियासतों के लिए यहां से अनाज का निर्यात भी किया जाता था। शासक कृषकों को गांवों के पटेलों के माध्यम से अधिक से अधिक भूमि पर कृषि करने के लिए प्रोत्साहित करते थे।<sup>3</sup> कोटा रियासत के जमाबंदी अभिलेखों के अनुसार सरकार द्वारा कृषकों को बैल, बीज तथा कृषि-औजार खरीदने के लिए "तकावी" दी जाती थी।<sup>4</sup> 18वीं सदी में मुगल साम्राज्य के पतनोन्मुख होने के कारण उत्पन्न अव्यवस्था एवं देश के विभिन्न भागों में पड़ने वाले भयंकर अकालों से उत्पन्न परिस्थितियों के कारण पड़ोसी रियासतों के पीड़ित कृषकों ने हाड़ौती में शरण ली थी क्योंकि हाड़ौती में अकालों का प्रभाव राजस्थान के अन्य हिस्सों के बजाय कम था। 18वीं सदी में हाड़ौती में शासकों के प्रयासों के कारण कृषि भूमि के क्षेत्रफल एवं कृषि उत्पादन में और वृद्धि हुई थी।

सिंचाई के साधन:- हाड़ौती में सिंचाई के निम्नलिखित साधन थे:-

- **कुए:-** कुए सिंचाई के प्रमुख साधन थे। सम्पूर्ण हाड़ौती में कुए बड़ी मात्रा में पाये जाते थे। समकालीन अभिलेखों से पता चलता है कि राजा की ओर से भी समय-समय पर कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए एवं वर्षा कम होने पर सिंचाई हेतु जगह-जगह नये कुए बनवाये जाते थे तथा पुराने कुओं की मरम्मत करवायी जाती थी।<sup>5</sup> कोटा रियासत के समकालीन इमारत खाना से संबंधित अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वि.सं. 1894 में राज्य द्वारा रामगढ़ में एक सरकारी कुआ बनवाया गया था, जिसमें 436 रुपये खर्च हुये और इसी प्रकार कस्बा नैनवा में एक कुआ व एक कुण्ड बनवाया गया, जिसमें 777/- रुपये खर्च हुये। कुओं से सिंचाई चड़स, सुंड़ा और डेकली द्वारा भी की जाती थी।<sup>6</sup>
- **बावड़ियाँ:-** ये भी सिंचाई का साधन थीं। बावड़ियाँ चौकोर होती थी और आकार में कुओं से बहुत बड़ी होती थी, इनमें अन्दर उतरने के लिए सीढ़ियाँ लगी होती थी। बावड़ियों का सिंचाई के लिए कम ही प्रयोग किया जाता था। बावड़ियों से भी कुओं की भांति चड़स आदि से पानी निकाला जाता था। कोटा राज्य के इमारतखाना अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वि.सं. 1862 में राज्य द्वारा नैनवा में एक बावड़ी बनवायी गयी थी जिस पर 376/- रुपये खर्च हुए थे।<sup>7</sup>
- **तालाब:-** इस क्षेत्र में तालाब भी सिंचाई के प्रमुख साधन थे। पहाड़ियों और टीलों के बीच में जहां छोटी-छोटी दीवारें बनाकर बहुत सारा पानी इकट्ठा किया जा सकता था। वहां पर तालाबों का निर्माण करवाया जाता था। कोटा रियासत के समकालीन इमारतखाना अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वि.सं. 1861 में झाला जालिम सिंह ने ग्राम धनवा में एक तालाब बनवाया था, जिसमें 450 रुपये खर्च हुये थे।<sup>8</sup>

अकाल के दिनों में भी जनता को रोजगार देने एवं भविष्य में अकाल का सामना करने के लिए तालाब बनवाये जाते थे। हाड़ौती में अक्सर सभी बड़े गांवों व कस्बों के निकट तालाब बने हुए थे।

- **नहरें:-** हाड़ौती में राजस्थान के अन्य भागों की अपेक्षा अधिक नदियां बहती थी। जिन नदियों में केवल वर्षा के दिनों में ही पानी बहता था, इनका पानी छोटे-छोटे बांध व झीलें बनाकर इकट्ठा कर लिया जाता था और इनसे छोटी-छोटी नहरें निकाल कर खेतों की सिंचाई की जाती थी। कोटा राज्य में अटारू के पास पार्वती नदी पर जहां इसमें अंडेरी नदी आकर मिलती है वहां इस पर बांध बनाया गया था जिससे लगभग 40 गांवों की भूमि की सिंचाई होती थी।<sup>9</sup> किन्तु इस क्षेत्र में नहरों से बहुत कम भूमि की सिंचाई की जाती थी।
- **इहर व इहरी:-** ऐसा खेत जो आस-पास की भूमि से नीचा हो और जिसमें वर्षा का पानी भर जाता हो, उसे इहर व इहरी कहते थे। वर्षा ऋतु के बाद जब इहर व इहरी का पानी सूख जाता था तो इसमें चना व सरसों आदि रबी की फसलें बोयी जाती थी। इहर व इहरी की भूमि में नमी होने के कारण रबी की फसलों को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती थी। वर्षा का पानी इहर व इहरी में बहकर आने के कारण इनकी भूमि उपजाऊ भी होती थी। हाड़ौती में लगभग सभी गांवों में इहर व इहरी पायी जाती थी। जिनमें बिना सिंचाई के बड़े पैमाने पर रबी की फसलों का उत्पादन होता था। राज की ओर से कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए कृत्रिम इहर व इहरियां बनवाई जाती थी।<sup>10</sup>

कृषि भूमि का वर्गीकरण:- राजस्थान के अन्य क्षेत्रों की भांति हाड़ौती में भी कृषि भूमि को इसकी स्थिति, उपजाऊ शक्ति एवं प्राप्त सिंचाई सुविधा के आधार पर विभिन्न भागों में वर्गीकृत किया गया था। भिन्न-भिन्न भूमि पर लगान की दरें भी अलग-अलग निर्धारित की गयी थी।

- **पीवत या चाही:-** कुओं से सिंचित भूमि को पीवत या चाही भूमि कहते थे। पीवत भूमि उपजाऊ शक्ति एवं सिंचाई सुविधा के आधार पर उत्तम, मध्यम व निम्न इन तीन श्रेणियों में विभक्त थी। जिसके अलग-अलग स्थानीय नाम थे। कोटा रियासत के समकालीन अड़सट्टा अभिलेखों से जानकारी मिलती है कि कोटा रियासत में पीवत भूमि की लगान दर पांच रूपया प्रति बीघा थी।<sup>11</sup>
- **गोयरा:-** गोयरा के निकट स्थित भूमि को गोयरा भूमि कहते थे।<sup>12</sup> यह भी उपजाऊ शक्ति के आधार पर श्रेणियों में वर्गीकृत की गयी थी। गोयरा भूमि बहुत उपजाऊ होती थी। अतः उसकी लगान दर भी ऊंची होती थी। कोटा रियासत के समकालीन अड़सट्टा अभिलेखों से जानकारी मिलती है कि वि.सं. 1866 में सरकार ने परगना बरसाना के मौजा कछड़ा में 9 बीघा 6 बिसवा गोयरा भूमि का 4 रुपये प्रति बीघा की दर से 37 रुपये 3 आने लगान वसूल किया था।<sup>13</sup>
- **माल:-** माल भूमि उपजाऊ एवं असिंचित भूमि होती थी।<sup>14</sup> इसके स्रोत आकार में अपेक्षाकृत बड़े होते थे। इसमें रबी व खरीफ दोनों प्रकार की फसलें पैदा होती थी। इसे उपजाऊ शक्ति व मिट्टी के रंगों के आधार पर पांच श्रेणियों में विभक्त किया गया था। माल भूमि की विभिन्न श्रेणियों की लगान की दरें भी अलग-अलग थी।
- **काछड़:-** नदी-नालों द्वारा तीनों ओर से घिरी भूमि को काछड़ भूमि कहते थे।<sup>15</sup> वर्षा के दिनों में नदी नालों में अधिक पानी आने पर व बाढ़ आने पर काछड़ भूमि पानी में डूब जाती थी। यह सामान्य श्रेणी की उपजाऊ भूमि होती थी इसलिए इसकी लगान दर अधिक नहीं थी। यह असिंचित भूमि होती थी। इसमें रबी की फसलें बिना सिंचाई के पैदा की जाती थी।
- **पेटा भूमि:-** तालाबों एवं बांधों आदि के तल की भूमि को पेटा भूमि कहते थे।<sup>16</sup> तालाबों व बांधों आदि का पानी सूख जाने पर उनके तल में रबी की फसलें बो दी जाती थी। पेटा भूमि में नमी अधिक होने के कारण सिंचाई की अलग से आवश्यकता नहीं होती थी।
- **नदी का डोल या तीर:-** नदी के किनारों की भूमि को डोल या तीर भूमि कहते थे। इस भूमि में खरीफ, रबी व जायद सभी फसलें पैदा होती थी। खरीफ की फसलों के अतिरिक्त रबी व जायद फसलों की ढेंकली आदि से सिंचाई की जाती थी। यह सामान्य श्रेणी की उपजाऊ भूमि मानी जाती थी।
- **नौतोड़:-** नवीन कृषि भूमि को नौतोड़ भूमि कहते थे।<sup>17</sup> जिसे समतल बनाकर अनावश्यक पेड़-पौधों को

काटकर कृषि योग्य बनाया जाता था। नौतोड़ भूमि लगान दर बहुत कम होती थी।

- उपरेती माल (पहाड़ी भूमि):- पहाड़ी भूमि को उपरेती माल भूमि कहते थे। उपरेती भूमि सामान्य श्रेणी की भूमि थी। अतः इनकी लगान दर एक रूपया दो आने प्रति बीघा थी।<sup>10</sup>
- उहर माल:- इस प्रकार की भूमि में खरीफ की फसल के साथ ही साथ रबी की फसल भी अच्छी पैदा होती थी और उसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती थी। ऐसी भूमि सामान्यतः सामान्य श्रेणी भूमि होती थी। निम्न सारणी में विभिन्न प्रकार की भूमि एवं उसके उपजाऊपन के अनुसार निर्धारित लगान की दरें दर्शायी गयी हैं:-

### सारणी 3.1<sup>10</sup>

भू-राजस्व की प्रति बीघा रूपयों में दरें

कृषि भूमि	दर(वि.सं. 1864)	दर(वि.सं. 1866)	दर(वि.सं. 1873)
1. पीवत या चाही	3.50		5.00
2. गोयरा	4.00	4.00	4.00
3. माल	2.00	2.00	2.00
4. काछाड़	3.50		1.75
5. झोल या तीर	1.25	1.25	1.50
6. नौतोड़			
7. पेटा भूमि	1.00	1.25	1.00
8. उपरेती माल	1.00	1.25	1/- 2 आने
9. डहर माल	12 आने	1.00	1/- 3 आने

कृषि औजार:- हल, कुली, नाय, कुल्पा, पट्टा, हंसिया, नकवा, कुदाली, कड़ाई, गन्डासी गोपाल्या, खुरपी आदि कृषि औजारों में से हल खेती में सर्वाधिक महत्वपूर्ण औजार था। यह भूमि जोतने एवं बीज बोने के काम आता था। हल लकड़ी का बनाया जाता था। इसके निचले हिस्से में एक लोहे का टुकड़ा “फाली”<sup>11</sup> भूमि की बुवाई करने के लिए लगा होता था। हल को भूमि की बुवाई करने के लिए बैलों की जोड़ी से खींचा जाता था। कुली से जुताई किये गये खेत के ढेले फोड़ने, घास उखाड़ने, बोये गये बीजों को ढकने के काम आती थी। नाय को मुख्यतः रबी की फसलों के बीज बोने के काम में लेते थे। जिसमें बीज डालने के लिए नली बनी होती थी। पट्टा लकड़ी का बना होता था। इसमें तल समतल होते थे। यह हल से बोयी हुई भूमि के ढेले फोड़ने व मिट्टी को समतल करने के काम में आता था। हंसिया फसलों को काटने में काम आता था।

कृषि उत्पादन:- हाड़ौती में मुख्यतः दो फसलें पैदा होती थीं - खरीफ और रबी। परन्तु जहां सिंचाई की पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध थीं वहां पर गर्मी के मौसम में एक अतिरिक्त या तीसरी फसल भी होती थी : जिसे “जायद” कहा जाता था। चावल, ज्वार, मक्का, नील, कसूबा, आल, सण, बणी (कपास) तिलहन एवं दालें खरीफ की मुख्य फसलें थीं। खरीफ की फसलें वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में बोयी जाती थी और वर्षा ऋतु के अंत में काट ली जाती थी। गेहूं, जौ, चना, सरसों, अलसी व कुछ दालें तथा सब्जियां आदि रबी की मुख्य फसलें थीं। रबी की फसलें सर्दी की ऋतु के प्रारम्भ में बोयी जाती थी और इस ऋतु के अंत में काट ली जाती थी। खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, टिण्डी, करेले आदि फल व सब्जियां मुख्य जायद फसलें थीं। जायद फसलें सर्दी ऋतु के अंत व गर्मी की ऋतु के प्रारम्भ में बोयी जाती थी। जायद फसलों की सिंचाई की जाती थी।

हाड़ौती के सम्पूर्ण कृषि उत्पादन को मुख्य रूप से दो प्रकार की फसलों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

### खाद्यान्न फसलें:-

- गेहूं:- रबी की महत्वपूर्ण फसल थी। गेहूं सम्पूर्ण हाड़ौती में बोया जाता था।<sup>12</sup> यह अच्छी किस्म की उपजाऊ भूमि में पैदा होता था। इसे अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती थी। गेहूं की फसल जब चने की व जौ की फसलों के साथ मिश्रित रूप से बोयी जाती थी तो इसे “बेझड़” कहते थे।<sup>13</sup> कोटा रियासत के समकालीन कटता माल हासिल अभिलेखों के अनुसार पता चलता है कि वि.सं. 1868 में पगरना बड़ोद में बड़े पैमाने पर बेझड़ का उत्पादन किया गया।<sup>14</sup> गेहूं उच्च वर्ग के लोगों का मुख्य खाद्यान्न था। इसका भूसा पशुओं को खिलाने के काम आता था।
- चना:- चना भी गेहूं के समान रबी की महत्वपूर्ण फसल थी।<sup>15</sup> यह सम्पूर्ण हाड़ौती में बोया जाता था। कोटा रियासत के समकालीन कटता माल हासिल अभिलेखों के अनुसार ज्ञात होता है कि वि.सं. 1868 में परगना पलायथा के मौजा दुगारी में आधी से ज्यादा भूमि में चने की फसल बोयी गयी थी।<sup>16</sup> चने का उपयोग विभिन्न खाद्यान्नों एवं दाल के रूप में किया जाता था।
- जौ:- जौ रबी की अन्य महत्वपूर्ण फसल थी। हाड़ौती में जौ कम मात्रा में बोया जाता था। कोटा रियासत के समकालीन कटता माल हासिल अभिलेखों से ज्ञात होता है कि परगना, सांगोद, बांरा, बड़ोद, नंदगांव आदि में अन्य परगनों की अपेक्षा जौ का उत्पादन अधिक होता था। जौ मध्यम वर्ग एवं गरीब लोगों का मुख्य खाद्यान्न था।<sup>17</sup>
- ज्वार:- ज्वार खरीफ की मुख्य फसल थी।<sup>18</sup> हाड़ौती क्षेत्र राजस्थान में ज्वार की पैदावार में सबसे आगे था। जैसा कि कोटा रियासत के समकालीन बाजे तालके अभिलेखों से ज्ञात है कि ज्वार हाड़ौती क्षेत्र में लगभग सभी परगनों में बड़े पैमाने पर पैदा की जाती थी।<sup>19</sup> हाड़ौती क्षेत्र ज्वार की पैदावार के लिए उपयुक्त क्षेत्र था। ज्वार मध्यम एवं गरीब लोगों का मुख्य खाद्यान्न था।
- मक्का:- मक्का का हाड़ौती क्षेत्र में बड़े पैमाने पर उत्पादन होता था। यह चिकनी व काली मिट्टी में बोयी जाती थी। इसे वर्षा की अधिक आवश्यकता होती थी। यह पहाड़ी क्षेत्र में लाल मिट्टी में भी पैदा होती थी। कोटा रियासत की अपेक्षा बूंदी रियासत में मक्का अधिक बोयी जाती थी।<sup>20</sup> मक्का गरीब लोगों का मुख्य खाद्यान्न था।
- बाजरा:- वैसे राजस्थान में बाजरा खरीफ की मुख्य फसल थी परन्तु हाड़ौती की भौगोलिक परिस्थितियां इसके लिए उपयुक्त नहीं थी। इसलिए हाड़ौती में बाजरे की फसल बहुत कम बोयी जाती थी।
- चावल:- चावल हाड़ौती की अन्य महत्वपूर्ण खरीफ की फसल थी। वैसे राजस्थान जैसे शुष्क एवं रेगिस्तानी प्रदेश में चावल का उत्पादन करना मुश्किल था; क्योंकि इसकी खेती के लिए पर्याप्त वर्षा की आवश्यकता होती थी। परन्तु हाड़ौती का जलवायु चावल के उत्पादन के लिए पूरी तरह उपयुक्त था और यहां पर्याप्त मात्रा में वर्षा होती थी। अतः यहां चावल का उत्पादन खूब होता था।
- गवार:- राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में गवार की फसल मुख्य फसलों में थी परन्तु हाड़ौती में इसका उत्पादन बहुत कम होता था; क्योंकि हाड़ौती की भौगोलिक परिस्थितियां इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं थी। यह पशुओं को खिलाने के काम आता था।
- दालें:- हाड़ौती क्षेत्र राजस्थान में दालों के उत्पादन में अग्रणी था। मूंग, उड़द, व मसूर आदि दालों का यहां खूब उत्पादन होता था।<sup>21</sup> दालें हाड़ौती के सभी वर्गों के लोगों के भोजन का मुख्य अंग थी।
- मसालें:- हाड़ौती में धनिया, जीरा, मेथी, अजवायन, साँफ, राई, मिर्च, हल्दी, लहसुन व अदरक<sup>22</sup> आदि मसालों की फसलें मुख्य रूप से बोयी जाती थी। ये सभी मसालों की फसलें रबी की फसलें थी।<sup>23</sup> जीरा, राई आदि का इस प्रदेश में अधिक उत्पादन होता था।
- सब्जियां:- हाड़ौती में मुख्यतः बैंगन, गोभी, टमाटर, कोला (कद्दू), तुरई, करेले, घीया (लोकी), आलू, रतालु, अरबी, शकरकन्द, गाजर, प्याज, मूली, मटर, खीरा, टिण्ड़ा, सेम या बीड़ा, पालक, भिन्डी, शलजम व विभिन्न प्रकार की फलियां<sup>24</sup> आदि सब्जियां खूब पैदा होती थी। सब्जियां अच्छी

किस्म की सिंचित भूमि में बोयी जाती थी। सब्जियों के खेत अक्सर गांव व कस्बों के निकट होते थे। ये सब्जियां स्थानीय लोगों के भोजन का प्रमुख अंग थी।

- **फल:**— हाड़ौती में कई प्रकार के ऋतुफल पैदा होते थे। शासकों की ओर से बड़े कस्बों व शहरों के आस पास बाग लगवाये जाते थे। जैसे कि कोटा व बूंदी शहर के आस-पास कई बाग थे।<sup>35</sup> कोटा राज्य में बागान से संबंधित समकालीन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि सरकारी बागों में अरण्ड ककड़ी (पपीता), नारंगी, केले, जामुन, खिरनी, कटहल, नींबू, अमरुद, आम, सेव, मौसमी, जायफल, सीताफल, गूंदगरी, सहतूत, अनार, दाड़िम आदि फलों का बड़ी मात्रा में उत्पादन होता था।

#### व्यापारिक फसलें:-

- **अफीम:**— अफीम की खेती मुख्यतः कोटा रियासत के दक्षिणी भाग अर्थात् आधुनिक झालावाड़ जिले में होती थी।<sup>36</sup> अफीम का व्यापारिक फसलों में महत्वपूर्ण स्थान था। राजपूत लोग अफीम के बहुत शौकीन होते थे। अतः राजस्थान के राजवाड़ों में इसकी बहुत मांग रहती थी।
- **कपास:**— हाड़ौती राजस्थान में कपास का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र था। बूंदी रियासत के तहसील अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वि.सं. 1805 में परगना सिलोर में 162 बीघा और 8 बिस्वा भूमि में कपास बोयी गयी थी।<sup>37</sup> कपास के लिए काली व चिकनी उपजाऊ मिट्टी उपयुक्त होती है।
- **गन्ना:**— राजस्थान में हाड़ौती क्षेत्र गन्ने का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र था। गन्ने की खेती के लिए अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। इसकी फसल को तैयार होने में अन्य फसलों की तुलना में अधिक समय लगता था। कोटा रियासत के समकालीन तोजी दो बर्की खाता अभिलेखों से ज्ञात होता है कि परगना गागरोन, डरमाल, मधुकरगढ़, रीछवा में गन्ने के रस से गुड़ तथा खण्डसारी तैयार की जाती थी।
- **सण:**— सण या सणी जूट के समान होता था परन्तु सण की किस्म जूट से अच्छी होती थी। हाड़ौती में इसका उत्पादन खूब होता था।<sup>38</sup> इसके रेशों से मजबूत रस्से बनाये जाते थे।
- **तम्बाकू:**— भारत में तम्बाकू का पौधा पुर्तगालियों द्वारा सन् 1508 में लगाया गया था और तब से ही इसकी खेती भारत में कई राज्यों में की जाती है। हाड़ौती में यह जायद की फसल थी। अधिकांश लोग इसे नशीले पदार्थ के रूप में काम लेते थे। कृषकों में यह बड़ी लोकप्रिय थी।
- **नील:**— नील का हाड़ौती में बड़े पैमाने पर उत्पादन होता था। नील के पौधों की पत्तियों को सूखाकर उनसे नीला रंग तैयार किया जाता था जो कपड़ों के रंगाई छपाई के लिए काम आता था।
- **कसूबा व आल:**— कसूबा व आल की खेती भी हाड़ौती में खूब होती थी। कसूबा के फूलों से व आल के पौधों की जड़ों से लाल रंग तैयार किया जाता था। जो रंगाई-छपाई व बंधेज के काम आता था।
- **तिल:**— यह खरीफ की सबसे महत्वपूर्ण तिलहन की फसल थी। तिल की खेती सम्पूर्ण हाड़ौती में की जाती थी।<sup>39</sup> तिल खाद्य निकालने के अलावा खाने के काम में भी आते थे।
- **अलसी:**— यह रबी की तिलहन फसल थी। अलसी उपजाऊ भूमि में बिना सिंचाई के भी पैदा होती थी। अलसी की खेती भी सम्पूर्ण हाड़ौती में बड़े पैमाने पर होती थी।<sup>40</sup>
- **मूंगफली:**— यह खरीफ की मुख्य तिलहन फसल थी। हाड़ौती में मूंगफली की फसल काफी बड़े पैमाने पर बोयी जाती थी।<sup>41</sup> मूंगफली तेल निकालने के अलावा खाने के काम में भी आती थी।
- **सरसों व राई:**— सरसों व राई रबी की प्रमुख तिलहन फसलें थीं। सरसों व राई के बीजों से तेल निकाला जाता था। इनका उत्पादन हाड़ौती में लगभग सभी जगह होता था।<sup>42</sup>

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. एपीग्राफिया इण्डिका, भाग 3, पृ. 235
2. एपीग्राफिया इण्डिका, भाग 9, पृ. 280
3. डॉ. बी.एल. गुप्ता, ट्रेड एण्ड कॉमर्स इन राजस्थान पृ. 43
4. भं.नं.3, व.नं.67, खाते जागीर एवं माफी, वि.सं. 1839(1782 ई.); भं.नं.3, व.नं.23, तालीक बही, वि.सं. 1880-81(1823-24), रा.रा.अ. बीकानेर।
5. भं.नं.3, व.नं.6/2, तालीक बही, वि.सं. 1869 (1812 ई.); भं.नं. 2/2, व.नं. 7, कटता माल हासिल, वि.सं. 1842 (1785 ई.); भं.नं. 14, व.नं. 37, जमा बंदियां, वि.सं. 1842 (1785 ई.); भं.नं. 5, व.नं. 26, सीमा जकात, वि.सं. 1860-1889

- (1803-1832 ई.) कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 17, व.नं. 91, बही: इमारतखाना, वि.सं. 1860-1894 (1803-1837 ई.) कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 17, व.नं. 91, बही: इमारत खाना, वि.सं. 1860-1894 (1803-1837 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- वही।
- मथुरा लाल शर्मा, कोटा राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 20।
- भं.नं. 3, व.नं. 6/1, तालीक बही, वि.सं. 1869 (1812 ई.) कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 1, व.नं. 17, खसरा टीप व अडसट्ट, वि.सं. 1863(1806 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 3, व.नं. 2, तालीक बही, वि.सं. 1858 (1801 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 2, व.नं. 1, अडसट्टा, वि.सं. 1866 (1809 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- डॉ. (मिस) आर.पी. शास्त्री, झाला जालिम सिंह (1730-1823), पृ. 313।
- डॉ. (मिस) आर.पी. शास्त्री, झाला जालिम सिंह (1730-1823), पृ. 313
- शास्त्री, पृ. 313
- डॉ. (मिस) आर.पी. शास्त्री, झाला जालिम सिंह (1730-1823), पृ. 313
- भं.नं. 1, व.नं. 17, अडसट्टा, वि.सं. 1863 (1806 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 2, व.नं. 1, 3, 4, अडसट्टा, वि.सं. 1864-1873 (1807-1816 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बूंदी, पृ. 106।
- तहसील दर्ई, व.नं. 1, वि.सं. 1814 (1757 ई.); तहसील करवर, व.नं. 1, तेरीज, वि.सं. 1808(1751 ई.); तहसील लाखेरी, व.नं. 1, तेरीज, वि.सं. 1806 (1749 ई.); तहसील गोठड़ा, व.नं. 1, तेरीज, वि.सं. 1819 (1862 ई.); तहसील गण्डोली, व.नं. 35ए, वि.सं. 1804 (1747 ई.), बूंदी अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- वही।
- भं.नं. 2/2, व.नं. 81, कटता माल हासिल, वि.सं. 1860-1868 (1803-1811 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 14, व.नं. 61, जमाबंदिया, वि.सं. 1853 (1796 ई.); भं.नं. 16, व.नं. 2, कटता माल हासिल, वि.सं. 1844 (1787 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर; तहसील दर्ई, व.नं. 1, तेरीज, वि.सं. 1814 (1757 ई.); तहसील करवर, व.नं. 1, तेरीज, वि.सं. 1808(1749 ई.); तहसील लाखेरी, व.नं. 1, तेरीज, वि.सं. 1806 (1751 ई.), बूंदी अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 2/2, व.नं. 81, कटता माल हासिल, वि.सं. 1860-1868 (1803-1811 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 16, व.नं. 2, कटता माल हासिल, वि.सं. 1844 (1787 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 1, व.नं. 6, बाजे तालके, वि.सं. 1839, (1782 ई.); भं.नं. 16, व.नं. 2, कटता माल हासिल, वि.सं. 1844 (1787 ई.), कोटा अभिलेख; तहसील गण्डोली, व.नं. 35ए, वि.सं. 1804 (1747 ई.), तहसील लाखेरी, तेरीज, व.नं. 1, वि.सं. 1806 (1749 ई.); तहसील गोठड़ा, व.नं. 1, वि.सं. 1819 (1862 ई.); तहसील करवर, व.नं. 1, तेरीज, वि.सं. 1808(1751 ई.) बूंदी अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 1, व.नं. 2, बाजे तालके, वि.सं. 1839, (1782 ई.) कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- तहसील गण्डोली, व.नं. 35ए, वि.सं. 1804 (1747 ई.) बूंदी अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 16, व.नं. 2, कटता माल हासिल, वि.सं. 1844 (1787 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, बूंदी, पृ. 102।
- वही।
- भं.नं. 17, व.नं. 15, बागात की आय की झाड़े, वि.सं. 1832 (1775 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- वही।
- भं.नं. 20/1, व.नं. 1, वि.सं. 1853 (1796 ई.); भं.नं. 8, व.नं. 22, वि.सं. 1873-74 (1816-17 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- तहसील सिलोर, व.नं. 1, वि.सं. 1805 (1785 ई.), बूंदी अभिलेख; भं.नं. 16, व.नं. 28, लोजी दो बर्की खाता, वि.सं. 1867 (1810 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 16/1, व.नं. 2-5, वि.सं. 1839-1868 (1782-1811 ई.) कोटा अभिलेख; तहसील अभिलेख, वि.सं. 1804-1814 (1747-1757 ई.), बूंदी अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- तहसील अभिलेख, व.नं. 1, 35ए, वि.सं. 1805-1806, 1805, 1814 (1748-1749, 1748, 1743 ई.), बूंदी अभिलेख; भं.नं. 1, व.नं. 5, बाजे तालके, वि.सं. 1839(1782 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- तहसील अभिलेख, व.नं. 1, 35ए, वि.सं. 1805-1806, 1805, 1814, 1, (1748-1749, 1748, 1743 ई.), बूंदी अभिलेख; भं.नं. 1, व.नं. 5, बाजे तालके, वि.सं. 1839(1782 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 14, व.नं. 2, दो बर्की कटता माल हासिल, वि.सं. 1813-1825 (1756-1768 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।
- भं.नं. 1, व.नं. 1, जमा खर्च मौजेवार सीमा माल, वि.सं. 1707 (1650 ई.), कोटा अभिलेख, रा.रा.अ. बीकानेर।

## बून्दी जिले में प्राकृतिक पर्यटन की संभावनाएँ

आशुतोष बिरला

व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय, बून्दी

शिव प्रकाश पांचाल

शोधार्थी, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

शोध श्री



shodhshree@gmail.com

मानव जिस पृथ्वी पर पैदा हुआ है उसे, उसके विविध रूपों, दृश्यों के प्रति मनुष्य की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, तीर्थाटन, व्यापार-विनिमय की प्रवृत्ति से पर्यटन की सोच का विस्तार हुआ। पर्यटन मात्र पर्यटन नहीं है, उसके मूल में कुछ जानने की इच्छा है जो मानव को पर्यटन के लिए प्रेरित व परिचालित करती है। पर्यटन के प्रेरक तत्वों में घर से बाहर की दुनियाँ देखने का आकर्षण, उच्च शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा, बाजार, मेला, सम्मेलन, प्रदर्शनी, स्वास्थ्य लाभ व विश्राम, विशेष रुचियाँ, प्रोत्साहन भ्रमण आदि प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

वर्तमान में पर्यटन जन उद्योग बन गया है। इससे न केवल रोजगार बढ़ता है बल्कि स्वस्थ मनोरंजन, पारस्परिक एकता व सद्भाव को भी बढ़ावा मिलता है। सांस्कृतिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन, सम्मेलन पर्यटन, क्रीड़ा पर्यटन, प्राकृतिक पर्यटन आदि विविध रूपों में पर्यटन ने आज वैश्विक रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है।

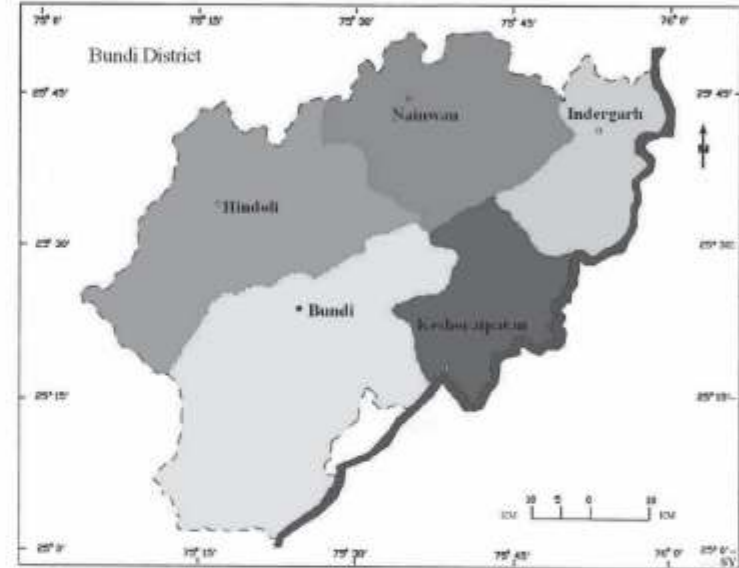
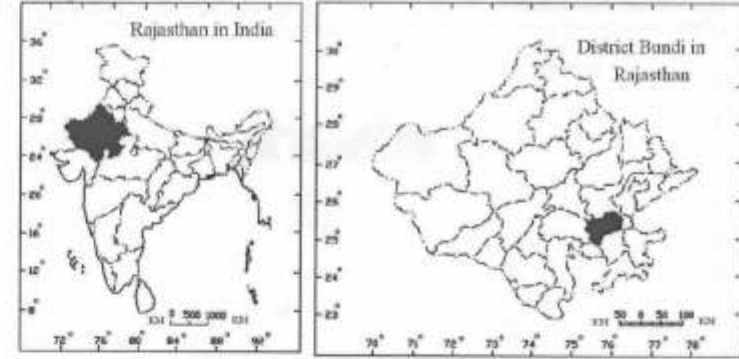
भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है जो अपनी समृद्ध सभ्यता व संस्कृति तथा विशिष्ट प्राकृतिक दृश्यों के लिए विश्व विख्यात है। राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी पठारी भाग पर स्थित बून्दी जिला न केवल ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि विविध प्राकृतिक दृश्यावलियों के लिए भी विख्यात है। वरुणों की विविध चित्ताकर्षक आकृतियों, प्राकृतिक सुन्दरता व भौगोलिक विषय सामग्री से परिपूर्ण बून्दी जिले की इन्हीं विशेषताओं को प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से प्रकट किया है।

उद्देश्य :- प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्यों में

- बून्दी जिले के प्राकृतिक वैभव की जानकारी प्रदान करना।
- भूगोल के विद्यार्थियों के लिए भौतिक भूगोल की विषय सामग्री के उदाहरणों को प्रस्तुत कर विषय को स्पष्ट करना।
- बून्दी जिले को प्रमुख पर्यटन स्थलों में शामिल करना रहा है।

शोध विधि:- शोध अध्ययन में प्रमुख रूप से प्राथमिक स्रोत के रूप में क्षेत्र का भ्रमण कर विभिन्न प्राकृतिक दृश्यावलियों को आधार बनाया है। प्राकृतिक वैभव से परिपूर्ण दृश्यों के जीवन्त प्रदर्शन के लिए विभिन्न छायाचित्र लिये गये हैं। द्वितीयक स्रोत के रूप में पर्यटन सूचना केन्द्र से जानकारी, बून्दी जिले की अधिकारिक वेबसाइट व पर्यटन मन्त्रालय, राजस्थान सरकार से प्राप्त जानकारी का प्रयोग किया है।

### Key Map of Bundi District



अध्ययन क्षेत्र :- राजस्थान के दक्षिण पूर्व में स्थित बून्दी जिला  $24^{\circ}59'11''$  से  $25^{\circ}53'11''$  उत्तरी अक्षांश तथा  $75^{\circ}19'30''$  से  $76^{\circ}19'30''$  पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5850 वर्ग कि.मी. है। उत्तर से दक्षिण इसकी चौड़ाई 104.6 कि.मी. एवं पूर्व से पश्चिम तक इसकी लम्बाई 111 कि.मी. है। जिले के पश्चिम में भीलवाड़ा, उत्तर में टोंक एवं सवाई माधोपुर, दक्षिण-पश्चिम में चित्तौड़गढ़ एवं दक्षिण में कोटा जिला है। दक्षिण में चम्बल नदी कोटा व बून्दी जिले की सीमा बनाती है। मेज, मांगली, घोड़ा पछाड़, चन्द्रभागा, कुराल अन्य प्रमुख नदियाँ हैं।

जिले की जलवायु सामान्यतः दक्षिण-पश्चिमी मानसून को छोड़कर शुष्क रहती है। औसत वार्षिक वर्षा 809.0 मिमि. है। 90: वर्षा जून से सितम्बर के मध्य होती है। शीतकाल में जिले का न्यूनतम तापमान  $2^{\circ}$  सेंटीग्रेड तथा ग्रीष्मकाल में अधिकतम तापमान  $48^{\circ}$  सेंटीग्रेड तक पहुँच जाता है।

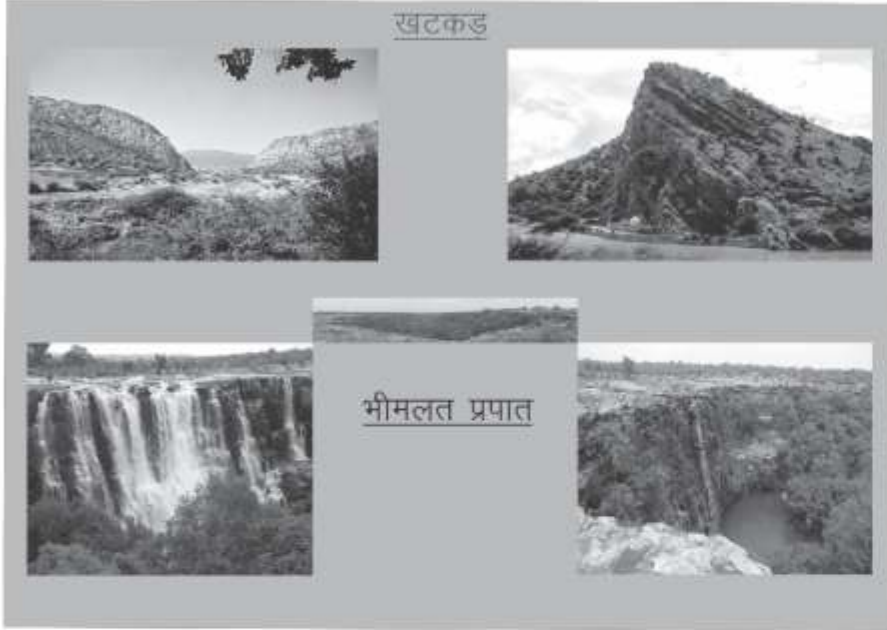
जिले में विन्ध्यांचल व अरावली क्रम की श्रृंखलायें गुजरती हैं। जिन्हें ग्रेट वाउण्ड्री फाल्ट अलग करती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले की जनसंख्या 1113725 रही। साक्षरता दर 62.31: रही। घनत्व 193 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी लिंगानुपात 922 रहा।

जिले के प्रमुख प्राकृतिक पर्यटन स्थलों का विवेचन :-

1. भीमलत जल प्रपात :- बून्दी जिला मुख्यालय से 30 किमी. दूर 60 फीट ऊँचाई से गिरता प्रपात एक प्राकृतिक आकर्षण का केन्द्र है जो जुलाई से दिसम्बर तक यौवन पर रहता है। ऊपरमाल पठारी भाग पर स्थित इस क्षेत्र में परतदार बालूका चट्टानें तथा जल द्वारा निर्मित विभिन्न स्थलाकृतियाँ देखने को

मिलती है। यह क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से भी समृद्ध है।

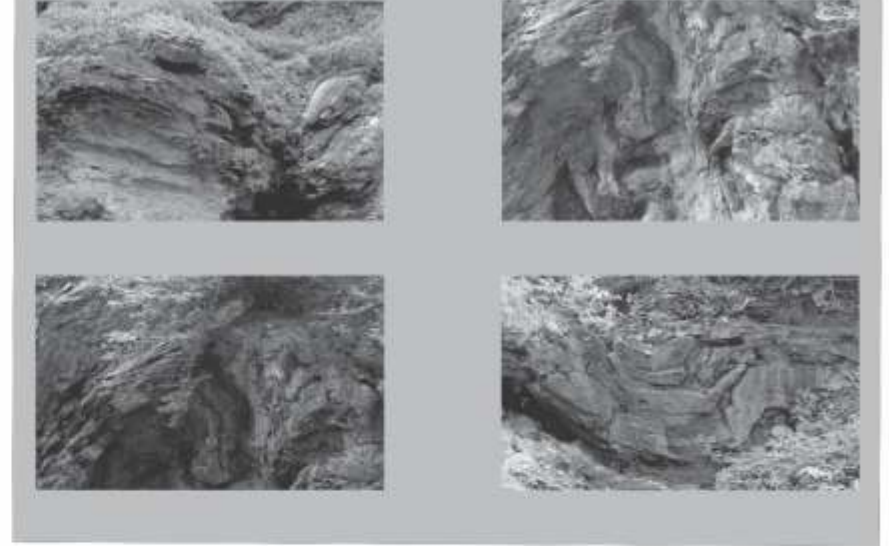
2. **खाटकड़ :-** जिला मुख्यालय से 22 किमी दूर यहाँ मेज नदी द्वारा विन्ध्यन श्रृंखला को काटकर बनाया गया मियाण्डर विशिष्ट है। अत्यधिक दबाव से लम्बवत संचलन के भी उदाहरण यहाँ स्पष्ट हैं।



3. **रामेश्वर जल प्रपात :-** बून्दी जिला मुख्यालय से 16 किमी दूर स्थित यह स्थल प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता से परिपूर्ण है। यहां 50 फीट ऊँचाई से गिरता जल प्रपात नयनाभिराम दृश्य उत्पन्न करता है तो परतदार चशनों की उपस्थिति, चूना निर्मित स्थलाकृतियों में प्राकृतिक गुफा, आश्चुताश्म, निश्चुताश्म, कन्दरा स्तम्भ, वलन के विभिन्न प्रकार इसे भौगोलिक विशिष्टता भी प्रदान करते हैं।



### रामेश्वर में वलन के विभिन्न प्रकार

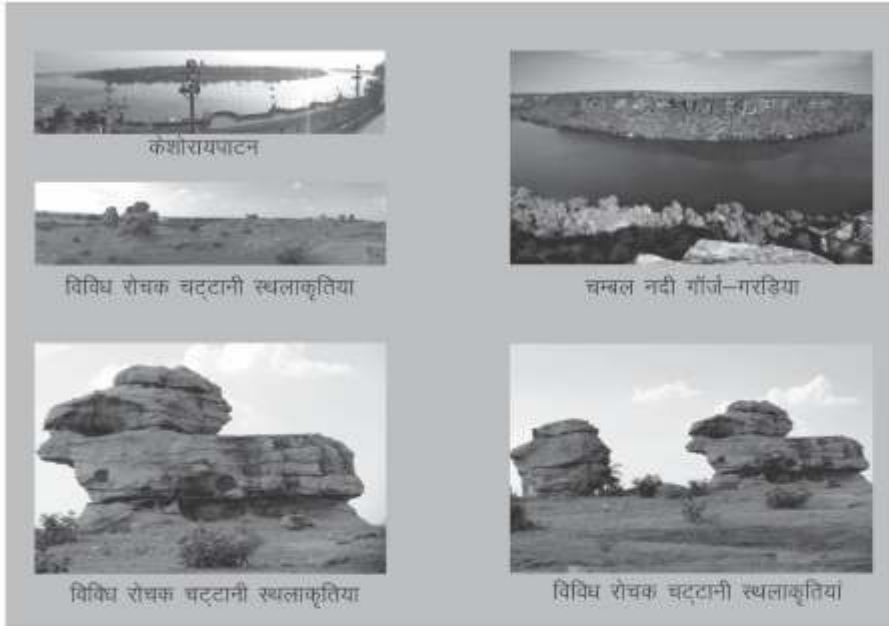


4. **झर महादेव :-** विन्ध्यन श्रृंखला में स्थित यह सुरम्य स्थल बून्दी जिला मुख्यालय से 15 किमी दूर स्थित है। यहाँ विभिन्न युगों में हुये जमाव के उदाहरण मिलते हैं। प्राकृतिक तोरणद्वार, भ्रंश रेखा, चशनों के क्षैतिज स्तर, इसे विशिष्टता प्रदान करते हैं।

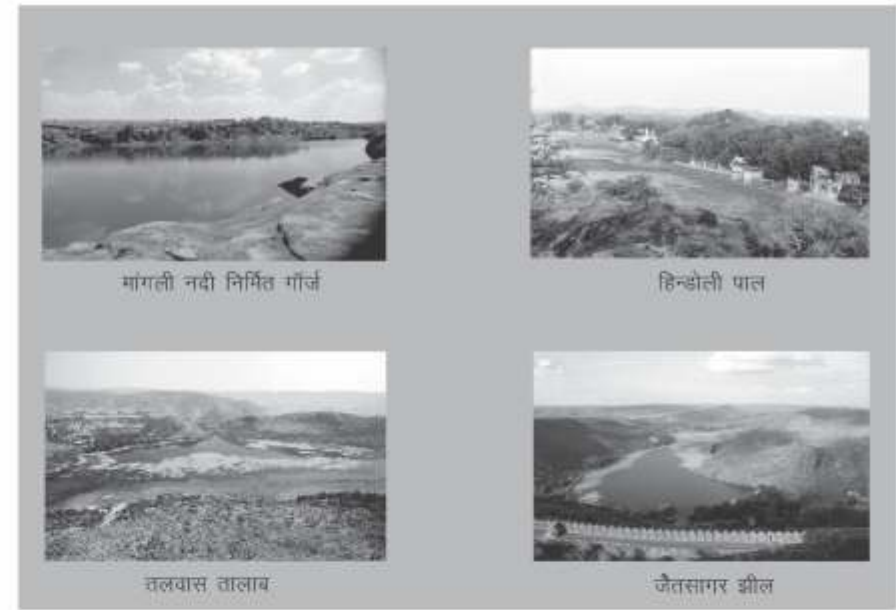
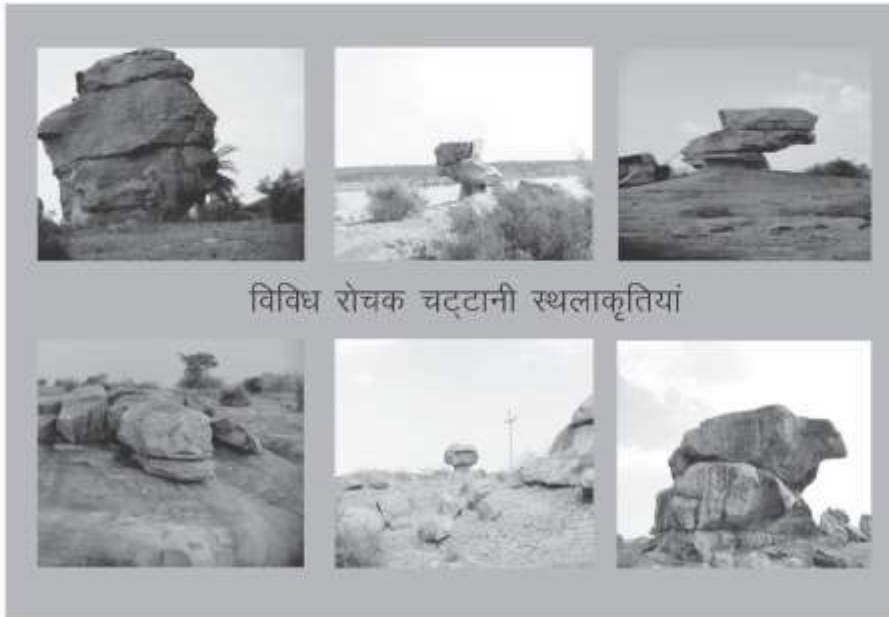


5. **केशोराय पाटन :-** जिला मुख्यालय से 45 किमी दूर स्थित इस तीर्थ नगरी में चम्बल नदी विशाल मियाण्डर बनाती हुई बहती है जो इसे भौगोलिक विशिष्टता प्रदान करती है।
6. **गरहिया :-** कोटा बून्दी सीमा पर स्थित यह क्षेत्र भौगोलिक विशिष्टता के लिए अनुपम है। यहाँ चम्बल नदी विशाल गॉर्ज व मियाण्डर का निर्माण करती हुई बहती है। इसके अतिरिक्त चट्टानों से रिसता हुआ पानी भी दर्शनीय है।
7. **डावी-गरहदा क्षेत्र :-** ऊपरमाल पठार पर स्थित यह क्षेत्र वायु व बहते जल के प्रभाव से निर्मित विभिन्न

चट्टानी स्थलाकृतियों के लिए भौगोलिक विशिष्टता रखता है। यहाँ मांगली नदी द्वारा निर्मित गार्ज, झील सोपान, जल से चट्टानों पर बनी लहरनुमा स्थलाकृतियों, भौगोलिक पहचान देती है।



इसी क्षेत्र में बून्दी-भीलवाड़ा सीमा पर स्थित- पठारी भाग प्राकृतिक शिवलिंग, ईगल रॉक, टोरटाइज रॉक, भू-स्तम्भ, छत्रक शिला, इन्सेलबर्ग आदि विविध भूआकार पर्यटकों के भूगोल के विद्यार्थियों के आकर्षण के केन्द्र हैं।



8. अन्य क्षेत्र :- इनके अतिरिक्त ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट, हिण्डोली में रामसागर तालाब, तलवास तालाब, जैतसागर व नवल सागर झील, रामझर, देवझर, दुर्वासा आदि अनेक प्राकृतिक पर्यटन के केन्द्र हैं जो सभी प्राकृतिक विशिष्टताओं से परिपूर्ण होकर बून्दी जिले की भौगोलिक पहचान को विशिष्टता प्रदान करते हैं।

समस्याएँ:-

- बून्दी जिले के यह प्राकृतिक स्थल पर्यटकों की पहुँच से दूर है।
- पर्यटन गाइडों को इन स्थलों की पर्याप्त भौगोलिक जानकारी न होने से वे पर्यटकों की जिज्ञासाओं को शान्त नहीं कर पाते हैं।
- इन सुरम्य प्राकृतिक स्थलों तक पहुँचने के लिए आवागमन के साधनों का अभाव है तथा सड़क मार्ग दयनीय अवस्थाओं में है।
- इन प्राकृतिक पर्यटन स्थलों का पर्याप्त प्रचार-प्रसार नहीं हुआ है।
- इन स्थलों पर अनाधिकृत निर्माण कार्यों के होने से ये अपनी प्राकृतिक सुन्दरता खोने लगे हैं।

सुझाव:-

- इन विभिन्न पर्यटक स्थलों के मध्य सुगम सड़क मार्ग व आवागमन का विकास किया जाये।
- पर्यटन विभाग द्वारा गाइडों को पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाये।
- इन स्थलों पर जनसुविधायें स्थापित की जायें।
- विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं को परिचयात्मक भौगोलिक भ्रमण के लिए आमंत्रित किया जाये।
- स्थानीय जनता में पर्यटन स्थलों के रख-रखाव, साफ-सफाई व संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा की जाये।
- जिला पर्यटन मानचित्र बनाकर इन स्थलों की प्राकृतिक व भौगोलिक विशिष्टताओं को स्पष्ट कर इनका प्रचार-प्रसार किया जाये जिससे पर्यटन मानचित्र पर बून्दी को एक अलग पहचान मिल सके।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1.	Ranjit Taneja	-	Travel Geography, Alpha Publication, New Delhi.
2.	एस. सी. नंसल	-	पर्यटन व यात्रा प्रबन्धन, मीरा प्रकाशन, सहारनपुर।
3.	जगवीर सिंह	-	पर्यटन भूगोल, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
4.	विमल कुमार कपूर	-	पर्यटन भूगोल, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
5.	ए.के. रैना, किशोर सिंह	-	राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध : सिद्धान्त व व्यवहार अभिनव प्रकाशन, अजमेर।
6.	संजय कुमार शर्मा	-	पर्यटन में भूगोल, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
7.	डॉ. राजेश कुमार व्यास	-	पर्यटन उद्भव एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

## पंचायती राज : अवधारणात्मक विश्लेषण

आशीष कुमार

व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय,

प्रतापगढ़

शोध श्री



shodhshree@gmail.com

पंचायत मानव की आदि बुनियादी संस्थाओं में से एक है। आदिकाल में मानव अलग-अलग कुनबों में रहने लगा तब उन कुनबों को ग्राम की संज्ञा दी गई। कुनबों में व्यवस्था एवं विकास के लिए 'पंचायत' नामक संस्था स्थापित की जाती थी। पंचायत शब्द एक विस्तृत एवं व्यापक अर्थ लिए हुए जिसकी व्याख्या करना भी आवश्यक है।

पंचायत शब्द पंच+आयत से बना है। पंच शब्द संख्या वाचक है। पंचों से पाँच पंच जो कि व्यापक अर्थ में ग्रामीण प्रतिनिधित्व का बोध कराते हैं। आयत शब्द का अर्थ है विस्तार। सामूहिक रूप से ग्रामों के विकास का विस्तार करना ही पंचायत का मूल मंत्र है। पंचों का व्यक्तित्व वस्तुतः पंच तत्त्वों से मिलकर बनाते हैं-

- धरती:- जिसकी प्रकृति रूक्ष या कठिन होती है परन्तु विशिष्ट अर्थ मातृ वत्सलता और क्षमाशीलता है। धरती को सर्व सहामाता कहा गया है। अतः पंचों से सहनशीलता की आशा की जाती है।
- अग्नि :- यह किसी भी कच्चे पदार्थ को अपने समान ही प्रज्वलित कर देती है। इस दृष्टि से पंचगण गांव के लोगों में शक्ति के उत्साह एवं तेज का संचार करते हैं।
- जल :- यह तरल एवं ठण्डा होता है। साथ ही उसमें अनेक तत्वों को जोड़ने की क्षमता भी होती है। उसी तरह से पंचगण भी शीतल प्रभाव से गांव में एकता और सद्भाव बढ़ाने में कारगर सिद्ध होने चाहिए।
- वायु :- इस तत्व के बिना धरती पर जीवन असम्भव है। जिस प्रकार वायु दुर्गन्ध को मिटाकर स्वच्छ वातावरण बनाने में योगदान देती है उसी प्रकार पंच भी एक पवित्र वातावरण बनाते हैं।
- आकाश :- आकाश तत्व खाली जगह भरकर सृष्टि को समग्र छाया प्रदान करता है। अपने इस गुण का विस्तार पंचगण पूरे ग्राम पर आकाश की तरह छा कर कल्याणकर्ता के रूप में कार्य करते हैं।

इस तरह पंच शब्द धीरे-धीरे मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट स्थान प्राप्त करता गया और मानव के साथ नितांत रूप से धुलता मिलता गया।

धार्मिक क्षेत्र में पंच शब्द की महत्ता:- लौकिक एवं पारलौकिक जीवन को सफल बनाने के लिए हमारे ऋषि-मुनियों ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए पांच यज्ञ करने आवश्यक बताया है। ये पंच महायज्ञ के नाम से जाने जाते हैं- ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, भूत यज्ञ एवं नृयज्ञ। हिन्दू धर्म में गाय को माता माना गया है। उसकी पांच वस्तुओं को 'पंचगव्य' कहा जाता है। दूध, दही, घृत, गोबर और गौमूत्र। इन पंच गव्यों का प्रयोग करके अनेक धार्मिक कार्य सम्पन्न किये जाते हैं।

भारत वर्ष में प्रत्येक वस्तु को देवता मानकर पूजा जाता है लेकिन रक्षा के लिए पांच देवताओं को प्रमुख स्थान प्राप्त है-

“सदा भवानी दाहिने गौरी पुत्र गणेश।

पाँच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।।

भारतीय समाज में पांच कन्याएं अति प्रतिष्ठित मानी जाती हैं तथा लोग उनका नाम लेना पुण्य कार्य मानते हैं जिनके नाम हैं अहिल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी।

सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषदों के अध्ययन से पता चलता है कि उत्तर वैदिक काल में भी वैदिक काल के समान लोकतांत्रिक व्यवस्था के रूप में सभा एवं समिति जैसी संस्थाएँ मौजूद थीं। वैदिक काल में तो ये संस्थाएँ न्यायिक प्रकृति के कार्यों के साथ-साथ लोककल्याणकारी कार्यों को भी करती थीं, लेकिन उत्तर वैदिक काल में इन संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य न्यायिक कार्यों को करना था। इस काल में "ग्राम्यावादिन", मध्यमशी, प्रसेन, अभिप्रसेन आदि शब्दों का अर्थ 'पंच' ही प्रतीत होता है जो कि झगड़ों का निपटारा करते थे।

मनुस्मृति में मानव धर्मशास्त्र की या मनुस्मृति काल की शासन व्यवस्था का वर्णन पाया जाता है। इस काल में भी प्राचीन पंचायत या सभा को उच्च स्तरीय विचार विमर्श करने वाली संस्था माना जाता था। यह संस्था

मुख्य रूप से न्यायिक कार्य करती थी। मनु स्मृति के श्लोकों में यह लिखा गया है कि पंच या सभा के सदस्यों को न्यायानुकूल बात कहनी चाहिए तथा पक्षपात रहित निर्णय लेने चाहिए।

तस्मात्: सम्यं: सभावंगत्वा राग द्वेष विवर्जितः।  
वचस्तेयोविदू बुराइयथा न नरकं पतेता।

अर्थात् पंचों को द्वेष, ईर्ष्या आदि का त्याग करके न्याय करना चाहिए, जिससे वह पाप का भागीदारी न हो और नरक का अधिकारी न बने।

महाभारत काल में सामाजिक संगठन की मजबूती के लिए श्रेणियों को बनाने की प्रथा प्रचलन में थी। इन श्रेणियों में लगे लोग इससे संबंधित मामलों का निपटारा करते थे। महाभारत काल में इस बात का उल्लेख मिलता है कि जनपद के प्रत्येक ग्राम में शूरवीर, बुद्धिमान और कार्य कुशल पांच पंच मिलकर ग्राम की व्यवस्था करते थे।

जैन और बौद्ध काल में गणतंत्रात्मक शासन विद्यमान था अर्थात् शासन व्यवस्था को विभिन्न इकाईयों में विभक्त किया गया। प्रत्येक इकाई में जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन किया जाता था जो कि पंचायत व्यवस्था के समान ही थी।

तुलसीदास ने रामचरित मानस के अयोध्या काण्ड में पंचों के महत्व को परिलक्षित करते हुए लिखा है-

जौ पे पंच मोर भाल जानी,  
आयसु आसिस देह सुबानी

अर्थात् पंच किसी भी विषय पर बड़ी गम्भीरतापूर्वक सोच समझकर अपना निर्णय देते थे। राजा के लिए पंचों का मत महत्वपूर्ण होता था।

रामचरितमानस में तुलसीदास ने राजा दशरथ के मुख से पंक्तियाँ कहलाकर पंचों के महत्व को दर्शाया है-

“जो पंचहि मत लागै नीका  
धरहु हरणि हिय रामहि टीका”

धरातल पर लोकतंत्र की यह अवधारणा केवल लोकतंत्र का 'मुखदर्शन' मात्र नहीं है बल्कि भारत वर्ष में लोकतंत्र के गहराई से बीजारोपण का प्रतीक है।

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. राय, बी.सी. : भारत में पंचायती राज का इतिहास, ग्राम विकास प्रकाशन, लखनऊ, 1997, पृ. 9
2. वही, पृ. 9
3. उपर्युक्त, पृ. 10
4. शर्मा, बी.एम. : लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण में पंचायतीराज की भूमिका, योजना, जून 1996, पृ. 18
5. उपर्युक्त, पृ. 16
6. सिन्हा, नवीन चन्द्र : भारत में पंचायतीराज का इतिहास, ग्राम विकास प्रकाशन, लखनऊ, पृ. 16-17
7. तुलसीदास : रामचरितमानस, 'अयोध्याकाण्ड', पृ. 475
8. गांधी, एम.के. : ग्राम स्वराज, नवजीवन प्रकाशन हाउस, अहमदाबाद, 1962

## Antimutagenic effects of vitamin-E against diethyl sulphate induced toxicity in *Trigonella foenum-graecum* L.

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

Manoj Kumar Rawat

P.C. Bhati

Rajendra Prasad Meena

Lecturer, Government College,  
Bundi

India today is one of the first ten industrialized countries of the world. Today we have a good industrial infrastructure in core industries like metals, chemicals, fertilizers, petroleum, food etc. These industries discharge several toxic chemicals (carcinogens and mutagens) in the environment which harmfully affect the life and create a potential health hazard in many ways. One of best ways to minimize the effect of mutagens and carcinogens is to identify the antimutagens (substances which suppress or inhibit the process of mutagenesis by acting directly on the mechanism of the cell) and desmutagens (substances which somehow destroy or inactivate, partially or fully the mutagen, thereby affecting less population) in our diet and to increase their use (Sumnath and Chowdary, 2010).

Against this background, in the present study antimutagenicity of vitamin-E has been determined against mutagenic activity of acidic solution of diethyl sulphate (DES; pH 7.41) in *T. foenum-graecum* using toxicity to seed germination and seedling growth as the parametres.

**Materials And Methods:-** Dry pure line viable seeds of *T. foenum-graecum* were surface sterilized with 0.1% ( w/v) mercuric chloride (HgCl<sub>2</sub>) solution for 3 min. The seeds were thoroughly washed with sterilized distilled water so as to remove the traces of mercuric chloride and were pre-soaked in distilled water for 4 h at 25±1°C.

The experiments were designed to have the following three sets-

(1) Control or Untreated-In this set, some of the pre-soaked seeds were kept in distilled water for 20 h at 25±1°C.

(2) Treated with diethyl sulphate (DES; pH 7.41) alone- In this set, some of the pre-soaked seeds were treated with freshly prepared four different aqueous concentrations of diethyl sulphate (0.50%, 1.00%, 2.00% and 2.50%) for a period of 20 h at 25±1°C.

(3) Post-treated with vitamin-E - In this set, some of the treated seeds (seeds

treated with each concentration level of diethyl sulphate) were post treated with freshly prepared three different alcoholic concentrations of vitamin-E (0.25%, 0.50%, and 1.00%) separately, for a period of 20 h at 25±1°C.

For each set, 30 seeds were used and were replicated thrice. Seeds of all the experimental sets were transferred to the sterilized petriplates containing moist filter papers. Observations on seed germination, seedling growth and abnormal seedlings were made regularly for a continuous period of 10 days.

**Results And Discussion:-** It is evident from the data depicted in Table-1 that the treatment of *T. foenum-graecum* seeds with four different concentrations (0.50%, 1.00%, 2.00% and 2.50%) of diethyl sulphate led to varying degrees of reduction in germination percentage and formation of abnormal seedlings. Maximum damage was caused in 2.50% DES concentration where no germination was observed. Approximately 50% lethality in seed germination was recorded in the 1.00% DES treated series. Maximum number of abnormal seedlings as well as reduction in root and shoot length was observed in 2.00% DES treated series. Further, the values of Karl Pearson's coefficient of correlation (r) depicted in Table-1, clearly indicate that decreases in the seed germination, increase in the formation of abnormal seedlings and decline root and shoot length were highly dose dependent.

Diethyl sulphate mutagenized seeds, post-treated with vitamin-E, led to the improvements in seed germination, formation of normal seedlings and decline in root/shoot injury. Seeds treated with only 2.50% concentration of diethyl sulphate did not show any germination but surprisingly, after post-treatment with vitamin-E, showed germination upto a maximum of 6% as well as formation of normal seedlings upto a maximum of 9%. Maximum promotion in seed germination (99%) was observed in 0.50% DES + 0.50% vitamin-E treated series. However, minimum recovery in the seed germination (6%) was observed in 2.50% DES+0.25% vitamin-E treated series. The calculated 'r' at a significance level p=0.05 for the parameters depicted in Table-1, with some exceptions, was comparable with the tabulated 'r' values for 3 or 2 degrees of freedom (p=0.05), hence indicating a very strong correlation between the used concentrations of diethyl sulphate (mutagen) or vitamin-E and their effects on the seed germination and growth of seedlings.

In the past antimutagenic potentiality of various compounds has been tested in prokaryotic system by measuring the potential of various mutagens before and after antimutagenic treatments (Gichner et al. 1987, kim et al. 1992, Yoshikawa et al. 1996, Edenharder et al. 1999, Horn and Vargas 2003, Smith et al. 2004 Tangvarasittichai et al. 2005, Ghazali et al. 2011) which also support present findings.

### References:-

1. Edenharder R Worf-Wandelburg A, Decker M, Platt KL. 1999 Antimutagenic effects and possible mechanisms of action of vitamins and related compounds against genotoxic heterocyclic amines from cooked food. *Mutation Research*. 444(1):235-48.
2. Ghazali A. R, Abdullah R., Ramli N., Rajab N.F., Ahmad-Kamal M.S. and Yahya N.A. 2011. Mutagenic and antimutagenic activities of *Mitragyna speciosa* Korth extract using Ames test. *Journal of Medicinal Plants Research Vol. 5(8): 1345-1348*.
3. Gichner T., Pospil F., Veleminsky J., Volkeova V. and Volke J. 1987. Two types of antimutagenic effects of gallic and tannic acids towards N-nitroso-compounds-induced mutagenicity in the Ames Salmonella Assay. *Folia Microbiologica* 32 (1): 55-62.
4. Horn R.C., and Vargas V.M.F. 2003. Antimutagenic activity of extracts of natural substances in the Salmonella/microsome assay. *Journal of Mutagenesis* 18 (2): 113-118.
5. Kim, J.O., Kim Y.S., Lee J.H., Kim M.N., Rhee S.H., Moon S.H. and Park K.Y. 1992. Antimutagenic effects of the major compounds identified from mugwort (*Artemisia asiatica nakai*) leaves. *Journal of the Korean Society of Food and Nutrition*. 21 (3):308-313.
6. Smith, S.H., Tate P.L., Huang G., Magee J.B., Meepagala K.M., Wedge D.E. and Larcom L.L. 2004. Antimutagenic activity of berry extracts. *Journal of Medicinal food* 7(4): 450-455.
7. Sumanth M. and Chowdary G. N. 2010. Antimutagenic activity of aqueous extracts of *Momordica charantia*. *International Journal for Biotechnology and Molecular Biology* 1(4): 42-46.
8. Tangvarasittichai S., Sriprang N., Harnroongroj T. and Changbumrung S. 2005. Antimutagenic activity of *Sesbania javanica* miq. Flower DMSO extract and its major flavonoid glycoside. *Southeast Asian Journal of Tropical Medicine and Public Health* 36(6): 1543-1551.
9. Yoshikawa K., Inagaki K., Terashita T., Shishiyama J., Kuo S. and Shankel D.M. 1996. Antimutagenic activity of extracts from Japanese eggplant. *Mutation Research* 371 (1-2):65-71.

**Table 1:** Effect of diethyl sulphate (DES; pH 7.41) alone and in combination (post-treatment) with itamin-E on seed germination and seedlings growth in *Trigonella foenum-graecum* L.

DES concentrations (%)	Germination (%)	Abnormal seedlings (%)	Shoot length (cm) Mean±SE	Root length(cm) Mean±SE
Control	100	-	4.5±0.52	3.6±0.68
0.50	80	58	3.0±0.65	1.5±0.13
1.00	49	79	2.1±0.59	0.9±0.07
2.00	10	85	0.5±0.029	0.4±0.01
2.50	-	-	-	-
'r' Value	-0.9916*	0.0669	-0.9867*	0.8923*

DES+ vitamin-E (Concentrations in %)	Germination (%)	Abnormal seedlings (%)	Shoot length (cm) Mean±SE	Root length(cm) Mean±SE
0.50+ No vitamin-E	80	58	3.0±0.65	1.5±0.13
0.50+0.25	91	45	4.0±0.08	2.3±0.21
0.50+0.50	99	42	4.9±0.71	3.0±0.11
0.50+1.00	88	50	3.9±0.67	2.5±0.12
'r' Value	0.3604	-0.3417	0.4390	0.6330*
1.00+ No vitamin-E	49	79	2.1±0.59	0.9±0.07
1.00+0.25	72	65	2.9±0.17	1.5±0.29
1.00+0.50	86	52	3.5±0.61	2.0±0.51
1.00+1.00	75	68	3.2±0.63	2.1±0.78
'r' Value	0.6342*	-0.3693	0.7210*	0.8960*
2.00+ No vitamin-E	10	85	0.5±0.09	0.4±0.01
2.00+0.25	20	70	1.9±0.08	0.8±0.01
2.00+0.50	17	75	0.8±0.09	0.9±0.05
2.00+1.00	11	72	0.8±0.01	0.8±0.08
'r' Value	-0.1423	-0.6000	-0.1050	0.6380*
2.50+ No vitamin-E	-	-	-	-
2.50+0.25	06	91	0.6±0.08	0.4±0.05
2.50+0.50	-	-	-	-
2.50+1.00	-	-	-	-
'r' Value	-0.2927	-0.2920	-0.2928	-0.2921

Tabulated 'r' for 3 d.f. at p=0.05 is 0.878  
 Tabulated 'r' for 4 d.f. at p=0.05 is 0.811  
 Reported values are mean ±SE of 3 replicates  
 \* Significant  
 r= Karl Pearson's coefficient of correlation.

## Diamond Harbour is Tourist Spot Its natural resources of "Hooghly River"



**Pradip Giri**  
 Research Scholar, Calcutta University, Calcutta (West Bengal)

In the wondrous state of West Bengal in the district of South 24 Parganas lies the spectacular spot of Diamond Harbour at the mouth of the river Hoogly. The holiday destination of Diamond Harbour is at a distance of Forty – Eight kilometers from the Calcutta in the South Direction. The Diamond Harbour was named so by the British of rather renamed as Diamond Harbour by them was earlier the spot known as Hajipur. The Diamond Harbour is a turning point for the distributaries of the Holy Ganges. The river area Hoogly turns towards the South into the Bay of Bengal. Owing to this the river area gets deeper and wider. Thus the big ships comfortably dock at the Diamond Harbour.

### Physical Environment:-

- The Project site is located on the eastern bank of river Hoogly. Natural and manmade embankment is Present on the eastern bank. The natural slope of the area varying from 1-3.5 m above m.s./L.
- Diamond Harbour is situated at the southern Part of the Ganges Dell on the bank of River Hoogly. The area is a Diamond Harbour.
- Tourist spot its natural resources river of Hoogly.
- As per the seismic hazard map prepared in 2006, 24 parganas (S) lies in Seismic Zone IV. Tube wells form the major source of potable water. The Sweet water lies in an aquifer at an average depth of 100-1200ft, below m.s.1 potable water is also supplied by the local municipality. River, Ponds and canals form the major Sources of Surface water.

**Climate Quality:-** The long monsoon season has a relatively high degree of humidity especially from June to September. The relative humidity was above 50% but less than 85% during the study period. The visibility was approx 95-96m. During the study period the dominant direction of wind flow was from North and North – Westerly. The dominant wind speed is 0.5 – 2.1 m/s calms were 48.47%. Diamond Harbour municipality is located on the great Gangatic delta. Its climate is very much influenced by the sea. The municipality has a tropical savannah type of climate, having three season summer, monsoon and winter. The summer is hot and humid and continues from April to June. Summer is dominated by strong south westerly monsoon winds. Monsoon arrives in mid Jun and Stays up to September. The annual mean temperature is 26.80C. The maximum temperature after exceeds 400C. The temperature does not fall below 100C. Maximum rainfall occurs during the monsoon in August (306mm) and the average annual total is 1,580mm.

**Air Quality:-** All the parameters (RPM, SPM, So<sub>2</sub>, Nox, He, Co) monitored over three month (Dec-Feb) at Ten Location were within the permissible limits of standards for residential air as per national Ambient Air Quality standards. The SPM level varied within 112-214 µg/m<sup>3</sup>. The RPM Level varied from 46-188µg/m<sup>3</sup>. The So<sub>2</sub> value ranged from 8.0 to 12.8µg/m<sup>3</sup>. The Nox level varied from 18.6-30.7µg/m<sup>3</sup>. Hydrocarbons were found below detection limit for most of the time with the maximum value of 386µg/m<sup>3</sup>.

**Water Quality:-** The BOD is 5.4 mg / L and 7.2 mg / L In high tide and low tide respectively. Total hardness is 1890 mg / L and 336 mg / L respectively. The salinity is 10,726 and 1,267 mg / L at high and low tide respectively. The facial coli- form is 460 and 5901 mpn / 100 ml at high and low tide respectively. The total coli-form is 2 x 10<sup>2</sup> ML and 3 x 10<sup>2</sup> MPN / 100ml in high tide and low tide respectively.

**Surface Water Bodies:-** The Dissolved Oxygen varies from 5.1 mg / L to 6.4 mg / L. The BOD ranges from 3.6 mg/l to 6.1 mg / L. The turbidity varies from 3.3mg/L to 140 mg/L in the different water bodies of the study area. The total hardness ranges from 79.2 mg/L to 158.4 mg/L. The chloride value ranges from 30.9 mg/l to 150.4 mg/l . The value of iron varies from 0.16 mg/l to 6.81 mg/L in the different water bodies of the Project area. The total coli -form count varies from 5 x 10<sup>4</sup> to 1.6 x 10<sup>5</sup>. The facial coli-form count ranges from 5 x 10<sup>3</sup> MPN / 100 ml to 9 x10<sup>4</sup> MPN / 100 ml in the different water bodies of the Project area.

**Ground Water:-** The Pti value ranges from 7.47 to 7.70 from to the different sampling locations of ground water. The Turbidity is below 1 NTU is both The sites. The Total hardness ranges from 168.3 to 207.9 mg/L The conductivity varies from 958 to 1258 umho/cm. The total coli-form Count is less than 11 MPN / 100ml and the facial Count coli-form was absent.

**Soil Quality:-** The Soil present at Diamond Harbour and its immediate vicinity is very deep poorly drained, fine loamy soils occurring on level to nearly upper delta plain with loamy Surface. The Soil is subjected to Severe flooding associated with very deep, poorly drained, fine loamy Soils. It is classified as fine, loamy aerie haplaquents.

**River Sediment:-** The sediment color of the Hoogly River bed is grey. The PH ranges from 7.98– 8.09 . The Conductivity of the sediment ranges from 2.423 to 2.701 ms/cm . The level of as in the Sediment ranges from 0.11 to 0.28 mg / Kg.

**Methodology:-** Primary data collection from municipality-----Hotel survey----- Analysis the existing situation of Tourism-----Focus Group discussion with Hotel association-----Situation analysis and problem identification and Probable proposal for supporting tourism .

### Purpose Of This Research Paper:-

- Diamond Harbour is a wonder full place in West Bengal. This area lies in the district of South 24 Parganas at the mouth of river Hoogly.
- The main reason behind the choosing of this area as my Research Paper topic, is that, Diamond Harbour is a area with its natural resources river Hoogly, this area have a lots of potential for Tourism, but unfortunately very little have been done.
- Being an urban Planner of Diamond Harbour Municipality. I want to explore the natural resources and the probable potential of this area and develop this area is one of the important tourist spot of West Bengal to the extent possible.

**Tourists Attraction Diamont Harbour:-** While at the Diamond Harbour tourist must check out the natural beauty of the place. Besides the nature at its there are the remains of a Portuguese fort at Diamond Harbour. There are few more places of Diamond Harbour like, Sultanpur jetty ghat , 32 kopat. Diamond Harbour is indeed a gorgeous gateway of Gangasagar. There are almost frequent ferry services that work between the Diamond Harbour ferry ghat and Kukrahati (which is the connecting point of Holdia) throughout the day. Within the vicinity of the Diamond Harbour the ruined fort and the old lighthouse can be explored. The remains of the ancient fort have a story of their own. The Diamond Harbour used to be the stronghold of Portuguese pirates; Raichowk is one of the nice holiday destinations for the people.

### Tourist Spot in Diamond Harbour Municipality (2000-2001)

Name of Tourist spot	Location in wards
1. Kallar Maths	10 No Ward
2. Picnic Garden	10 No Ward
3. Sultan pur jetty ghat	10 No Ward
4. Nsogandra bazaar	09 No Ward
5. Ice Industry	09 No Ward
6. Port	10 No Ward
7. Brick Industry	16 No Ward
8. Fish Collection	14 No Ward
9. No of 4 park (Hooghly River side)	9,10, No Ward

## Diamond Harbour Tourists spot depending of natural resources

Name of tourists Spot	Natural resource
1. Kallar math	Hooghly river side
2. Picnic Garden	Hooghly river side's land
3. Rabindra Kanan	Hooghly river side
4. Sultan pur Jetty ghat	In Hooghly river
5. Chotonodir par	Location of Hooghly river Side
6. Nogandra bazaar (Fish market) (Fish store No of 100)	Dipanding of Hooghly river fish
7. Port	In Hooghly river
8. Water splayed (pampiry)	Total water in Hooghly river
9. Ice Industry	Use of Hooghly river water
10. Brick industry (26)	Use of soil in Hooghly river.
11. Fish Collection center (Jelepura)	In Hooghly river
12. No of 14 <sup>th</sup> parking Place	Hooghly river side

### Problems Of Tourists Area (D.H):-

- Not proper utilization of the natural resources "Hooghly River".
- Not proper infrastructure for developing this area as a tourist spot.
- Picnic ground beautification and need to provide more public facility.
- River side erosion protraction near the "Kallar maths".
- No Govt. support for promoting tourism.
- Absence of any Tourism office.
- Not so much active participation from local administration.
- No fix local transport ferry chat.
- Kota' system in the Govt. Hotels.
- Drainage problem in D.H Tourist area.
- Pollution due to fish market in ward No-9 where the hottest are concentrated.

### Proposals For Supporting Torism:-

- Beautification of the township by selling up fountains and status, importing river bank and landscaping.
- Development of children amusement park at Rabindra Kumar along Hooghly river.
- Development of Transport System in Tourism area.
- Strengthening the Hotel Association to provide a healthy environment for the Tourist.
- Maintenance of heritage Structures fort made by the Portuguese near river Side.
- Development of Municipal open air auditorium for performing arts River side beautification.
- Selling up more sitting arrangement of River Side.
- Conducting Handicrafts air specially in Winter.
- Construction of Tourism sports on River Side.
- Construction of Tourism sports on River Side.
- Construction of Guest House of ward No. – 13.

**Summary Of Findings:-** In this Research Paper I have discussed the Diamond Harbour is Tourist spot its national resources of " Hooghly River" Diamond Harbour is a small city Situated at the Paint where river Ganges turns South, Just before reaching the Sea. The city as such stands on the Delta region of the city, but till the date this area is neglected from the Government eye and the local administration also. Total No of 16 natural beautiful Tourist place in Diamond Harbour Municipality area, all spot located of "Hooghly River" Side and main beauty for Hooghly River. This Tourist area needs to be nature and try to extract The Potential Probabilities. So, Hooghly River is main natural resources of Diamond Harbour tourist spot. In this Project try to portray little Probable Suggestion through which this area can develop as one of the beautiful Tourist spot in West Bengal.

### Reference:-

1. Chakraborty R. 1993 Brackish Water Prawn Farming, D.H, W.B. Brackish Water Prawn Farmer's Dev. Corp, India
2. Das, M. 2002 an appraisal of Aquatic Resources for Sustainable Development in Sundarban. PHD. Thesis. Wof Calcutta.
3. Biosphere. Geography of life. S. Thomas. K. Siddartha
4. A. Mitra, A.T. Paria, J.G. Chatterjee at all. 2004 West Bengal Environment & Ecology
5. West Bengal. Bay of Bengal Programmed for Fisheries Development P.P.12 Madras, India
6. Diamond Harbour Municipality office. Dep. of. Tourists
7. Transport office. South 24 Parganas. West Bengal

8. *Diamond Harbour Municipality. Ferry. Transport office. South 24 parganas. West Bengal.*
9. *India census. Report. Web.*
10. *Tourist's office. West Bengal. India.*
11. *Focuses group. Hotel Association. Diamond Harbour.*
12. *Sundarbans. Historical Background. 2000. Dr. S.K. Sing.*

## Geomorphological Studies of Bhaunak River Basin, Maharashtra

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

### R.J.Borse

Associate Professor

S.S.V.P.S's L.K.Dr.P.R.Ghogrey Science College, Dhule (Maharashtra)

### V.M.Agone

Research Fellow

S.S.V.P.S's L.K.Dr.P.R.Ghogrey Science College, Dhule (Maharashtra)

**B**haunak basin forms sub-basin of river Tapi and is located on the northern bank of river Tapi. It is a small basin occupies a drainage area of 240.5 sq.km. It lies between 75°30'2" to 75°45'2"E longitudes and 21°5' to 21°25'2"N latitudes covering part of Jalgaon district of Maharashtra (Fig.1). The river rises in Satpura mountains and flows in southern direction upto village Siragad and then after flows westerly direction and joins to river Tapi. The catchment area is occupied by hard rock formation and alluvial formation. Formerly this area was with excellent ground water potential but excessive withdrawal of ground water for irrigation has depleted the rich groundwater aquifer. An attempt has been made in the present paper to study geomorphological aspect of the basin to know the hydrological conditions.

**Geomorphology:-** The geomorphology of any river basin includes the systematic investigation of landforms, their origin, processes and the underlined structure. The geomorphological study of the basin also helps to know the geohydrological characteristics of the basin like surface runoff, porosity and permeability of rocks. Which is very important for locating ground water potential zones of the basin.

**Quality Geomorphology:-** The Bhaunak basin is rectangular basin. It is bounded by Satpura hill ranges in the north and river Tapi to the south. About 20 percent area of this basin is hilly with steep slopes. The elevation ranges between 10.44 m to 157 m. The basin has a general slope from north to south which is around 37 m/km. The ravines have formed along the bank of river Tapi due to higher content of clay in flood plain deposits.

**Quantitative Geomorphology:-** It is also important to study quantitative aspects of the basin for evaluation of geohydrological potentials. The measurement of size and form also gives information about different properties of soils.

**Methodology:-** The morphometric analysis of Bhaunak river is calculated with the help of Hortons (1932) methodology. Survey of India topographical maps 46, 46 on (1:50,000 scale) are used for this purpose. Slope analysis is done by using Wentworth's method of determining average slope of the basin. The geomorphological parameters of Bhaunak basin are discussed according to (i) Linear aspects, (ii) Areal aspects, (iii) Relief aspects.

**Linear Aspects:-** The length of stream channels of a given order, drainage density, stream order, numbers, bifurcation ratio, length of overland flow etc. are studied under linear aspects of Bhaunak river.

**Stream Order:-** Stream ordering is done according to the methods of Horton (1945) and Strahler (1964). This is useful in determining the basin dimension, channel size and stream discharge. Method of 'stream ordering proposed by Strahler has been followed. Bhaunak basin is a 6th order stream and indicates geometrical features following the Horton's law of stream development. The data regarding morphometric analysis of the basin is tabulated in Table-1. Which indicates that the present stream follows.

**Table-1**

**Morphometric Parameters of Bhaunak River Basin**

Stream order	No. of Streams	Stream length in Km.	Basin area in sq.km.	Bifurcation Ratio	Length Ratio
I	Nu	Lu		Nu/Nu+1	Lu+1/Lu
I	316	270.54	136.9	3.8	0.48
II	83	131.14	186.14	4.61	53
III	18	70.17	209.4	3.6	0.51
IV	5	36.48	222.52	2.5	0.59
V	2	21.62	240.3	2	0.04
VI	1	0.95	240.5	--	--
Total	425	530.9			

**Bifurcation Ratio:-** It is a ratio of the number of streams of any given order to the number of streams in the next higher order natural drainage system are generally characterized by bifurcation values between 2 and 5 (Strahler, 1960), and the number varies slightly between successive order in a basin. After calculating the number of streams in each order bifurcation ratio is determined and is given in a Table no 1. A graphical representation of the relationship

between stream order and log of stream number is plotted which show a linear relationship (Fig.1).

**Length Ratio:-** Length of streams for all orders was measured with the help of map measurer. The total length of each order of stream and its mean length was calculated. The relation of stream order to mean stream length shows a linear relationship Table No. 1. The stream length is related with surface flow and discharge.

**Length of Overland flow:-** If the intensity of rainfall is more than the infiltration capacity of the soil the surface water flow to a certain distance before reach a stream as a over land flow. This distance of travel by surface water is known as length of overland flow. If the slope of the ground is gentle and formations are permeable the volume of water reaching the channel will be less. So the higher value of overland flow indicates poor permeability of the formations. It is taken to be approximately half the reciprocal of drainage density. The length of overland flow for the Bhaunak river basin is 0.22 km.

### Areal aspects of the basin

**Basin Shape:-** The shape of a basin affects the stream discharge and total volume of rainwater. The Bhaunak basin has elongated shape. It can be well expressed by an areal aspect like form factor. It is a ratio between watershed area to the square of length of watershed. The value of the form factor for the basin is 0.425.

**Circularity Ratio:-** According to Miller (1953) the basin circularity ratio is the ratio of the watershed area to the area of a circle having the same parameter as the parameter of the watershed. The Bhaunak river has a circularity ratio 0.591 indicating a moderately compact nature.

**Elongation Ratio:-** According to Schumm (1956) elongation ratio is the ratio of the diameter of the circle of the same area as the basin to the maximum length. This ratio has been calculated by using the following formula.

Elongation (E) = Diameter of circle with same area as basin / Basin Length

The value of the elongation ratio for the basin is 0.76 which indicates that the basin is over shaped.

### Relief Aspects

**Slope Analysis:-** The slope analysis of Bhaunak river basin has been done with the help of Wentworth's average slope method. In the slope map (Fig.7) of the basin one can see that the maximum slope found in the northern part of the basin. The max slope is 24° and is noticed in the north western part of basin. The southern part of the basin has gentle slope.

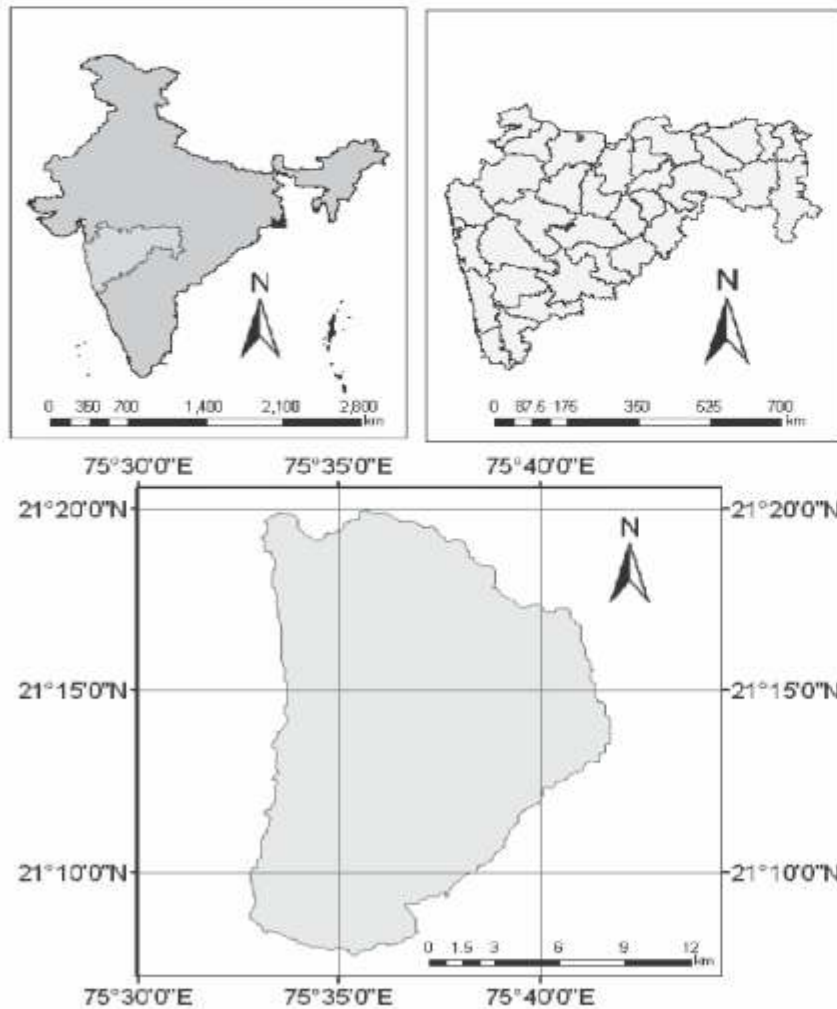
**Hypsographic Study:-** It is a study of percentage of area included in to different

altitude group. From the hypsographic curve it is clear that near about 76% area of the water-shed falls between 300 and 180 m above msl (Fig.6).

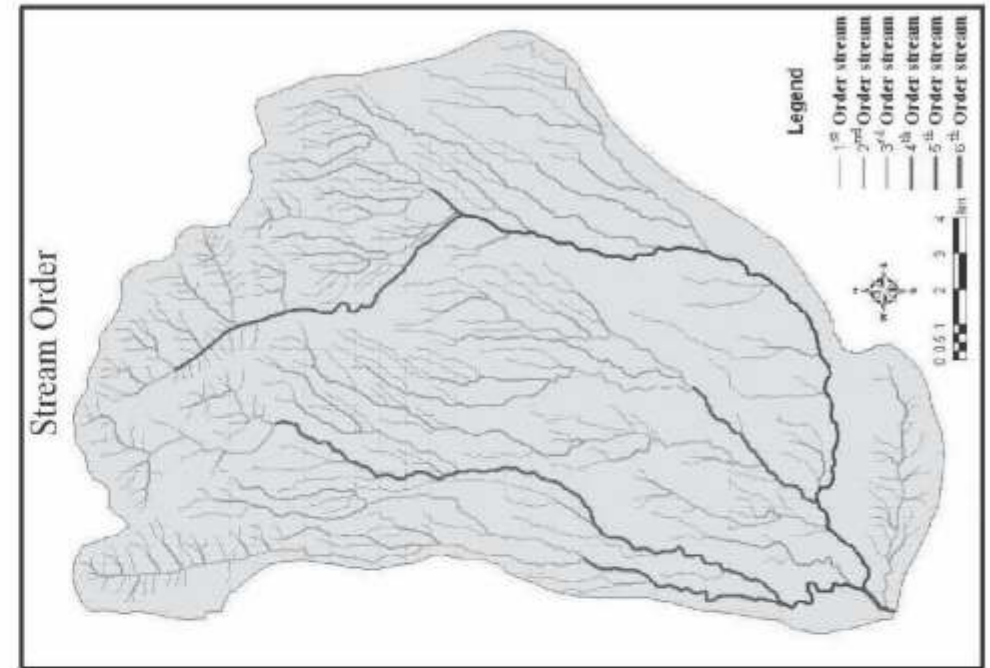
**Hypsometric Study:-** It is the study of two ratios that is  $a/a$  and  $h/H$  where  $a$  is the area enclosed by given contour and  $A$  is the total area. Whereas  $h$  is height of contour above base and  $H$  is the maximum watershed relief. The values have been calculated and plotted on a graph (Fig.6). The median value is 0.26 indicates that the basin is mature.

**Conclusion:-** Bhaunak river is a 6th order stream following all the Hortonian laws. Hypsometric curve indicates that the basin has reached mature stage of drainage development. The river basin indicates variation in drainage pattern which is a result of the basin lies partly in hard rock terrain and partly in a alluvial fill depression.

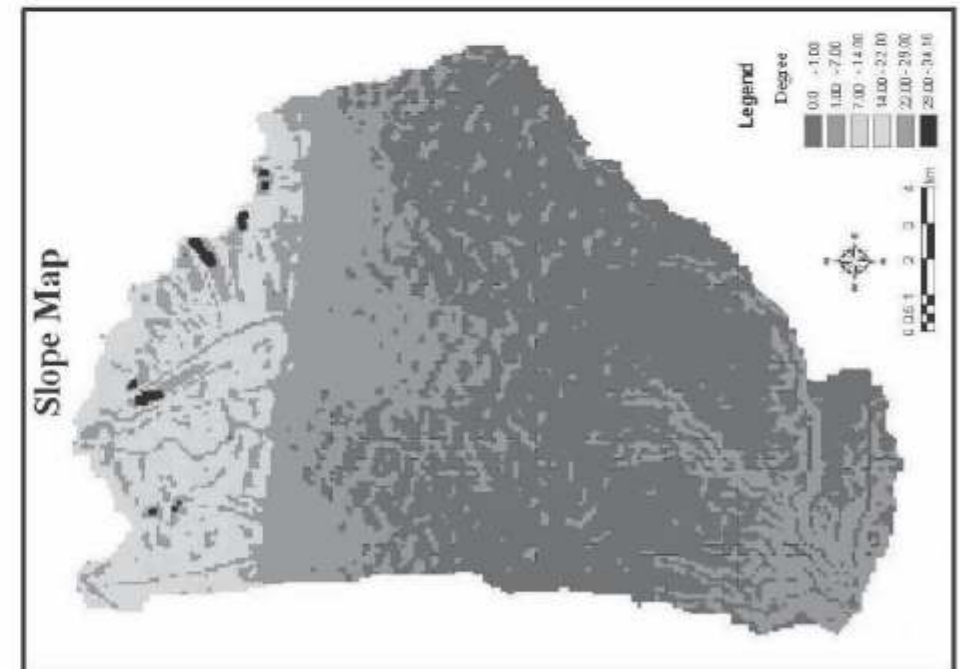
**Location Map**



**Figure 1**



**Figure 2 Stream Order Map**



**Figure 3 Slope Map**

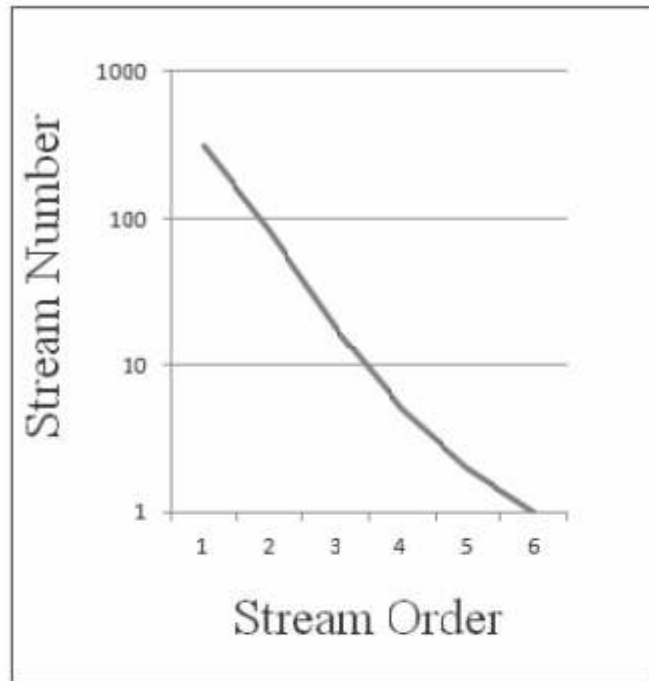


Figure 4 Stream order VS Stream Number

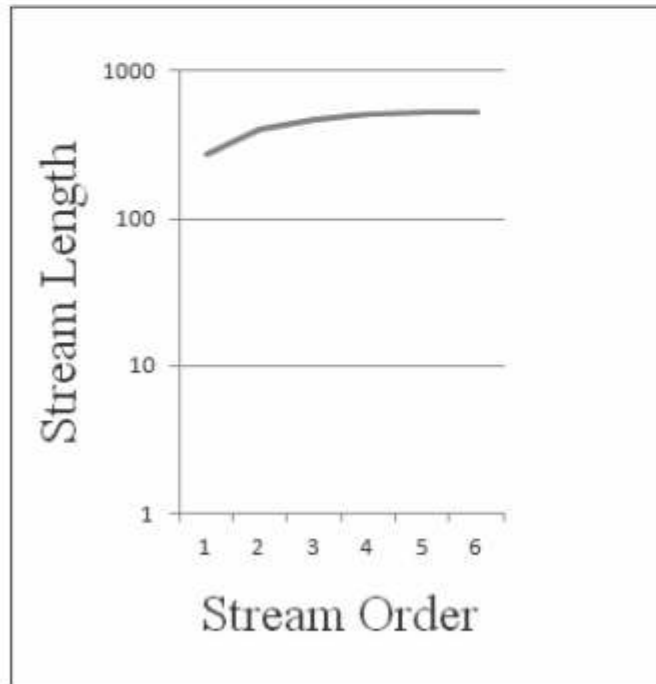


Figure 5 Stream Order VS Stream Length

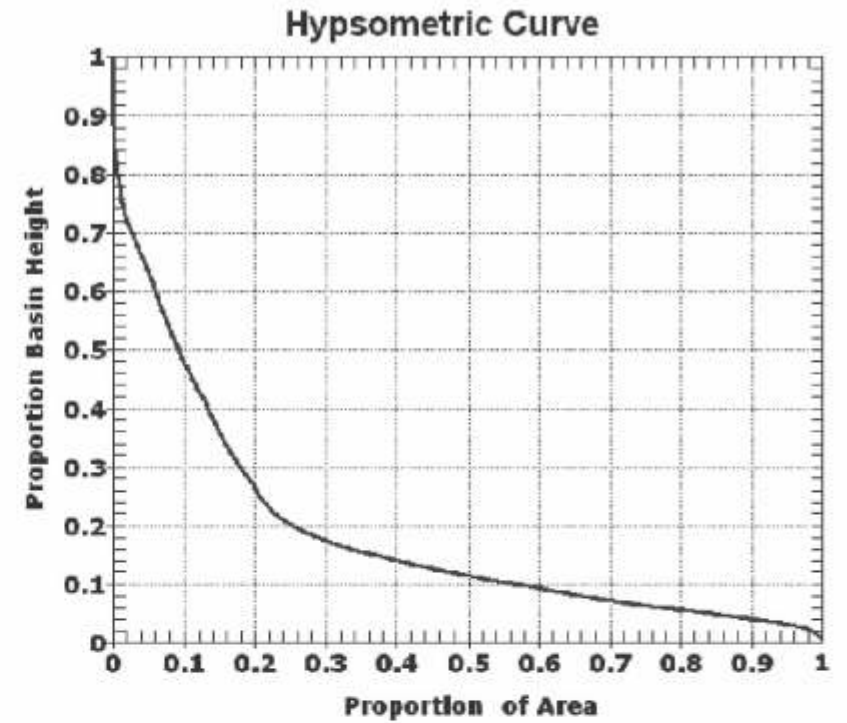


Figure 6 Hypsometric Curve

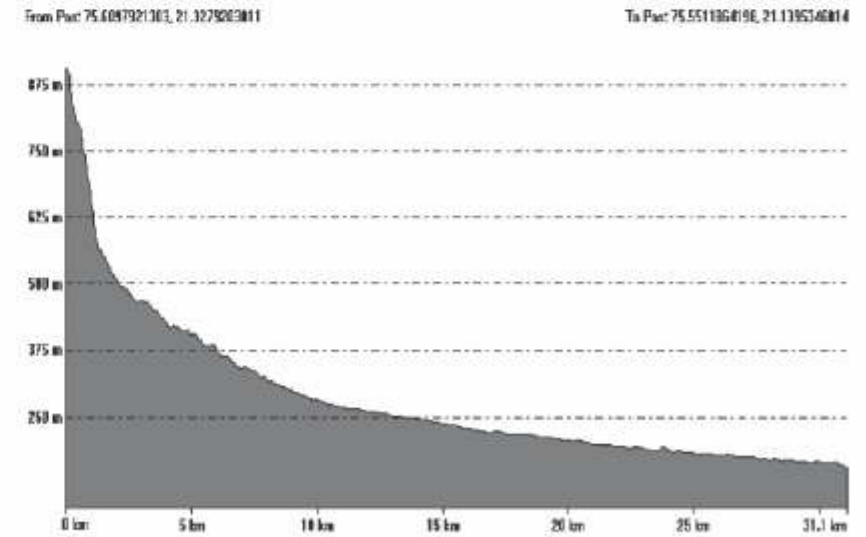


Figure 7 River longitudinal Profile

**References:-**

1. Chorley,R.J., Donald,E.G., Malm., and Pogorzelski,H.A.,1957,: "A new standard forestimating drainage basin shape", *Amer. Jour. Sci.*,255,pp 138141.
2. Horton, R.E.,1932, "Drainage basin characteristics", *Trans. Amer. Geophys. Union.* 13, pp350- 361.
3. Horton,R.E.,1945, "Erosional development of streams and their drainage basins: hydrophysical approach to quantitative morphology", *Bull. Geol. Soc. Amer.*,5, pp 275-370.
4. Jensen,J.R., *Remote Sensing of the Environment*, Dorling Kindersley (India) Pvt. Ltd., New Delhi, 1st edition, 2006.
5. Krishnamurthy,J., and Srinivas,G.,1995,: "Role of geological and geomorphological factors in groundwater exploration: a study using IRS LISS data", *Int. Jour. Remote Sensing*,16,pp25952618.
6. Miller,V.C.,1953, "A quantitative geomorphic study of drainage basin characteristics in the Clinch Mountain area, Varginia and Tennessee", Project NR 389042, *Tech. Rept.*
7. Columbia University, Department of Geology, ONR, Geography Branch, New York.
8. Strahler,A.N., and Strahler,A.H., *A Text Book of Physical Geography*, John Wiley & Sons,New York, 2002.
9. Strahler,A.N.,1957, "Quantitative analysis of watershed geomorphology", *Trans. Amer.Geophys. Union.*,38,pp913920.
10. Strahler,A.N., *Quantitative geomorphology of drainage basins and channel networks* In. *Handbook of Applied Hydrology*, McGraw Hill Book Company, New York, Section 4II, 1964.

**Violence against Women in Indian society****Lopamudra Patra**

Research Scholar, Centre for Women's Studies  
Pondicherry University, Pondicherry



Violence against women is prevalent in almost every society in some form or other. In the patriarchal social structure women are subordinated, silenced and marginalized by the weapon of violence. In the society women's issues are invisible. From the mother's womb to the graveyard a woman face all kinds of violence in her lifetime. Society accepts the violence against women as a private affair and did not intervene to stop this. Violence against women has been used as a means to maintain the patriarchal social structure. The socialization and the patriarchal social structure made the women passive objects who silently suffer all the physical mental torture. In some cases although a woman is beaten up by her husband, she assumes that her husband is right. According to patriarchal norms a woman is seen as the property of her male relatives, specially her husband. She is not visualized as an individual with her own rights and duties. Family matters are considered as personal and not considered as social affairs. But feminist thinking from sixties highlights the fact that where a woman's rights are concerned "The personal is the political".

Violence against women is a violation of human rights. Freedom from the threat of harassment, battering, and sexual assault is a major step required for the implementation of women's rights. Violence is deeply imbedded in many of our cultures and our lives. As patriarchy gives women only a secondary place a stormy backdrop – Emergency, the International Women's Year and the report of CSWI (Committee on the Status of Women in India) – led to the formation of new autonomous women's groups, infusing women's activism with a fresh energy and resolve. Violence against women became the rallying point for mobilizations on a scale that faded away in the following decades - mobilizations hinging on protests against rape, dowry and dowry deaths.

Violence against women is not a myth but a reality. The Preamble to the 1993 United Nations declaration on the Elimination of violence against women clearly locates the root of gender –based violence in 'Historically unequal power relations between men and women, which have led to domination over and discrimination against women by men and to the prevention of the full advancement of women, recognizing that violence against women is one of the crucial social mechanisms by which women are forced into a subordinate position compared with men.'

According to the definition of United Nations violence against women is "any act of gender based violence that results in or likely to result in physical,

sexual or psychological harm or suffering to women, including threats of such acts, coercion or arbitrary deprivation of liberty, whether occurring in public or private life.”

According to The United Nations Declaration on the Elimination of Violence against Women, General Assembly Resolution, December 1993: “Violence against women is a manifestation of historically unequal power relations between men and women, which have led to domination over and discrimination against women by men and to the prevention of the full advancement of women...”

The 1993 Declaration on the Elimination of Violence against Women noted that this violence could be perpetrated by assailants of gender, family members and even the "State" itself.

Violence against women is partly a result of power politics of gender relations that assumes men to be superior to women. Given the subordinate status of women, much of gender violence is considered normal and enjoys social sanction. Manifestations of violence include physical aggression, such as blows of varying intensity, burns, attempted hanging, sexual abuse and rape, psychological violence through insults, humiliation, coercion, blackmail, economic or emotional threats, and control over speech and actions. (Adriana, 1996).

The problem of violence against women has been there from the beginning of the humanity. There are many forms of violence against women, for example: female foeticide, female infanticide, Bride burning, dowry murder and torture, wife battering, abduction, eve teasing, verbal abuse or verbal rebukes, sati pratha (Burning of a widow on the funeral pyre of her dead husband), witch hunting, honour killing etc.

Violence against women has been clearly defined as a form of gender discrimination. The world Human Rights Conference held in Vienna, in 1993 first recognized gender-based violence as a human rights violation. Radhika Coomaraswamy identifies different kinds of violence against women, in the United Nation's special report, 1995, on Violence against Women:

(a) Physical, sexual and psychological violence occurring in the family, including battering, sexual abuse of female children in the household, dowry related violence, marital rape, female genital mutilation and other traditional practices harmful to women, Non spousal violence and violence related to exploitation.

(b) Physical, sexual and psychological violence occurring within the general community, including rape, sexual abuse, sexual harassment and intimidation at work, in educational institutions and elsewhere, trafficking in women and forced prostitution.

(c) Physical, sexual and psychological violence perpetrated or condoned by the state, whenever it occurs.

The fourth conference of women in Beijing, 1995 has defined “violence against women as a physical act of aggression of one individual or group against another or others. Violence against Women is any act of gender-based violence which results in, physical, sexual or arbitrary deprivation of liberty in public or private life and violation of human rights of women in situations of armed conflicts.”

The United Nations report underlines that domestic violence against women should be classified as a human rights violation. There are 2 reasons for this. “The first is the fact that a large number of women are seriously ill treated, sometimes in a manner which would be seen as cruel, inhuman and degrading or even as torture-if carried out by the state agents. The second reason is the recognition that not only individuals but also the authorities do have a responsibility. They should take determined action to prevent such ill treatment, to investigate every credible report about violations and to prosecute the perpetrators.”

National Crime Records Bureau (NCRB) Delhi reports of 1994 has referred to “crime against women” under two categories ; (1) crimes under the Indian Penal Code, and (2) crimes under the local and special laws. The Bureau has identified seven crimes in the first category and four crimes in the secondary category of crimes. The seven crimes against women under the India Penal Code are : (1) rape, (2) kidnapping and abduction, (3) homicide for dowry, (4) torture (physical and mental), (5) molestation, (6) eve-teasing; and (7) importation of girls up to 21 years of age, while the four crimes under the local and special laws are: (1) commission of Sati, (2) dowry prohibition , (3) immoral traffic, and (4) indecent representation of women.

According to the cases of criminal violence against women obtained from the records compiled by the Ministry of Home Affairs, the police Research Bureau, and the National Institute of Social Defence, crimes against women have been constantly increasing every year. Every year about 11,000 rapes, 21,000 molestations, 12,000 kidnappings, 20,000 cases of torture, 10,000 cases of eve-teasing, and 5,000 cases of dowry deaths take place in India. In 1994, the number of different cases recorded were: torture : 25,946 ; molestation : 24,117 ; eve-teasing : 10,496 ; kidnapping and abduction : 12,998 ; rape : 12,351, and dowry death : 4,935.

Of the total crimes against women under the IPC every year (about 80,000), 25 percent are torture cases , 27 percent are molestation cases , 13 percent eve-teasing cases, 15 percent are kidnapping and abduction cases, 14 percent are rape cases, and 6 percent are dowry death cases, 14 percent are rape cases, and 6 are dowry death cases.

As regards crimes under the local and special laws in 1993, 12,426 cases were recorded under the Immoral Traffic (prevention) Act, 1956, 2,679 cases under the Dowry Prohibition Act, 1961 and five cases under the Sati (prevention)

1987 act. In 1994 ,the number of cases recorded were: Immoral Traffic Act:7,547,Indecent Representation Of Women Act 1986 :349,and sati Act:2.

**Rape:-** According to Medical Dictionary, rape is forced sexual intercourse; sexual assault; sexual intercourse between an adult and a minor. Rape may be heterosexual (involving members of opposite sexes) or homosexual (involving members of the same sex). Rape involves insertion of an erect penis or an inanimate object into the female vagina or the male anus. Legal definitions of rape may also include forced oral sex and other sexual acts.

Crime in India 1992, reports that Age wise, "the percentage of victims of rape is highest in the age group of 16 to 30 years (64%) while victims below 10 years account for about 3 percent, victims between 10 and 16 years account for about 20 percent, and victims above 30 years account for about 13 percent." It is not only the poor girls who became rape victims but even the employers belonging to the middle class are sexually humiliated by their employers. Women inmates in jails are raped by the superintendents, women crime suspects by the police officers, women patients by hospital personnel, maid-servants by their masters, and women daily wage-earners by contractors and middle-men. Even physically challenged and women beggars are not spared. Women who come from the lower- middle class and who are the main bread winners of their families bear sexual abuse quietly and without protest. Even if children who are being raped are not less in the number, the statistics of the children raped is surprisingly shocking in India.

**Sexual Harassment at work place:-** Bhanwari Devi a Saathin of a development program run by the state government of Rajasthan, fighting against child and multiple marriages in villages, tried to stop child marriage of Ramkaran Gujjar's infant daughter who was less than one year old. The marriage took place nevertheless, and Bhanwari earned the ire of the Gujjar family. Gujjar family got infuriated by her interference, and on September 1992 five men including Ramkaran Gujjar, gang raped Bhanwari. Unable to get justice, women groups had filled a petition in the supreme court of India, under the name of, 'Vishakha', asking the court to give certain directions regarding the sexual harassment that women face at the workplace. The result is the Supreme Court judgment, which came on the 13th august 1997, and gave the Vishakha guidelines.

This was the case, which brought sexual harassment at workplace into public notice. The petitioners wanted assistance in suitable methods for realization of the true concept of "gender equality"; and to prevent sexual harassment of working women in all workplaces through judicial process and to fill the vacuum in existing legislation. The Supreme Court held that, "each incidence of sexual harassment of women at workplace results in violation of the fundamental rights," "gender equality" and the "right to life and liberty." It was a

clear violation of the articles 1, 15 and 21of the constitution. Gender equality includes protection from sexual harassment and right to work with dignity, which is universally, recognized Human Right. From the viewpoint of the Supreme Court it took this case quite seriously as it understood the gravity of the situation. The Supreme Court took assistance from the then solicitor general of India to formulate certain guidelines and norms to help working women against sexual harassment. These guidelines were formulated since the then civil and penal laws in India did not adequately provide for specific protection of women from sexual harassment in workplace and that enactment of such legislation would take considerable time.

**Dowry deaths:-** According to the dowry prohibition act, 1961 "dowry " means any property or valuable security given or agreed to be given either directly or indirectly-By one party to a marriage to the other party to the marriage; or By the parents of either party to a marriage or by any other person. Though the dowry Prohibition Act, 1961 has banned the practice of dowry but in reality all that law does is to recognize that the problem exists. It is virtually unheard of for a husband or his family to be sued for insisting on taking a dowry. As a modest estimate, the figure of deaths in India due to non payment or partial payment of dowry could be placed around 5,000 for one year. "The increase in the incidence of dowry offences is evident from the fact that 1,912 cases of dowry deaths in 1987,there were 4,215 cases in 1989,4,836 in 1990,5,157 in 1991,4,962 in 1992,5,817 in 1993,and 4,935 in 1994."The number of cases of cruelty by the husband and in-laws was reported to be 25,946 in 1994 as against 11,603 in 1983.

The dowry prohibition Act 1961 was amended in 1984,1985 and 1986.Dowry deaths constitute a special category of death that was for the first time defined in a section introduced into the Indian Penal Code(IPC). In 1986,Section304(B) stipulates that death of a woman within seven years of her marriage by burns or bodily injury with evidence of cruelty or harassment by her husband or his relatives in connection with a demand for dowry is 'dowry death' and punishable with imprisonment for not less than seven years.

**Women's rights are human rights:-** Women's rights are human rights and violation of women's rights is the violation of women rights. This is a slogan and a belief, which reflects the unity of women in terms of the situation around the world. This idea focuses on two things. One that in discussion of all issues from poverty to development and from health and education to empowerment and peace, reference to women is necessary. All such discussion must have a gender perspective as they affect both men and women, though women are affected much more severely. Two, that there are specific gender issues, like violence against women that require specific attention of one and all and need to be given a space. The United Nations defines human rights as those rights, which are

inherent in our nature and without which we cannot live as human beings. They are rights which enable people to fully develop and utilize their innate qualities, such as intelligence and talents and to satisfy deeper needs such as spirituality. Human rights are the foundations for a quality of life in which each individual's inherent dignity and worth will receive due respect and protection.

Human right is a dynamic concept and endeavors to adopt itself to the needs of the day. For this reason, the definition and understanding of the term depend much on the condition and opinions prevailing in the given society at a given time and it attains new dimension with the march of history. Since the socio-economic environment with which the question of human rights is intrinsically keep changing, so do the form and content of human rights. Hence, what constitute human rights cannot be spelt out in absolute terms for all times and all situations.

The "Declaration on the Elimination of All Forms of Discrimination against Women" adopted by United Nations in 1967 was one of the earliest and most far reaching achievements in regard to women's status. According to this convention 'discrimination against women' is a violation on the basis of sex of human rights and fundamental freedoms in the political, economic, social, cultural, and civil or any other field (Article1).The article is based on the principle of equality between men and women. This convention, which came into force on 3 September 1981, has as of 31 may 1996, been ratified by 152 U.N. member states including India.

One of the glaring example of violation of human rights is the judgment of the Rajasthan high court in late 80's ,in the case of practice of 'sati', where Roop Kanwar, was burnt alive along with her deceased husband. No doubt, the culprits had been immediately arrested as an eyewash, but ultimately all of them were acquitted on the grounds that "there had been no eye witness" despite the gruesome and cold-blooded murder taking place openly in the public. The subsequent judgment that favoured the culprits stated that, "There must be respect for people's sentiments", i.e., the sentiments of those who believed in their religious rights. This was one of the worst precedents for even cold-blooded murder being justifies in the name of religion and culture, denying a woman even her fundamental right to survive in this world.

Incidents of dowry deaths and other forms of domestic violence have increased over the last few years despite the amendments in dowry, rape and laws to curb these violence. Sexual harassment, within the family, society and workplace continue unabated. Violence and its perpetuation are often related to conflicts of caste, class, ethnicity, communalism, fundamentalism and terrorism, which cumulatively have a negative impact on women.

Other forms of violence are trafficking in women and girls and custodial violence perpetuated by law enforcing agencies. There are other more latent and unquantifiable aspects of aggression namely emotional violence and other forms of cruelty namely foeticide, infanticide denial of food to girl child.

The denial of control over one's body is yet another example of the gender violation. Most of the women are still denied freedom to control their own fertility because of ignorance, religious prohibition or husband's desire. The serious fallout of this denial is the impact it has on her health and life expectancy. Denial of sexual and reproductive rights-including free choice with regard to pregnancy and child bearing, combined with widespread discrimination and violence against women, amount to massive violation of human rights.

India has an elaborate system of laws to protect the rights of women. There have been many obstacles to the realization of women's human rights in India is elsewhere. It is observed that both religion and cultural patterns are deeply rooted in the tradition of its communities, and confine women largely to the home or to 'invisible activities'. This has an important impact on social and legal status of women in India. These obstacles are extremely controversial subjects or reforms. Examining them often directly challenges the traditional roles of women in society, and may prove particularly uncomfortable for those who benefit from women's subordination. The religious sanction and traditional cultural values safeguards the interests of patriarchy which operates through family norms, state policies and laws to keep women in a vulnerable position.

The government is unable to enforce the laws especially in area where culture is deeply rooted. In reality, there is as 'visible gap' between the law as it stands and the law as it operates, which is regularly marked by incidents of overwhelming injustice .the inequities that occur in its daily works is a gap that should be closed, if equal justice for all is to become a reality in a country governed by rule of law.

Women's oppression today, then has to be seen in a wholistic perspective, according to which "what links sati with dowry deaths, female foeticide, sexual harassment, sexual crimes is the fact of woman being regarded as non entity, a non-person" with no identity except that bestowed on her as some man's daughter, sister, wife, mother etc .These very forms of oppression of women are rotten fruits delivered by the vicious and decadent tree of Indian patriarchy".A UN resolution designated November 25th as International Day for the Elimination of Violence against Women.

**Conclusion:-** This ever widening spectrum of violence against women, especially dowry has come to symbolise the ultimate devaluation of women particularly in the context of the virulent culture of consumerism and materialism that is consuming all our lives. The violence in domestic spheres is occurring within the four wall of the home. So, it is not an easy task to identify violence and punish the culprit until and unless the victim herself did not open her mouth. The law too has failed to stem this rising tide of violence. The reasons are multiple and complex. They think that it s their personal matter. But thing is that "personal is political". One should fight against the oppression that they are

facing as well as against the oppression of women in general. It is only through the painful struggle in the personal lives that one can emerge strong enough to fight oppression at a wider level. Male power and male-dominated institutions are the main institutions which oppress the women. Women are the victims of patriarchy. One should break the silence to come out from the violence. The language and metaphor of justice it seems to be a fatal casualty in this gendered battle for rights and empowerment.

### Reference:-

1. Adriana, J.R. *What is to be done about violence against women*, Hammondsworth: Penguin, 1996.
2. Ahuja, Ram. *Rights of women a feminist perspective*. New Delhi: Rawat, 1992. Pp.18.
3. --. *Social Problems in India*. Jaipur: Rawat publications, 2003. pp. 243.
4. Altekar, A.S. *The position of women in Hindu Civilization*. Delhi: Motilal Banarsidass publishers, 1959. Pp. 70.
5. Arunchalam, jaya. *Women's equality: A struggle for survival*. New Delhi: Gyan, 2005. pp.195.
6. Bhaskar Rao, Digumanti, ed. *Status and advancement of women*. New Delhi: A.P.H. Publishing Corporation, 2000.
7. Domenach, J.F. *Women, Crime and society*. New York: Longman, 1981. Gandhi, N. & Shah, N. *The issues at stake: Theory and practice in the Contemporary women's Movement in India*. New Delhi: Kali, 1992.
8. Gelles, Richard, j., *The violent Home: A study of physical Aggression Between Husbands and wives*. California: Sage publications, 1974.
9. Ghadially, Rehana, ed. *Women in Indian Society*. New Delhi: Sage, 1988. Pp.167.

## Policy Making Concerns Of the State And Politics Of Multi cultural Groups For Recognition

**Dr. Shikha Sharma**

Post Doctoral Fellow, University of Rajasthan, Jaipur

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

Diversity categories the great majority of the countries in the world, and that with the end of the cold war and bipolar international order, identitarian claims of ethnic. Cultural and religious groups are becoming stronger, are well-known facts. Such developments, which sometimes lead to conflictual situations and tragedies, seriously challenge the States, which respond to it through different policies, which range from assimilationism and integrationism, to differentialism. The latter, not always intentionally conceived, involves indirect exclusion, implicit in social, economic, cultural and institutional practices, as well as active exclusion, which may go as far as apartheid and genocide.<sup>1</sup>

How can egalitarian multiculturalism be prevented from becoming hierarchical? How must it be prevented from turning authoritarian? How may its liberal content be retained? How can a multicultural society formulate its laws that recognize cultures but prohibit the moral devaluation of individuals and restriction of their autonomy? How can it do so when multiculturalism also requires that proper respect be accorded to those social practices that combine traditional wisdom with oppression of individuals? Can we reconcile the conflict between future generations and the autonomy of individuals living now? It is true that individuals need larger narratives within which to fit their own life-plans, with the help of which to tell life-stories. It is equally true that such narratives are provided by collective identities. Given this, do individuals still have the options of choosing which features are part of the collective dimension of their identities? These are some of the dilemmas that have been faced by state's policy towards multiculturalism.

Many modern states have survived on certain conceptual constructions of their polities. India is not an exception in this regard, although in every case these constructions are organized in a specific way. They include notions of nation-state, separation of religion and state, rule of law and the understanding that the states are the sole legitimate actors in the international arena. It has reduced vast masses particularly those bounded in as creative identities to silence. Where the understanding of the state has run into troubled waters with the self understanding of communities, the state, by privileging its understanding, has attempted to suppress the expression of communities if it has not succeeded in subordinating them. The institution of civil society has been actively mobilized to watch over expressions of identities that do not time up with the reasons of the state.

At the same time, under the name of equality of rights, most of these states have taken overboard a specific identity or set of identities as normal although the formal expressions of the state may not acknowledge the same. Therefore, when communities make a clamour for a space for themselves in a polity, they might confront not merely the state but also the identity cushioned under the state.

Multiculturalism relativises the nation and does not subscribe that the nation is a state. It sees the state as made of many nations or communities or conceives the nation as made of myriads of communities and identities where the former is in constant dialogue with the latter. It was poor wisdom to sanitize the public from the expression of identities and communities.

Contrary to the earlier theories on the declining importance of ethnicity, it is argued that the contemporary processes of modernization and globalization are actively contributing to the growing importance of ethnicity and the increased significance of communitarian ties.<sup>2</sup> What is frequently under-theorised in this type of analysis is the role of the state and the capabilities of social policy to intervene in this process so as to reduce the potential for conflict.

In India, identities have asserted themselves in spite of attempting to delegitimize them for reasons of the nation-state. Infact, the nation has tried to shove off these identities from being contenders claiming equality with itself, to that of the electoral arena. Worst still it has named them as interest groups.

Against co-option and displacement, identities and communities have launched struggles for recognition. In reality, certain communities have resorted even to armed struggle to assert their autonomous identity.

As a matter of fact, quite often, culture and tradition cannot be seriously appreciated when the nation-state attempts to encapsulate them and drive them to take up oppositional forms or highly pauperized expressions such as being interest groups. Given that cultures and communities are plural and differentiated, if the nation state becomes cozy with any one of them, it immediately leads to the accusation that the state was communal. Indian state has often come under such accusation.

In a country like India, a multicultural approach will reorder issues like the Uniform Civil Code, the insurgent movements in the north-east, the Kashmir question, the Hindutva movement, the conversion controversy etc. which the nation state has not been able to engage with any degree of satisfaction. Multiculturalism is a policy of nation-state in relation to its cultural minorities. A multicultural state would recognize at least limited rights of self-determination for minorities within a state. Thus, policies towards federal units and regions, the contours of concerns expressed in backward class and dalit movements are likely to witness major transformations. Similarly, the conflict between religious communities may undergo a change of focus.

### Multiculturalism As Framework Of State Policy

In India, the demolition of the Babri Masjid in 1992 not only shook the secular foundations of the country, but also brought into sharp focus the larger issues of whether or not people belonging and deeply committed to different religious faiths can live together. This revived debates on secularism, minority rights and multiculturalism, which within socio-political theory mostly revolved around the relationship between state and various religious communities.

The main issues and theoretical debates, which a verge from them, are as follows:

- First issue is the Indian governments' official policy of secularism.
- The second issue pertains to the accusations leveled till recently by the Hindu right on the Indian government of indulging in pseudo-secularism i.e., pampering the Muslim community and leaving untouched their personal laws (while interfering and amending personal laws of Hindu community). The Hindu right has also been demanding the implementation of the Uniform Civil Code.
- The third issue is of personal laws and its implications for gender relations. This is a very important issue on which a lot of debate is going on in the left, secular and feminist circles. Related to it is the question of reforms in personal laws from within communities or with state intervention- an issue, which leads to reviewing of the complex relationship between state, citizenship and communities.

It is apparent that the doctrine of secularism has been subjected to unfair criticism both by communitarian theorists as well as the Hindu right. One needs to understand the circumstances, which shaped the government's policies on secularism. First the formation of the Indian nation state was an outcome of the partition of the subcontinent into India and Pakistan. Second, a sizeable proportion of the Muslim population, mostly from the poorer sections, chose to stay back in India. Third, the Hindu community had for centuries suffered from caste and gender-based discriminations and injustice and reform of these practices was in the agenda of the nationalist leaders even during the struggle against British colonial rule.

Given these circumstances, it is evident that secularism had to be implemented in a certain manner. On the question of reforms brought out within Hindu religion, given the caste and gender discriminations rampant within the majority community for centuries, it became imperative on the nationalist leaders to bring out reforms in those areas which denied basic human dignity and self esteem such as denial of temple entry to the untouchable castes, early marriage of female children, pollution rules impinging on lower castes and women etc. so it is highly unfair to criticise the Indian state for not remaining neutral. Neutrality on the part of state, does not identify the outcome, that is, the outcome of its interventions should not be identical for both groups.

The issue of reform in personal laws has generated a lot of controversies in India. Personal laws are unfortunately utilized for marking out group boundaries and any move for reforms are perceived as threats to a community's identity. Women become the unfortunate victims of the process as personal laws of most religions discriminate against women.

The turning point in the debate on gender justice was the famous Shah Bano case of 1985 in which the Supreme Court in a landmark judgment granted a small maintenance allowance to Shah Bano- a 73 year old divorcee. The apex court ruled that criminal laws override personal laws and are applicable to all, including Muslim women. The judgment created a big political furor and to assuage the feelings of large section of Muslim community, the then Rajiv Gandhi government enacted a legislation- The Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Bill, 1986- to explicitly exclude Muslim women from the purview of the Criminal Procedure Code, to which all citizens otherwise have recourse.

The controversy around the judgment and the public as well as the parliamentary debate tended to focus on the conflict between the right of the religious minority to cultural autonomy and to a separate civil code as an important guarantee of its identity on the one hand, and the claims of the state legitimized through representative institutions to articulate the common good on the other.

The critics ignored the important question of women's rights, which remained confined to feminists and the leftists-parties. The Muslim leadership focused on the legal issues that linked women and family to Islamic legal identity and defended the definition of the Muslim community as a legal entity. The government defended the legislation on the ground that it conformed to the wishes of the Muslim community and should therefore be conceded irrespective of the opinion of other communities or society, at large.

In the past it was wars between nation-states that were the cause of destruction and displacement of populations. Today it is ethnic conflicts that have their roots within the nation-state that are yielding the same result.<sup>3</sup> The question which arise is as follows: Why is there such unwillingness on the part of large sections of the minority community to the idea of internal reforms and what are the ways out of this impasse? What should be the preferred mode of initiation of change, that is, internal reforms from within the community or reforms through state interventions? That if communities were to self governing, what will prevent them from trying to be self-legislating patriarchies : and from continuing to hand power to mullahs, priests, pundits and other chosen interpreters?

There were many different reasons for these conflicts. In some cases, it was the desire to access socially and economically valued goods, and to share political power, while in other cases the very basis of the formation of the nation-state and the ordering of its boundaries was being questioned.<sup>4</sup> The presence of

unwillingness is because their commitment is, to a large extent, governed by the highly defensive function that ethnic groups find it particularly difficult to make a substantial and sustained criticism of ethnic doctrine, leaving them susceptible for exploitation by the absolutist movements. Either way, communities that were in a minority were seeking recognition and some degree of self-determination. They were asserting difference and on that basis seeking some sort of accommodation and autonomy, They could recognize claims for political participation and equal civil and political liberties but other forms of accommodation seemed unacceptable. This was primarily because the nation-state had been conceived as a political community with a shared history and culture. Giving up this sense of common identity seemed therefore, to be a challenge to the existence and survival of the nation-state.

Many seculars are skeptical on the issue of minority communities initiating reforms from within and bringing about those reforms through debate and a democratic process. This is because it is first, not clear how such self-governing democratic institutions will emerge spontaneously from within minority communities. Second, historical experience shows that often, conservative forces take charge of group leadership especially if there are perceived threat to the community.

It is not just a question of reform of personal laws from within the community or of reforms through state intervention. The issue is of acknowledging the presence of multiple patriarchies and therefore an issue of the inalienable rights of ethnicities cutting across religions, castes, class, regions, sects etc.

Cultural identity was bought in on the ground that the state can never be completely neutral. Even though the liberal state claims to be neutral between different conceptions, it has certain laws/policies relating to such issues as language, marriage, suicide, euthanasia- issues on which it invariably reflects the views of the dominant majority. Other communities are expected to conform to the prevailing norms even when their cultural self-understanding differs from this. But what is important is that it places these minority communities at a disadvantage. The dominant culture that prevails in the public arena also at times acts as an inhibiting force, keeping the minorities out of the public domain.<sup>5</sup>

Recognition of community differences and accommodating aspirations of diverse ethnicities/identities in the framework of nation state have come to be seen as important aspect of a genuine democratic polity. The classical notion of liberal democracy, though respected, cultural differences recognized them only as a matter of individual rights. However, this recognition of individual rights did not produce social among the members of different communities. Communities which had been victims of social discrimination in the past continued disadvantaged, and were unable to compete with the rest of the society. It was in recognition of this fact that 'state' began to take the question of equality among

the historically evolved cultural groups and religious communities seriously. Multiculturalism came to be viewed as a possible way of dealing with the problem of equality among groups and communities. As a framework of state policy it recognized cultural differences and community identities as politically significant realities and advocated for their participation in the functioning of political process as collective agents.

In the third world societies like India, where the post-colonial states have been pursuing the path of modernization and development, the question of community identity has been brought to the centre stage by recent political debates and social movements. The homogenizing tendencies that are unleashed by modern technologies and the market could also dis-empower certain groups and communities, further marginalizing their position in the local and the national power structure.

The policy issue boils down to question: under what conditions can nation adopt which kind of policies with the least harm resulting to the most people? Does multiculturalism necessarily result in a nation characterized by hostile camps populated by people who despise one another?

Further, why is state financing for minority cultural activities a staple for the multicultural programme? One answer is that earmarked money generates rents which can be appropriated by cultural entrepreneurs. Some cultural entrepreneurs will be content to live off the income that can be derived from writing grant applications for organizations, lobbying on their behalf and administering programme grants. Others with greater ambitions will court visibility and build up an organizational nucleus as a way of launching themselves into a wider sphere as ethno-cultural politicians. Either way, there are direct beneficiaries of the multicultural pork-barrel.

A politics of recognition by state would not only give public recognition to different identities but also try to ensure the conditions in which people could be true to their nature and their vision of the good. Indian state therefore provides the condition in which people and groups can pursue authenticity. Both the politics of equal rights and the politics of difference uphold non-discriminative policies although non-discrimination would be interpreted differently in each case.

But in Indian nation-state, if certain minority culture in a society does not share the liberal belief in equal rights and neutral procedures, the imposition of these values on them would amount to cultural discrimination even though equal rights were granted. This may seem a reasonable position to adopt but by working with a simplified notion of cultural difference and excluding discussion of socio-economic dimensions of identity formation, the way could be opened up for new forms of cultural discrimination by states and for creation of minorities within minorities.

In India, where cultural difference has often been equated with religious

difference, prioritising the goal of cultural survival could have led to more dubious implications for groups which perceive themselves as part of the cultural religious majority and their relationship with minority groups and fractions within them. Moreover, it simplifies the contentious issue of defining cultural difference in a society.

**Politics Of Multicultural Groups:-** Multiculturalism acknowledges the freedom of all members of society to preserve, enhance and share their cultural heritage. Each cultural group within a polity constitute as source of value for its members, and that the value of different groups are incommensurable. On this view, a society with a single set of rules applying to all its members is bound to be oppressive to cultural minorities, because the rules will simply reflect the culture of the minority. Thus, results into politics by various communities to ensure members are able to control public policies affecting them, either by having political power devolved on them or by being granted some kind of special status in relation to the process by which policies are formulated. Thus political disagreements stem from differing ideas among citizens about the direction to be taken in future by their society.

The character of the national political culture has not been the area of major dispute and it is not envisaged that multicultural policies would necessitate serious changes in it. Disputes have generally been about granting greater recognition to the contribution of minority group and the issue of how to ensure equal respect for the minority cultures.

Moreover, in a constitutional state the neutrality and inclusiveness of official interpretations of the national culture, has always been challenged by those who feel, that their self-understanding and identity have been excluded. In India, liberal values have also been challenged by cultural groups through non-liberal interpretations of the national culture. Certain groups advance the theory that in the absence of a framework of liberal democratic institutions and respect for basic human rights, a politics of difference could be used to generate repression rather than respect for minorities.

Another criticism forwarded by them has been that in India, the myth of an original, indigenous, authentic culture which has evolved seamlessly inspite of challenges by cultural groups, has been very insidious by granting cultural minorities recognition in the public sphere because the discourse of multiculturalism has worked with a particular model of a cultural community as integrated by shared beliefs and practices, perhaps language, or religion or ethnicity and multicultural policies could strengthen separate identities rather than bringing people together.

Another challenge has been drawn on the distinction to criticize the arrangement made in the Indian constitution regarding the rights of minority religious communities..They oppose the policy of equal rights and non-

discrimination which is embedded in the constitution as also attempts to limit religion to the private sphere and argue that such secularism is not only inappropriate for Indian society but has proved disastrous in practice and given the non-dogmatic and non-institutionalized character of Indian religions the attempt to keep religion out of the public sphere is not likely to be successful. Certain groups fear that it may also lead to attempts by the majority religion to dominate minorities.

They see threats to tolerance coming from the nation-state, from modernity and from westernized Indians who wish to impose alien values on the society. It is possible that in that situation giving cultural or religious communities political recognition may have the opposite effect to recreating the tolerance. They have therefore advocated recognition for communities, and decentralization of powers to them. They should be free to evolve their own rules regarding the autonomy of members.

### Suggestions:-

The challenge for multiculturalism policy is not only to recognize and celebrate diversity but also to make sure that it is creating an inclusive society, one without barriers, that is defined by constantly evolving intercultural relationships not by a "we-they" dichotomy.<sup>5</sup>

While talking about suggestions for dealing with the whole politics of diversity arising out of the complex interrelationship between the state, religious communities and multiple cultures, it can be that the new common laws would have to move in three directions: encourage religious diversity, establish inalienable rights for all ethnic groups, as well as finding ways of dealing with the diversities of patriarchies.

If the common laws are to be based on an understanding of multiple patriarchies, then they should be formulated on the basis of a dual principle. The first is a principle of access to inalienable rights that are same for all communities and have the same horizon.

The second is differing particularistic legislations, responding to diverse patriarchal arrangements, all of which would neither apply nor be needed by communities/ ethnic groups. These laws are to function through a context sensitive jurisprudence.

Again, a more radical, and indigenous, notion of tolerance which would make it unnecessary for people to need to justify their right to be different and their reasons for doing things differently provided the group is able to explain itself adequately in its own chosen forum.

Different cultural or religious groups should be left free to define their own modes of operation and values. Groups could provide a forum for democratic struggles and the state should not intervene here to enforce what are centrally considered to be progressive values.

Granting greater autonomy to communities within a loosely ordered state may go against the principles of the nation state and sovereignty but it will serve to limit the possibilities for homogenization from without while leaving scope for democratization from within.

**Conclusion:-** The problem of India thus is one of an indigenous concept of multiculturalism in terms of segregation versus the modern state based on a principle of integration. Attitudes towards the cultural aspirations of communities in India have ranged from condemning them as being "irrational", "anti-national" and "communalist" in nature to celebrating them as the essential soul of the Indian culture and civilization. Identities and cultural differences are however not always "pre-given" and "pre-mordial" in nature. They also develop and change over a period of time. As a nation-state develops and transforms itself into a modern society, the ethnic identities instead of getting weaker could infact become stronger and sharper? In the changing political-economic environment, some groups may discover or "construct" identities for themselves that might appear to be primordial and pre-modern in nature. It is in this non-technological and historical perspective that we need to understand community identities and cultural difference in contemporary India. Thus, the basic idea of multiculturalism is advocating most successful form of integration which occurs when new comers retain a sense of their heritage and culture while also becoming involved in the larger society.<sup>7</sup>

### References:-

1. Gamson.W.A.1995 "Hiroshima, the Holocaust, and the Politics of Exclusion". A.S.A. Presidential Address, *American Sociological Review*, vol-60, pp-1-20.
2. Touraine, A. 1992. *Critique de la Modernite, Paris; Fayard (translated 1995, Critique of Modernity, Oxford; Blackwell)*
3. David Bloomfield and Ben Reilly, "Changing Nature of Conflict and Conflict Management", in *Democracy and Deep Conflict: Options for Negotiators*, ed. Peter Harns and Ben Reilly (Stockholm: International Institute for Electoral Assistance.1998)
4. Ted R. Gurr, *Minorities at Risk: A Global view of Ethnopolitical Conflicts (Washington DC: United States Institute of Peace Studies, 1994)*
5. Joseph Carens, "Culture Citizenship and Community: A Contextual Exploration of Justice as Even headedness.(Oxford: Oxford University Press, 2000)
6. Angus, I, "Identity and Justice". Toronto: University of Toronto Press.2000.
7. Berger, I. Dinca M., Foster,M.& Meinhard, A.(2005). "Ethnicity, Vuntary behavior and social integration. *Proceedings of the administrative Sciences Association Canada(ASAC), Toronto.*

**Dr. Yogendra Kumar Dixit**

Assistant Professor, Rashtriya Samskrit Sansthan,  
Shree Ranveer Parisar, Jammu.

**Shodh Shree**



shodhshree@gmail.com

**W**omen's involvement in politics in the modern era started in the late 18th and early 20th centuries. Although British imperialism profoundly influenced the political engagement of both elite and non elite women during this period, its impact on the character and purposes of their engagement was very different. Non elite women fought against the British colonialists. Elite women were mainly involved in the Indian renaissance the social reform movement of the 19th century. The main goals were to do away with what were to elite women the most offensive of traditional Indian practices through the abolition of female infanticide, sati, child marriage and laws prohibiting widows to remarry. The emphasis was not an equality but, rather, on the separateness and complementarity of the roles of women and men in society. The movement was an attempt to make women better mothers and wives.

The entry of Mrs. Annie Besant into Indian politics in 1914 galvanized new and increased national consciousness in both men and women. In 1874 she had written that women should be represented in the law making process because they are expected to adhere to law<sup>1</sup>.

Mrs. Annie Besant and Shrimati Sarojini Naidu appeared before the joint select committee on the Government of India Bill 1919 and Mrs. Herabai and Mrs. Mitthiabai Tata, Women's India Association spokespersons presented a memorandum, arguing for women's franchise.<sup>2</sup>

The result of all this was the enfranchisement of women by each provincial legislative council, starting with the Madras residency in 1921, on the same terms as men.

When the women India Association compiled a list of women in public life (1927), it included five members of legislative councils (all nominated), 32 municipal councilors (six elected) and four members of Taluk Boards (all nominated), 32 Honorary magistrates and justices of peace (all nominated) 32 women and 4 members of the University senate (all elected)<sup>3</sup>. Women were proceed of their achievements, and there were no complaints because so many women had been nominated most of those nominated were prominent members of social organizations and their names had been presented to the respective governments by the organizations themselves.

Mahatma Gandhi, who vehemently supported their inclusion at each level, accelerated the active participation of women in the freedom struggle. In young India, Gandhi underlined the keynote of women in freedom movement and Swaraj he said : "The women of India should have a much share in winning

swaraj as men. Probably in this peaceful struggle women can outdistance man in many mile. We know that she is any day superior to men in her religious devotion silent and dignified suffering in the badge of her sex. And now that the government had dragged the women into the line of fire, I hope that the women all over India will take up the challenge and organize themselves"<sup>4</sup>.

Women according to him, were as integral part of the movement as non-violence. According to him, "If non violence is the law of our being, the future is with women. If the women of India across, no one"<sup>5</sup> could stop the country's march to freedom.

The constitution of India that was adopted in 1950 guarantees equal opportunity for participation in politics to both men and women. Women were given this right equally with men in recognition of and as a follow up to the massive role played by them in the freedom struggle.

The preamble to the constitution of India resolves to secure to all its citizens justice, social and economic and political liberty of thought expression, belief, faith and workshop; equality of status and opportunity and to promote among them all fraternity, assuring the dignity of all individuals and unity of nation.

With the advent of democracy in India, women and India had the means to develop their power. When one reflects upon the presence of women representatives in the corridors of power, on can't ignore the fact that we had a women Prime Minister who had Olympian position in her nations political system.

Inaugurating International Women's Year, Mrs. Indira Gandhi called women 'the largest minority' Women may not be numerically a minority but as Tara Ali Bag has pointed out, they acquired the features of a minority

community by the three recognised dimensions of inequality of class (economic situation) status (social position) and political power<sup>6</sup>.

Leadership and performance of women chief ministers is evaluated on the basis of them providing with political stability, law and order, social welfare, corruption free administration, employment generation, control over bureaucracy, eradication of illiteracy and poverty, quality education, access to good health services, Industrial and cultural development, social security, transport and communication, energy sector, water conservation, sustainable development, food security, financial development, planning, dealing with the opposition.

Relationship with the governor and the prominent leaders of the state and relations with the centre and the party high commands of their respective political parties<sup>7</sup>.

Political Stability and different women CM's and their roles. Miss Mayawati – She had 2 different tenures. 1st tenure she had a coalition government. But presently she is running a full majority government and this

government is politically stable. Sheila Dixit ji is having great political stably sense that 3 tenures. As the second woman chief minister of Delhi, she has completed her full term in both assemblies.

Dr. Jayalalitha in her political journey when Shri M.G. Ramachandran died in December 24, 1987 without declaring her political successor. Consequently, the AIADMK party splitted and Jayalalitha's led political faction secured 27 seats in the assembly elections, and this she became the First woman leader of the state. During her regime, thus she could restore political stability in the state political.

Mrs. Rabari Devi emerged as the first women Chief Minister of Bihar. It was a great political crisis for her during her regime. She overall successful in mainstreaming political politics.<sup>8</sup>

Role of woman in Indian politics is presently on hold because of the delayed decision regarding. Women reservation bill which is yet to be presented in Lok Sabha. But, I surely believe that since the very start of human civilization till present day. Women's role is gradually marking it's importance in politics.

### References:-

1. *Geraldine forbes, 'Indian women and the freedom movement : A historian's perspective', Research center for women's studies, SNDT Women's University, Mumbai, 1997, P. 56.*
2. *J.K. Chapra, 'Women in the Indian Parliament' mittal publications, New Delhi, 1993, p. 14.*
3. *Stri Dharma, December 1927*
4. *Mahatma Gandhi; young India, Dec. 15, 1921 quoted by Aparana Basu in 'The role of women in the India struggle for freedom', p. 16.*
5. *Ibid, op. cit. p. 16.*
6. *ECl dot. govt. dot. in*
7. *Shukla, A.K., Women Chief Minister contemporary India APH Publishing Corporation, Delhi, 2007, P. 121*
8. *Ibid, p. 128.*

## Civil Society & Social - Economic vision of Indian Liberals

**Dr. Rakhi Yadav**

Lecturer, Baba Bhawandas Govt. College, Chimanpura

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

Liberalism visualized a social order, an economic and political system which provided every individual with a decent standard & life. It stood for the reign of law as against the reign of discretion and proclaimed that freedom of thought, speech and association are vital for the growth of an individual. The liberal view of Indian society found its fullest expression in James Mills classic "History of British India, first published in 1818. Mill set himself the task of ascertaining India's true state in the "scale of civilization". For Mill the criterion of utility was the measure of social progress. Liberty of thought is closely connected with freedom of Religion. Since the liberals regarded religion as a personal affair of the individual, one's religion according to the liberal view was the concrete expression of a personal attitude to life, to one's kind, to nature, world, God etc.

We owe to liberals the first protest against the "economic drain" to which the country was subjected under British rule. Swadeshi, was a liberal expedient which later formed the chief plank of the Gandhian programme. Liberals believed in socialism and were opposed to revolutions and communism. They wanted state control over economic matters. Their economic vision aimed at finding a solution of the problem of Indian poverty. They wanted state control over economic matters. Their economic vision aimed at finding a solution of the problem of Indian poverty which the unfair policy of the British Government it had accentuated. Increasing contact with the more advanced economic and political thought of the west created favourable conditions for the rise of liberalism in India.

In the realm of civil society of liberals, man is not free when he is controlled by other men but only when he is controlled by principles and rules which whole society should obey. One cannot be called free if one does not avail liberty to exchange thoughts. Social liberalism of liberals demanded freedom to exchange thoughts, freedom of speech, freedom to oppose whatever was evil or against humanism.

For the first thirty years of its existence the liberal party i.e. congress was controlled by people who belonged to upper middle class. Dada Bhai Naroji, S.N. Banerjee, M.G. Ranade, D.E. Wacha, Gokhale they all were highly educated and westernized, who stood for social reform and representative government. These leaders of early congress were full of admiration for British history and culture and tried to get rid of the evils of society through the lights of the west.

In social sphere, liberalism supported a national system of free education and wanted the recognition of the talent of an individual. In the field of society

and religion, liberal tendency can be dated in India from the age of Upanishads and Buddhism. During the British period Indian liberals position mirrored the colonial mind. They undertook the task of reforming the society and its religious practices by keeping in mind the core principles of Hindu traditions but at the same time, though influenced by western modernity, they tried to adjust to the colonial constructs of Indian tradition. During the nineteenth century, India witnessed a disintegrating society surrounded by evils like sati, widow hood, child marriage, untouchability, purdah and many others. Liberals took the task of ameliorating the Indian society of its evils, some of which were deep rooted in Indian traditions. They made humanistic pleas to enlighten the society. Their contact with Christianity and western free trade thinking made them more liberal and moderate. Although liberals looked towards the British government for support and direction and post Enlightenment rationality shaped their mind but they didn't forget their Indian Identity. There was inherent compulsion in the liberal thought to construct a modernity that would be located within Indian culture and religion.

Raja Ram Mohan Roy inaugurated various social movements which constituted the whole of national activity at that time. He tried to rescue people from superstition and obscurantism. To restore its hoary faith to the motherland and to purify society of its evils, Ram Mohan established Brahma Samaj in 1828. This samaj worked as a lever of liberal thought in 19th century India. It represented a comingling of Eastern and western thought, which fertilized by logical necessity, all contemporary social and political activity, it trained our early leaders on corporate activity and it became the central laboratory of all social reforms in the country. It nourished the nationalist sentiment and paved the way for the later demand for political reforms also.<sup>1</sup>

Promotion of English education was another contribution of Raja to the growth of liberalism in India. In the sphere of social reform Raja Ram Mohan Roy created a platform which Indian Liberals were to follow in later India. Raja believed that social freedom is equally important as political liberty. His greatest contribution in the field of social reforms came in the form of Act of abolition of Sati which declared Sati system as illegal. Raja had a clear impression of the contemporary England.

Just like Brahma Samaj movement, Prarthna samaj (1867) also favoured monotheism, denounced idolatry, priestly domination and caste distinctions. Though its founder president was Atmaram Pandurang but real spirit behind it was Mahadev Govind Ranade, another great liberal star of the "Liberal Galaxy". "The peculiar feature of the movement in (Bombay) presidency, Ranade pointed out, was that its goal was not to break with the past and cease all connection with our society."<sup>2</sup>

Hindu college also became the nursery of liberalism in India. The students of this college encouraged expansion of English education and wanted to use it as a tool to eradicate the evils of the country. They believed that if their countrymen

are properly educated then only they can participate in the administration of their nation. They favoured free and compulsory education and desired that technical and scientific education should be imparted to the citizens of India and recommended the translation of English books into the vernacular. Though, the India of the nineteenth century was more concerned with religious reform but the Indian liberals throughout maintained a secular outlook. The liberals were against all kind of restraints on an individual in society - Ranade said, "the work of Reform is really the work of Liberation - Liberation from the restraints imposed upon an essentially superior religion, law and polity, institutions and customs, by our surrender to the "Pressure of mere brute force for selfish advancement."<sup>3</sup>

Another great contribution of the liberals to the Indian society was the Indianisation of services. They felt that exclusion of Indians from the services had created "moral poverty" and through the Indianisation of the services, Indians could be put on equal footing with the British officials. They were against the negative functions of the state and wanted that state should undertake social reform, fix the age of marriage, promote education, and eradicate poverty and inequality from the society. Telang, Ranade, Bhandarkar, Gokhale all worked for social reforms as much as for political liberty of the Indian people. They admitted the necessity of social reforms but as a practical statesman, they knew that a socially backward society was an obstruction in the political advance of a nation. Since the days of Rajaji, these liberal leaders addressed themselves to the task of social reform.

**Economic Vision Of The Indian Liberals:-** With the advent of British rule the general economic condition of the masses deteriorated. English education helped Indians in understanding the ideal of economic liberty and how the Indians could reckon the fact that British rule was destroying India economically. When the congress originated, there was rise in the spirit of economic nationalism. Liberal leaders of India took it their responsibility to enlighten the Indian masses of the destroying character of the British rule and to awaken the people to the fact that British rule ruined the Indian economy to its core.

Naraji was the first liberal to bring into light the main Economic problem of India "Poverty" through his famous book Poverty and Un-British rule in India"<sup>4</sup>. He demanded the annual estimates of per capita income for British India and argued that unless complete information was made available every year, it was totally useless to say that India was prospering. According to Naraji, the main cause of Indian poverty was the exhaustion of the precious wealth his greatest contribution in the economic field was his drain theory. In the opinion of J.S. Mill "it was an exhausting drain upon the resources of the country: It was an extraction of the life blood from the vein of national industry which no subsequent introduction of nourishment is furnished to restore."<sup>5</sup>

M.G. Ranade, was another liberal leader who was against any kind of absolutism and held that traditional assumptions of economic theory were true only for England. He observed, "The nations economic education is of far more

importance than the present gain of its individual members, as represented by the quantity of wealth measured by its value in exchange".<sup>6</sup> These liberals were great economists who believed that state was responsible to undertake those functions which were related to public welfare. All the liberal economists believed that Indian poverty had increased under the British rule and to make India prosperous they suggested a well planned development of agriculture, industry and commerce. All the Liberal leaders touched different aspects of the British ruination of Indian economy.

Sir Dinshaw wacha criticised the currency and railway policies of the British government and suggested measures for the betterment of the economic condition of the masses. Liberal leaders wanted that Indians should be made consonant with statistics and economics - R.C. Dutt held the view that politics and economic phenomenon were interdependent and that the social and economic equilibrium was necessary for a smooth political development. He analysed the causes of acute poverty of the Indians and reflected on the point that the sources of the national wealth in India had been narrowed under the British rule.

Liberals combined economics, politics, history and law in their system of economic thinking. They suggested a number of fruitful measures to eradicate the germs of poverty from the Indian soil and outlined a scheme of complete overhauling of the economic structure of Indian society. Gokhale's speeches on budget were a masterpiece of his wisdom. His study of financial control in India was his greatest contribution. He stressed that Indian revenue should be spent within India and not outside India and he advocated provincial autonomy so that more money might be spent on the welfare of the people. He criticised the growing expenditure on the army whose burden was carried by poor tax payers. He emphasised the need for a systematic public expenditure that could contribute to the amelioration of the economic conditions of the country.

Liberals pleaded for the economic liberty of the India and laid emphasis on the importance of India in international economy. Liberal leaders welcomed the spirit of internationalism but they warned against the dependence on foreign aid and foreign experts. They wanted that people should be trained in the skills which are necessary for the economic development of the country, and at the same time asked Indians to develop national consciousness. Their dream was socialism where there is end of exploitation of man by man and there is equal distribution of resources.

#### References:-

1. B.D. Shukla, "A History of Indian Liberal Party" (Allahabad 1960) Page 36.
2. Quoted in Heimsath 1964: 108 page C.H. Heimsath, 1964 *Indian Nationalism and Hindu social reform*, princeton: princeton university press.
3. Address at Sixth Anniversary of Modern Hindu social Reform Association (Dec. 28, 1898).
4. Speeches and writings of Dada Bhai Naroji (1917) P-37.
5. J.S. Mill: *History of India* Vol. V, P-671.
6. M.G. Ranade: *Essay on Indian Political Economy*, P-19.

## A Light on the Agriculture Strategies of Ganeshwar-Jodhpura Culture

Dr. Vineet Godhal

Assistant Professor, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

Now it is well established that the economy of the chalcolithic people's was based on subsistence agriculture, stock raising and hunting fishing. They reared cattle, sheep, goat, buffalo pig etc. There is no doubt that fish formed an important part of the diet of the chalcolithic people as is evident from fish bones and fish hooks. Hunting also was equally important and the people had developed a weakness for venison. Wild pig too occurs. The domesticated animals were slaughtered for food but whether their milk was consumed or not, may not be said properly.

The palynological researches from salt lakes of Lunkaransar, Sambhar, Didwana in Rajasthan and a few soil samples from early Harappan levels of Kalibangan indicate that the time span of 3000 BC to 1800 BC, was the period of maximum wetness and it was that time when early Harappan and also mature Harappan cultures flourished in the part of Rajasthan, Haryana, western Uttar Pradesh and some parts of Gujarat also. This period of wetness may be attributed to high rainfall and presence of the floral and faunal diversity. North east Rajasthan was no exception of this climate factor. During the early Harappan period the vegetation consist of Acacia (Babul), Tectona grandis (Teak), Dalbergia (Sisham), Anogeissus sp. (Dhak) which is attested by the charcoal samples leading to the presumption that besides using the timber of these trees for construction purposes, it was also use for agricultural implements (Lal et al. 2003). Availability of copper celts indicates that these were used for woodcutting and offence. The wet climate is also attested by the faunal remains of Rhinoceros unicornis (rhinoceros), Bubalus bubalis (bison), Elephas maximus (elephant), Chitra indica gray (river turtle), canis familiars linn (dog), Equus heminus pallas(Ass), Cervus duvauceli (Deer), Cervus unicolor (Barasingha), Axis axis (spotted deer), Sus scrofa (Domestic pig), Bos indicus (Cattle), Capra hircus algagus (Neel gai), telestoi fish etc. a large number of cattle bones from early Harappan sites and other chalcolithic sites suggests the raising of live stock dependent on wide stretches of pasture lands of that region. Ganeshwar-Jodhpura cultural sites were not exception of this. Probably fowls were also domesticated and fish eaten.

In this ecological scenario, the subsistence pattern consisted rising of livestock coupled with agriculture, although we have no any evidence of agriculture from Ganeshwar or Jodhpura, due to excavation on a limited scale.

Definitely bullocks were used for agricultural practices. The occasional flooding of the Kansawati and Sahibi which brought rich and alluvial soil added to the productivity and fertility of the soil.

According to the excavators of the sites, they argued that hunting was the primary form of subsistence due to the large quantity of arrowheads found (Kumar 1985: 5-15). The excavation reports claim evidence for cut marks on the bones of cattle, fish, fowl, sheep, goat and wild animals, with additional evidence of charring suggesting some form of cooking. It has also been noted that bone marrow extraction is also evident from the faunal remains at Ganeshwar (IAR 1983-84: 72). The presence of cut marks on these bones and their charred condition indicates that cattle played a vital role in the food economy of the region since Mesolithic period. Smaller domestic animals like sheep and goat also contributed to the food economy. Besides dietary use, all these animals might have been used in agricultural operations, obtaining dairy products etc. Their presence strongly suggests an agriculture based subsistence economy which was supported by pastoralism. The occurrence and paintings of aquatic animals like fish indicates exploitation of riverine animal resources during chalcolithic period. The overall faunal evidence has helped show that during that time in particular the Sahibi and Kansawati River and its tributaries contained sufficient water to help support animal husbandry and stock rearing at many settlements.

It is also significant to note that the reports also include information about structural features that include mud platforms with partitions storage pits and house floors with post holes, although we haven't any information about their sizes. A deposit of burnt material appears to be an indication of fire at various level of occupation (IAR 1983-84: 71-72). Storage pits suggest the existence of a certain amount of surplus of grain. A large number of mortar and pestle, saddle querns, and other grinding stones suggest that there was, in fact agricultural subsistence strategies in place.

In the 1980s, an Indo-French Archaeological Expedition (IAR 1983-84: 95-98) was conducted for study the archaeological sites in relation to their archaeological setting, and particularly to study the ancient drainage system and to locate ancient artificial irrigation systems if any, especially during the proto-historic period when a supply of water was required to grow winter crops. The area investigated was situated along apportion of the Chautang palaeo-channel and in neighbouring regions in the districts of Hisar, Bhiwani, Mahendragarh, Rohatak all in Haryana and of Churu, Jhunjhunu and Ganganagar all in the state of Rajasthan. This team consisted of R.S. Bisht, M.A. Courty, H.P. Francfort, P. Gentelle, K.P. Gupta, V. Roux, and A.K. Sharma, J.R. Batra, A.K. Sinha, Puran Singh and Shivanath Singh also assisted this team. The work was devoted to a general overview of the area, including a visit to the already well known sites like

Kalibangan, Banawali, Siswal, Mithathal, Agroha, Ganeshwar, Jodhpura, Didwana, Paoli and Rakhigarhi. In 1983, investigations were carried out in the Kantli and Dohan valley. The Dohan and the Kantli originated in the Aravalli hills near Neemkathana to flow respectively in north-north-eastern and north-north-western directions through a rugged landscape forms of the stabilized sand dunes which might have been under the cover of semi-deserted forest. The thick mantle of water starved sandy soil over the entire catchments area and the poor rainfall which might have not been. Appreciably higher over the last five thousand years fairly demonstrated that those were not perennial rivers playing any significant role. The archaeological finds collected from certain areas in either system are definitive pointers towards the presence of viable settlement patterns during proto-historic times. R.C. Agrawala located about 42 prehistoric sites in the Kantli. But the survey conducted by K.N. Dikshit as well as by this expedition demonstrated that the lower reaches of the Kantli beyond Sunari and Dohan are not teaming with the copper age or Iron Age or early historical sites. As far as continuation of these rivers further northwards so as to meet a river of the Ghaggar system is concerned, it appears that its possibility is remote and bleak. Information was also collected about the history of the dune formation and evolution in relation to the river system and human settlements in the area. Sixty nine well and nine sections were also examined and soil samples were also taken for various analyses. During the analyses, following points emerged in the preliminary attempt:

- The natural drainage system of the area dried up during early Holocene.
- Dried phase followed during which dunes were formed and the river palaeo-channel was progressively filled up by aeolian deposits and monsoon flooding.
- The major alleviation phase was over before the Pre-Harappan period; sites n. 144, 197 for instance, are lying upon 8-10 meter of deposits of filling the palaeo-channel.
- No import alleviation occurred since this period except locally by monsoon floods in the Bhadra depressions.
- Soils of different fertility were cultivated by the population of various periods from proto-historic times.

More than 200 sites belonging to different periods were visited during this expedition. Proto-historic sites were found mostly to the north of the explored area but not in the Kantli and Dohan valleys or in neighbouring sands. They included Pre-Harappan to late Harappan and PGW cultures. Their distributional pattern show that they were certainly located along the branches of irrigation canals as they were in lines not necessarily following the palaeo-channel of Chautang. During this expedition, fourteen villages were visited

among one Malkhaira, tehsil Bhadra and district Ganganagar in Rajasthan was selected for an in depth inquiry. Data were also collected about traditional agricultural practices on soil of various fertility in areas irrigated and non-irrigated. This report also suggests that during the Pre-Harappan time there were agricultural subsistence was practiced in this area.

All the evidences in the form of storage space, grinding stones, and saddle querns, in addition to the favourable conditions for agriculture based on the climate indices and the suggestion of irrigation canals, all index the possibility of agriculture as a form of subsistence.

### References:-

1. *Indian Archaeology-A Review: 1983-84: 71-72, 95-98.*
2. *Kumar, Vijai. 1985. Ganeshwar-Jodhpura Culture The Antecedents of Copper Age in India. The Researcher XIV-XV: 5-15.*
3. *Lal, B.B., B.K. Thapar, J.P. Joshi and Madhu Bala. 2003. Excavations at Kalibangan-The Early Harappans (1960-1961). Delhi: Archaeological Survey of India.*

## National Policy for Empowerment of Women

### Dr. Madhu Parashar

Principal Shanti Niketan College of  
Business Management and Computer Science, Agra (Uttar Pradesh)

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

**W**omen in India now participate in all activities such as education, sports, politics, media, art and culture, service sectors, science and technology, etc. Indira Gandhi, who served as Prime Minister of India for an aggregate period of fifteen years is the world's longest serving woman Prime Minister.

The Constitution of India guarantees to all Indian women equality (Article 14), no discrimination by the State (Article 15(1)), equality of opportunity (Article 16), equal pay for equal work (Article 39(d)). In addition, it allows special provisions to be made by the State in favour of women and children (Article 15(3)), renounces practices derogatory to the dignity of women (Article 51(A)(e)), and also allows for provisions to be made by the State for securing just and humane conditions of work and for maternity relief.

In 1990s, grants from foreign donor agencies enabled the formation of new women-oriented NGOs. Self-help groups and NGOs such as Self Employed Women's Association (SEWA) have played a major role in women's rights in India. Many women have emerged as leaders of local movements. For example, Medha Patkar of the Narmada Bachao Andolan.

The Government of India declared 2001 as the Year of Women's Empowerment (Swashakti). The National Policy For the Empowerment of Women came was passed in 2001.

In 2010 March 9, one day after International Women's day, Rajyasabha passed Women's Reservation Bill, ensuring 33% reservation to women in Parliament and state legislative bodies.

**Women in Educational Field:-** Though it is gradually rising, the female literacy rate in India is lower than the male literacy rate. Compared to boys, far fewer girls are enrolled in the schools, many of them dropout. According to national sample survey data of 1997, only the states of Kerala and Mizoram have approved universal female literacy rates.

Under Non- Formal Educational Programme (NFE), about 40% of the centers in states and 10% of the centers in UTs (Union Territories) are exclusively reserved for females. As of 2000, about 0.3 million NFE centers were catering to about 7.42 million children, out of which about 0.12 million were exclusively for girls.

According to a 1998 report by U.S. Department of Commerce, the chief barrier to female education in India are having inadequate school facilities such as sanitary facilities, shortage of female teachers.

**Workforce participation:-** In urban India Women have impressive number in the workforce. As an example at software industry 30% of the workforce is female. In rural India, agriculture and allied industrial sectors employ as much as 89.5% of the total female labour. In overall farm production, women's average contribution is estimated at 55% to 66% of the total labour. According to a 1991 World Bank report, women accounted for 94% of total employment in dairy production in India.

One of the most famous female business success stories is the Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad. In 2006, Kiran Mazumdar-Shaw, who started Biocon - one of India's first biotech companies, was rated India's richest woman. Lalita Gupte and Kalpana Morparia (both were the only businesswomen in India who made the list of the Forbes World's Most Powerful Women), run India's second-largest bank, ICICI Bank.

**Land and Property right:-** In 1986, the Supreme Court of India ruled that Shah Bano, an old divorced Muslim woman was eligible for maintenance money. The Union Government subsequently passed the Muslim Women's (Protection of Rights Upon Divorce) Act.

**Dowry:-** In 1961, the Government of India passed the Dowry Prohibition Act, making the dowry demands in wedding arrangements illegal. In 1985, the Dowry Prohibition (maintenance of lists of presents to the bride and bridegroom) rules were framed. According to these rules, a signed list of presents given at the time of the marriage to the bride and the bridegroom should be maintained.

A 1997 report claimed that at least 5,000 women die each year because of dowry deaths, and at least a dozen die each day in 'kitchen fires' thought to be intentional.

**Child Marriage:-** Although child marriage was outlawed in 1860, it is still a common practice. According to UNICEF's "State of the World's Children-2009" report, 47% of India's women aged 20-24 were married before the legal age of 18, with 56% in rural areas.

**Female infanticides and selective abortions:-** All medical tests that can be used to determine the sex of the child have been banned in India, due to incidents of these tests being used to get rid of unwanted female children before birth. Female infanticide (killing of girl infants) is still prevalent in some rural areas. The abuse of the dowry tradition has been one of the main reasons for sex-selective abortions and female infanticides in India.

**Domestic violence:-** The incidents of domestic violence are higher among the

lower Socio-Economic Classes (SECs). The Protection of Women from Domestic Violence Act, 2005 came into force on October 26, 2006.

**Notable Indian Women:-** Singers and vocalists such as M.S. Subbulakshmi, Gangubai Hangal, Lata Mangeshkar and Asha Bhosle, and actresses such as Aishwarya Rai, are widely revered in India. Anjolie Ela Menon is one of the famous painters.

**Sports:-** Some of the famous female sportspersons in Indian include P. T. Usha, J. J. Shobha (athletics), Kunjarani Devi (weightlifting), Diana Edulji (cricket), Saina Nehwal (badminton), Koneru Hampi (chess) and Sania Mirza (tennis). Karnam Malleswari (weightlifter), is the only Indian woman to have won an Olympic medal (Bronze medal in 2000).

**Politics:-** Through the Panchayat Raj institutions, over a million women have actively entered political life in India. As per the 73rd and 74th Constitutional Amendment Acts, all local elected bodies reserve one-third of their seats for women. Although the percentages of women in various levels of political activity has risen considerably, women are still under-represented in governance and decision making positions.

**Literature:-** Many well known women writers are in Indian literature as poets and story writers. Sarojini Naidu, Kamala surayya, Shobha De, Arundhati roy, Anita Desai are some of them. Sarojini Naidu is called the nightingale of India. Arundhati Roy was awarded the Booker Prize (Man Booker Prize) for her novel The God of Small things.

**Measures should be take for women's advancement:-** After independence various committees are constituted to upgrade the women status, such as National Committee on women's Education (1958), National Council of Women's Education (1959), Hansa Mehta Committee (1962), Acharya Ramamurti Committee (1990) and Women Education and National Education Policy (1986) The National Commission for women (1990).

These Committees suggest that care should be taken to see but no step is taken which will tend to perpetuate or intensify the existing difference and there should be not need in such a society to differentiate curricula on the basis of sex.

The constitution not only grants equality to women but also empowers the state to adopt measures of positive discrimination in favour of women. Within the framework of a democratic polity, our laws developmental policies, plans and programs have aimed at women's advancement in different spheres. From the fifth five year plan (1974-78) onwards has been a marked shift in the approach to women's issues from welfare to development.

In recent years the empowerment of women has been recognized as the central issues in determining the status of women. In order to secure equal rights

of women, the ratification of the Convention on Elimination of all forms of Discrimination on Against Women (CEDAW) in 1993 is followed.

The women's movement and a wide-spread network of non-Government Organizations which have strong grass-roots presence and deep insight into women's concerns have contributed in inspiring initiatives for the empowerment of women.

However, there still exists a wide gap between the goals enunciated in the Constitution Legislation, policies and plans. This has been analyzed extensively in the report of the committee on the status of women in India, "Towards equality, 1974 and highlighted in the Million of perspective plan for women, 1988-2000, the Shramshakti Report 1988 and the platform for action, five year assessment."

The access of women particularly of those belonging to weaker sections including Scheduled Caste/ Scheduled Tribes / Other Backward Classes and minorities, majority of whom are in rural area to education, health and productive resources is inadequate. Therefore they remain largely marginalized, poor and socially excluded.

Legal-Judicial System should be made more responsive in cases of domestic violence and personal assault. Existing laws reviewed to ensure that Justice is quick and the punishment met out to the culprits is commensurated with the severity of the offence. The policy would aim to encourage changes in personal laws related to ownership of property and inheritance by evolving consensus in order to make them gender just-

It is evident that there is a need for reforming policies for access to employment and equality of employment strategies will be designed to enhance the capacity of women and empower them to meet the negative social and economic impacts, which may flow from the globalization process.

The important role played by women in electronics, information technology and food processing and textile has been crucial to the development of these sectors. They should be given support in terms of labour legislation, social security and other support services to participate in various industrial sectors.

The most important thing is that women at present can not work in night shift. Suitable measures should be taken to enable women so work on the night shift in facilities. This should be accompanied with support service for security, transportation etc.

Equal access to education for women and girls will be ensured special measures should be taken to eliminate discrimination, universalize education, eradicate illiteracy. Reducing the gender gap in secondary and higher education should be a focus area. Sectoral time targets in existing policies should be achieved with a special focus on girls and women, particularly those belonging to

weaker section including the Scheduled Castes / Scheduled Tribes/ Other Backward Classes/ Minorities. Gender sensitive curricula would be developed at all levels of education system in order to address sex stereotyping as one of the causes of gender discrimination.

Programs should be strengthened to bring about a greater involvement of women in science and technology. So special measure should be taken for their training in areas where they have special skills like Communication and Information Technology.

In recognition of the diversity of women's situation, specially disadvantaged groups. Measures should be undertaken to provide them special assistance. A special emphasis will also be laid on trafficking in women and girls.

Thus for upgrading the women the existing legislative structure will be reviewed to implement the policy. In brief following other measures should be promoted to implement the legislation effectively-

- Strict enforcement of all relevant legal provisions and speedy redressal of grievances will be ensured with a special focus on violence and gender related atrocities.
- Measures to prevent and punish sexual harassment at the place of work, protection for women workers in the organized / unorganized sector and strict enforcement of relevant laws such as Equal Remuneration Act and minimum wages Act should be undertaken.
- Women's cells in police stations, mahila courts, legal aid centres and Nyaya Panchayats will be strengthened and expanded to eliminate violence.
- Widespread dissemination of information on all aspects of legal rights, human rights and other entitlements of women, through specially designed legal literacy programmes and rights information programmes should be done.
- Promoting societal awareness to gender issues and women's human rights.
- Review of curriculum and educational material to include gender education and human rights issues.
- Removal of all references derogatory to the dignity of women.
- Use of difference forms of mass media to communicate social messages relating to women's equality and empowerment.

### References:-

1. *Hiscock, Geoff (2007). India's global wealth club, John wiley and sons. P.6 ISBN 0470822384.*
2. *Chhabra, Aseem ( 9 February 2005). " Ash does live on letterman." Rediff.com/ http://in.rediff.com/2005/feb/09 ash.htm. Retrieved 2009-05-09.*

3. *Rajya Sabha passes women's Reservation Bill.* Chennai, India : *The Hindu*, 2010-03-10. <http://hindu.com/2010/03/10/stories/2010031050880100.htm> Retrieved 25 August 2010.
4. Jaypalan (2001). *Indian Society and social institutions*. Atlantic Publishers and Distributors. P.145 ISBN 9788171569256 <http://books.google.co.in/books?id=9vol1451qowc&pg=PA145>.
5. Mishra, R.C. (2006) *Towards Gender Equality*. Author press ISBN 81-7273-306-2. <http://www.vedamsbooks.com/no.43902.htm>
6. R.C., Majumdar and A.D. Pusalkesr (editors); *The history and culture of the Indian people, Volume I, the vedic age* Bombay; Bharatiya Vidya Bhavan 1951, p.394.
7. *The commission of Sati (prevention) Act. 1987.* <http://www.wed.nic.in/commissionofsatipreventions.htm> Retrieved 2006-12-24.
8. Dubois, Jean Antoine and Beauchamp Henry King. *Hindu Manners, customs, and ceremonies*, Clarendon Press, 1897.
9. Kalyani Menon- Sen A.K. Shiva Kumar (2001). "Women in India; How free? How equal?" United Nations. Archived from the original on 2006-12-24.
10. *The Dowry prohibition Act, 1961.* <http://www.wed.nic.in/dowryprohibitionact.htm>. Retrieved 2006-12-24.

## The Problem of Gender

**Prashant Kumar Mishra**

Research Scholar, Delhi University,  
Delhi

**Shodh Shree**



shodhshree@gmail.com

The problem of gender-based violence is getting worse. National Crime Record Bureau statistics show crimes against women increased by 7.1 percent nationwide since 2010. There has been a rise in the number of incidents of rape recorded too. In 2011, 24,206 incidents were recorded, a rise of 9 percent from the previous year. More than half of the victims are between 18 and 30 years of age.

Figures indicate that 10.6 percent of total victims of rape were girls less than 14 years of age, while 19 percent were teens between the ages of 14 and 18. Alarming in almost 94.2 percent of cases offenders were known to the victims and those involved included family members, relatives, and neighbours.

Under the IPC (Indian Penal Code) crimes against women include rape, kidnapping and abduction, homicide for dowry, torture, molestation, sexual harassment, and the importation of girls.

Kidnapping and abductions are up by 19 percent and trafficking rose by 122 percent in the same period. Crimes that include the Indian term "eve-teasing" or harassment and heckling and sexual innuendoes against women in public places including streets, public transport, cinema halls, along with the rape of minors and women in tribal and villages often go unreported and unrecorded.

According to records, Madhya Pradesh, a state with a large population of tribes, has recorded 3406 rape cases, the highest number of incidents in the country in 2011. India's profile as an emerging modern nation has taken a beating by the recent rape case, as widespread gender-based violence has been exposed.

**Archaic laws:-** Legal experts point out that many rapes go unreported. Due to "family honour" many complaint files are withdrawn and in many cases the police do not give a fair hearing. Medical evidence is often unrecorded making it easy for offenders to pass scot free under prevailing laws.

Outside of legal rooms it is not uncommon in India's interior villages and hamlets for local kangaroo courts to advise the woman to marry her rapist to "preserve her honour". In some cases, rape can be used to settle caste issues and local disputes.

The maximum sentence for a rapist found guilty remains unclear under prevailing laws. The maximum sentence includes seven years of life imprisonment, or up to ten years. For those guilty of gang-rape, rape of a pregnant woman and related offenses the maximum for the guilty is 10 years.

Even as lawmakers argue merits of the death sentence for rapists would

bring down the number of rapes in the country, there are those who warn that it may lead to men killing women after rape to avoid death penalty. Protesters are demanding that the government amend its archaic rape laws.

**A culture of patriarchy:-** While any reform or affirmative action is welcome according to analysts India's problem with rape has to do with deep rooted traditions of patriarchy, misogyny and repressive attitudes that prevail across classes.

The writer Rahul Roy in the blog *Kafila* explains, "Masculinities provide an ideological basis for impunity to be legitimised and practiced. And crime against women comes that much easier because to be truly masculine men have to carry both a fear and hatred of the feminine close to their heart."

While the reasons for rape in villages and tribal areas are attributed to caste, honour, family wars and repressive attitudes, India's big cities are also grappling with more women entering the public space, thanks to education or jobs and the influx of migrants from villages who come seeking work.

The conflict of accepting women entering bars or dressing in non traditional Indian clothing, making independent choices, and refusing male attention are all seen as threats and provocation that need to be contained in big cities in India, says Asavari Singh, a gender and media studies professional.

Activists argue that the rising number of women parliamentarians and the presence of many high profile women in India's political parties and public offices will remain only cosmetic if effective laws and mindsets are not altered to safeguard ordinary women.

**Gender insensitivity:-** Gender insensitivity has badly taken its roots in the state of Haryana. The spurt in crime against women in Haryana has almost earned it the sobriquet of being "the rape state of India." Statistics reveal that a total of 686 rapes were committed in the state of Haryana in 2012.

The bizarre dictates of Khap Panchayats and the lack of political will to tame Khap Panchayats has led to a sharp rise in crime against women. The famous Shruti kidnap case of Punjab, those who were assigned to task to crack the case, displayed insensitivity of the highest order towards the kidnapped girl. Her kidnapping was unabashedly reduced to a mere case of elopement and the photographs of her marriage to the prime accused were released to the press. This was in direct contravention of apex courts' directives. This blew the reputation of the victim and their parents to pieces. But, who cares? Gender insensitivity is so high and prevalent in our society that girls' who eloped with their lovers find it hard to make a new beginning in their lives after the courts sent their imprisonment to their lovers. As per the report, there are more than 70 girls in two shelter homes- Nari Niketan, Jalandhar, and care centre, Amritsar who have been deserted by their families, relatives and society after the court sent their lovers to jails.

The beating up of a girl by the policemen in full public view in Tarn Taran

reflects the beastly attitude of police towards fair sex. Intoxicated with power and feudal tendencies, the Khaki displayed its brutal face towards fair sex. The bizarre statement made by a cabinet Minister of Raipur with regard to Kankar (Chhattisgarh) rape case in which he held the stars of the rape victims responsible for their plight is both irresponsible and highly insensitive. Parliamentarians have finally shown seriousness in tackling crime against women. They have urged the government to add 166A in the IPC to make rape cognizable, non-bailable and punishable crime. The other points that were seriously considered by them were: - imparting moral education; ragging as an offence, Vetting of films/T.V programmes by I & B Ministry and completion of trial in rape cases within two months of filing the charge sheet in a fast track court. Though the bill concerning sexual harassment of women at workplace (Prevention, Prohibition and Redressal) has been passed by the parliament, yet a lot needs to be done to stop crime against women. Though it is welcome initiative and both the government and parliament deserve appreciation for it, there are a few loopholes in the bill that need to be plugged. The anti-rape law passed by the parliament is too a step in the right direction; though reservations against a few provisions on this law have been voiced by parliamentarians.

The setting aside of Rs. 1,000 crore in the Union Budget as 'Nirbhaya Fund' in the backdrop of a tragic rape and subsequent death of a paramedic in capital for the security of fair sex is a highly appreciable move. Gender equality is a myth in Indian society. Girls' are not being considered at par with boys. Son-fixation is a reality in our society; and this evil fixation has led to victimization of girl children. The skewed sex ratio is a sad pointer to this hard fact. They are aborted in the womb; and if they survive, they are made to undergo a plethora of hardships ranging from manual labour to sexual abuse. They are being discriminated against both culturally and linguistically. They are being nicknamed as "Autri (bad), Nakushi (unwanted), Churail (witch) etc. In English language too 'a governor' is a honourable word but 'governess' is a detestable word.

Sexuality is one of the most sensitive instincts of the human nature. This in fact is a highly constructive instinct of the human race. It will have both positive and negative effects on the psychological and physiological life of the human beings. Many acts of the human beings and the causes of several physical and psychological ailments can be attributed to this instinct. If the upbringing of the individual takes place in a proper and thoughtful manner, the instinct of sex can prove a boon for the welfare and contentment of the person. But if the upbringing is in an atmosphere of lechery, lasciviousness and excesses, there is every probability that the instinct of sexuality might become the cause of many physical and psychological aberrations that can become definite cause of ultimate destruction of the person in this life and Hereafter. It is not proper to think that the instinct of sexuality manifests itself only after puberty. The instinct will be present in every individual since birth; however, it remains dormant for quite some time. Even then, it manifests itself at different times during the childhood in a subtle way. Sometimes small children fondle their genitals and feel pleasure. This creates in them a sort of emotion. They feel the pleasure when the parents caress and kiss them. They feel attracted towards beautiful persons and things, and sometimes they express these feelings in words too. At the age of two

or three years the

Children start distinguishing between boys and girls and look at one another's private parts with deep interest. When they grow up a little, they are attracted to beautiful pictures. They look at them with surprise. Sometimes they might utter bad words. They start showing inclination towards the opposite sex. They try to have the attention of the persons of the opposite gender. Sometimes, they even ask the parents questions concerning sex. They try to eavesdrop over the whisperings of the parents. They like to sit with friends in a quiet corner and exchange secrets. All these go to prove that the children have within them the latent instinct of sex that tries to find expression in their actions. Without proper guidance and knowledge, the instinct keeps driving the children. They won't know what they want. Their only attention is to derive pleasure from any source. But they don't know how to get this pleasure. Till the age of ten to twelve years the children continue in this state of suspense. From the age of twelve to fifteen, the instinct of sexuality dawns on them with speed. Responsible parents will not be oblivious of this instinct of their children. They cannot continue without devising a strategy to properly handle the matter.

Sex education is one of the most difficult and delicate aspects of the education of children. Slightest mistake or neglect on the part of the parents might push the children into the abyss of destruction. The parents should focus their attention towards the fact that prior to puberty the children won't have the faculty of procreation. Therefore God has kept the instinct of sex latent in them. It is in the best interest of the children that their instinct of sexuality does not have a premature awakening. If this happens prematurely, the child will suffer many types of social stigmas and physical ailments.

The parents must abstain from everything that might provoke the sex instinct in the children. They must provide to them such healthy environment that their minds don't get diverted towards premature expression of sex instinct. The thoughtful parents can themselves decide what is desirable for the children and what is not. But here we are mentioning a few of the things that the parents would like to keep in their minds. They should discreetly ensure that the children don't touch their private parts, they don't look at pictures of models in the magazines, listen to love ditties and watch romantic movies, praise good looks and beauty of others, stare at beautiful faces and exposed limbs of others, intently listen to bawdy jokes or courtship of the parents or other elders.. . These and many other attractions might cause a flutter in the sex instinct of the child. The parents should not allow children of five to six years of age to live unattended. They might sometimes play with each other's private parts and emotions might awaken in them. The children should not be allowed to lie in their beds when they are awake. Have separate beds for children of the age of six years. If the children sleep on the same bed, their bodies might rub against each other and give rise to the sex instinct. The parents should not make children of five to six years of age sleep with them in the same bed. This should be particularly so in the case of a child of the opposite sex. Even the mother should not rub her body with the body of her six-year-old daughter.

**Reforms needed:-** The Indian government has appointed a three-member panel of legal experts to review the rape laws. Delhi, the capital city, has been called by many as the "rape capital of India".

The government has promised to step up and take vigilant and preventive measures including: night patrols, supervision and checks on public and private bus drivers and their assistants, and the banning of vehicles with tinted windows or curtains. Although Women may be victims of any of the general crimes such as 'Murder', 'Robbery', 'Cheating', etc, only the crimes which are directed specifically against Women are characterised as 'Crimes Against Women'. Various new legislations have been brought and amendments have been made in existing laws with a view to handle these crimes effectively. These are broadly classified under two categories.

#### (A) The Crimes under the Indian Penal Code (IPC)

- Rape (Sec. 376 IPC).
- Kidnapping & Abduction for specified purposes (Sec. 363 - 373 IPC).
- Homicide for Dowry, Dowry Deaths or their attempts (Sec.302/304-B IPC).
- Torture - both mental and physical (Sec. 498-A IPC).
- Molestation (Sec. 354 IPC).
- Sexual Harassment (Sec. 509 IPC).
- Importation of girls (upto 21 years of age) (Sec. 366-B IPC).

#### (B) The Crimes under the Special & Local Laws (SLL)

Although all laws are not gender specific, the provisions of law affecting women significantly have been reviewed periodically and amendments carried out to keep pace with the emerging requirements. The gender specific laws for which crime statistics are recorded throughout the country are:-

- Immoral Traffic (Prevention) Act, 1956.
- Dowry Prohibition Act, 1961.
- Indecent Representation of Women (Prohibition) Act, 1986.
- Commission of Sati (Prevention) Act, 1987.

#### Reported Incidents of crime (Incidence...2,13,585)

A total of 2,13,585 incidents of crime against women (both under IPC and SLL) were reported in the country during 2010 as compared to 2,03,804 during 2009 recording an increase of 4.8% during 2010. These crimes have continuously increased during 2006 - 2010 with 1, 64,765 cases in 2006, 1,85,312 cases in 2007, 1,95,856 cases in 2008, 2,03,804 cases in 2009 and 2,13,585 cases in 2010. Andhra Pradesh, accounting for nearly 7.1% of the country's population, has accounted for 12.8% of total crimes against women in the country by reporting 27,244 cases. West Bengal with 7.6% share of country's population has accounted for nearly 12.2% of total crime against women by reporting 26,125 cases in 2010.

### Crime head-wise analysis (IPC) Rape (Sec. 376 IPC) (Incidence...22,172 Rates...1.9)

An increasing trend in cases of rape has been observed during 2006 - 2008. A mixed trend in the incidence of rape has been observed during 2008 - 2010. These cases reported an increase of 7.2% in 2007 over 2006, an increase of 3.5% in 2008 over 2007, a decline of 0.3% in 2009 over 2008 and an increase of 3.6% in 2010 over 2009. Madhya Pradesh has reported the highest number of Rape cases (3,135) accounting for 14.1% of total such cases reported in the country. However, Mizoram has reported the highest crime rate 9.1 as compared to National average of 1.9. Rape cases have been further categorised as Incest Rape and other Rape cases.

### Incest Rape (Incidence...288)

Incest rape cases have decreased by 10.3% from 321 cases in 2009 to 288 cases in 2010 as compared to 3.6% increase in overall Rape cases. Maharashtra (44) has accounted for the highest (15.3%) of the total such cases reported in the country.

There were 22,193 victims of Rape out of 22,172 reported rape cases in the country. 8.9% (1,975) of the total victims of Rape were girls under 14 years of age, while 16.1% (3,570) were teen aged girls (14-18 years). 57.4% (12,749) were women in the age-group 18-30 years. 3,763 victims (17.0%) were in the age-group of 30-50 years while 0.6% (136) were over 50 years of age. The details are given in Table-5.3. Offenders were known to the victims in as many as 21,566 (97.3%) cases. Parents /close family members were involved in 1.3% (288 out of 21,566) of these cases, neighbours were involved in 36.2% cases (7,816 out of 21,566) and relatives were involved in 6.2% (1,344 out of 21,566) cases. The State /UT /City-wise details are presented in Table-5.4.

### Kidnapping & Abduction (Sec. 363-373 IPC) (Incidence...29,795 Rate...2.5)

These cases have reported an increase of 15.7% as compared to previous year (25,741). Uttar Pradesh (5,468) has accounted for 18.4% of the total cases at the National level. Delhi Uthas reported the highest rate at 9.5 as compared to the National average of 2.5.

### Dowry Deaths (Sec. 302, 304B IPC) (Incidence...8,391 Rate...0.7)

These cases have increased by 0.1% over the previous year (8,383). 26.4% of the total such cases reported in the country were reported from Uttar Pradesh (2,217) alone followed by Bihar (1,257) (15.0%). The highest rate of crime (1.3) was reported from Bihar as compared to the National average of 0.7.

### Torture (Cruelty by Husband & Relatives) (Sec. 498-A IPC) (Incidence...94,041 Rate...7.9)

'Torture' cases in the country have increased by 5.0% over the previous year (89,546). 18.9% of these were reported from West Bengal (17,796). The highest rate of 26.0 was reported from Tripura as compared to the National rate

at 7.9.

### Molestation (Sec. 354 IPC) (Incidence...40,613 Rate...3.4)

Incidents of Molestation in the country have increased by 4.9% over the previous year (38,711). Madhya Pradesh has reported the highest incidence (6,646) amounting to 16.4% of total such cases. Tripura has reported the highest rate (10.4) as compared to the National average of 3.4.

### Sexual Harassment (Sec. 509 IPC) (Incidence...9,961 Rate...0.8)

The number of such cases has decreased by 9.5% over the previous year (11,009). Andhra Pradesh has reported 45.8% of cases (4,562) followed by Maharashtra 11.8% (2,524). Andhra Pradesh has reported the highest crime rate 5.4 as compared to the National average of 0.8.

### Importation of Girls (Sec. 366-B IPC) (Incidence...36)

A decrease of 25.0% has been observed in such cases as 36 cases were reported during the year 2010 as compared to 48 cases in the previous year (2009). Bihar, Jharkhand and West Bengal have reported 8 cases each accounting for two-third of total such cases at the National level.

### References:-

1. [http://en.wikipedia.org/wiki/Crime\\_in\\_India](http://en.wikipedia.org/wiki/Crime_in_India)
2. <http://www.youthkiaawaz.com/2010/02/domestic-violence-in-india-causes-consequences-and-remedies-2>
3. <http://en.wikipedia.org/wiki/incest>
4. Harish Chandra Upreti, Nandini Upreti: *Women and Problems of Gender Discrimination*
5. T. M. Dak: *Women And Work In Indian Society*
6. Rajeswari Sunder Rajan: *Real and Imagined Women: Gender, Culture and Postcolonialism* by (Dec 4, 1993)
7. Tisdell, Clement A: *The Socio-Economics of Gender Issues in Rural India: Results of Interviews in Three Villages and a Forest Meeting in Eastern India*
8. Jeffrey Archer: *Gender bias is a massive problem in India*
9. Sadhna Arya, Anupama Roy: *Poverty, Gender and Migration*
10. Anuja Agrawal: *Migrant Women and Work:*
11. Navnita Chadha Behera: *Gender, Conflict and Migration*

## Role Of Education In Gross National Happiness Index: A Way To Measure Quality Of Life

### Dr. Ranjana Bhan

Associate Professor, Himachal Pradesh University,  
Shimla (Himachal Pradesh)

### Dr. Sanjeev Kumar

(Trained Graduate Teacher in Non Medical)  
Govt. Senior Secondary School, Kuftu (Himachal Pradesh)

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

Gross national happiness (GNH) is concerned with the indicators that measure quality of life or social progress in more holistic and psychological terms than only the economic indicator of gross domestic product (GDP). The term "gross national happiness" was coined in 1972 by Bhutan's fourth Dragon King, Jigme Singye Wangchuck, who has opened Bhutan to the age of modernization soon after the demise of his father, Jigme Dorji Wangchuk. He used this phrase to signal his commitment to building an economy that would serve Bhutan's unique culture based on Buddhist spiritual values. At first offered as a casual, offhand remark, the concept was taken seriously, as the Centre for Bhutan Studies, under the leadership of Karma Ura, developed a sophisticated survey instrument to measure the population's general level of well-being (Gross National Happiness). Like many psychological and social indicators, GNH is somewhat easier to state than to define with mathematical precision. Nonetheless, it serves as a unifying vision for Bhutan's five-year planning process and all the derived planning documents that guide the economic and development plans of the country. GNH, like the Genuine Progress Indicator, refers to the concept of a quantitative measurement of well-being and happiness. The two measures are both motivated by the notion that subjective measures like well-being are more relevant and important than more objective measures like consumption. It is not measured directly, but only the factors which are believed to lead to it.

According to Daniel Kahneman, a Princeton University psychologist, happiness can be measured using the day reconstruction method, which consists in recollecting memories of the previous working day by writing a short diary (Templeton, Sarah-Kate, December 5, 2004). A second-generation GNH concept, treating happiness as a socioeconomic development metric, was proposed in 2006 by Med Jones, the President of International Institute of Management. The metric measures socioeconomic development by tracking seven development areas including the nation's mental and emotional health (iim-edu.org). GNH value is proposed to be an index function of the total average per capita of the

following measures:

- Economic Wellness: Indicated via direct survey and statistical measurement of economic metrics such as consumer debt, average income to consumer price index ratio and income distribution
- Environmental Wellness: Indicated via direct survey and statistical measurement of environmental metrics such as pollution, noise and traffic.
- Physical Wellness: Indicated via statistical measurement of physical health metrics such as severe illnesses.
- Mental Wellness: Indicated via direct survey and statistical measurement of mental health metrics such as usage of antidepressants and rise or decline of psychotherapy patients.
- Workplace Wellness: Indicated via direct survey and statistical measurement of labor metrics such as jobless claims, job change, workplace complaints and lawsuits.
- Social Wellness: Indicated via direct survey and statistical measurement of social metrics such as discrimination, safety, divorce rates, complaints of domestic conflicts and family lawsuits, public lawsuits, crime rates.
- Political Wellness: Indicated via direct survey and statistical measurement of political metrics such as the quality of local democracy, individual freedom, and foreign conflicts.

Adam Kramer, a psychologist from the University of Oregon, has developed a behavioral model of 'Gross National Happiness' based on the use of positive and negative words in social network status updates, resulting in a quantitative GNH metric (<http://doi.acm.org>).

Gross National Happiness (GNH) is a quantitative measure of the happiness of the residents of a nation. Although happiness is by its nature very difficult to measure, some people think that it could be an excellent complement to more objective measures like a nation's Gross National Product. The concept of Gross National Happiness is rooted in the spiritual values of Buddhism, which place a heavy value on happiness and contentment. Advocates of the use of this measurement as a development indicator believe that material development can be accompanied by a state of happiness for most of a nation's citizens if the development is well managed and happiness is an important value to the government. A similar concept is the United Nations Human Development Index, which takes issues like health care and education into account when calculating the overall health of a nation.

There are four main foci to Gross National Happiness. One of the most important in heavily forested Bhutan is the maintenance of a pristine and healthy environment that is in a state of balance. Use of the environment should ideally

be sustainable and harmonious; some people liken the entire country to a form of park, since the Bhutanese environment is zealously guarded. (wisegeek.com).

Nowadays, the headquarter of the GNH is in a little town in Sao Paulo, Brazil, called Porangaba. There, the official ambassador for this indicator in Brazil, Susan Andrews, researches about this new concept and how it can reach people. Brazil is becoming international reference in this new paradigm for well being for everyone. The main idea is that the governments could use this indicator to find out if the basic necessities of the population are being attended and then formulate public politics. Since then, only three townships have adopted this as an indicator: Campinas (SP), Bento Goncalves (RG) and Rajadinha (DF). (<http://www.youthinkgreen.org>).

**Dimensions Of Gross National Happiness Index:-** Measuring the Gross National Happiness Index is a complex process as it includes 33 indicators that come from nine different core domains. The domains within GNH are the components of happiness in Bhutan and each one is equally weighted in the index.

According to the Center for Bhutan Studies, the nine domains of GNH are:

- **Psychological wellbeing:-** It is concerned with the balancing of the mind and body towards every activity in the daily life of the person. The individual conducts his/her every work with confidence and with full efficiency (e.g. taking account of karma in daily life where considering karma less than daily is viewed as 'deprived').
- **Ecology:-** It deals with the knowledge of the surroundings and environment in which the man lives and works. It enforces the balanced relationship between man and environment (e.g. knowing names and species of local plants and animals where not knowing them is viewed as 'deprived')
- **Health:-** It is physical and mental well-being of the individual (e.g. number of healthy days in the past 30 days where less than 26 is viewed as 'deprived')
- **Education:-** It referred to the knowledge of society and about the relationships. (e.g. historical literacy (knowledge on local legend and folk stories) where less than 'good knowledge' is viewed as 'deprived')
- **Culture:-** Knowledge of our customs, traditions, morals, rituals and value their importance in life. (e.g. teaching children importance of impartiality. Part of 'Value Transmission Index' where seeing it as any less than 'very important' is viewed as 'deprived')
- **Living Standards:-** The simple living and high thinking is strengthening. (e.g. difficulty in contributing to the community festivals where any level

of difficulty experienced is viewed as 'deprived')

- **Time Use:-** Giving importance and value to every activity in life and devoting due time for these. (e.g. sleep hours where any less than 8 is viewed as 'deprived')
- **Community Vitality:-** Adjustment and co-operation with the society and community. (e.g. neighbours helping each other in the community where any response less than 'always' is viewed as 'deprived')
- **Good Governance:-** Taking care of rights and duties of the citizen and providing due facilities to the public. (e.g. performance of central government in reducing income gap where any performance rating less than 'excellent' is viewed as a failure). (Wynne, Gareth, 2011)

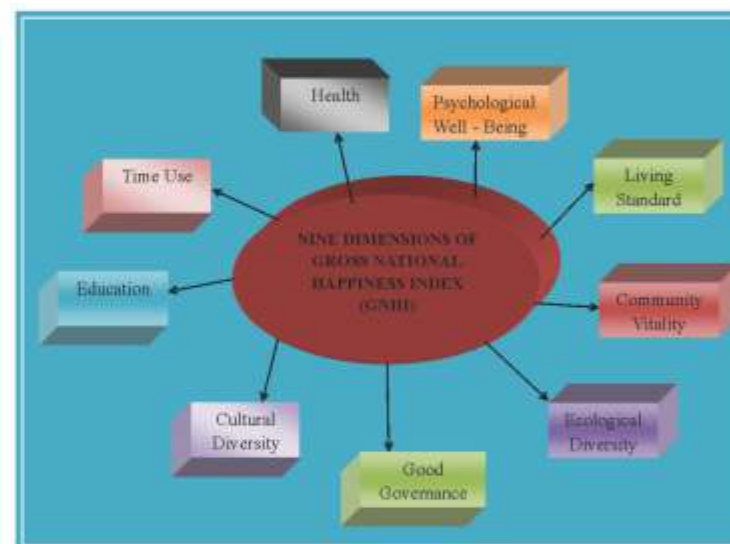


Fig. 1: Nine Dimensions of Gross National Happiness Index.

In order to make measuring the GNH less complicated these nine domains are often included in the four larger pillars of GNH as laid out by the Permanent Mission of the Kingdom of Bhutan to the United Nations in New York. The pillars are 1) Sustainable and Equitable Socio-Economic Development, 2) Conservation of the Environment, 3) Preservation and Promotion of Culture and 4) Good Governance. Each of these pillars includes the nine domains - for example the 7th domain, community vitality, would fall into the 3rd pillar, Preservation and Promotion of Culture.

**Happiness As A Developmental Goal:-** According to the Center for Bhutan Studies, the Gross National Happiness Index "implies that sustainable development should take a holistic approach towards notions of progress and give equal importance to non-economic aspects of wellbeing" (GNH Index). In

order to do this, the GNH consists of a number index that is derived from the ranking of 33 indicators that are a part of nine different domains in a society. The domains include factors such as psychological wellbeing, health and education (Brinev, Amanda, 2011).

Happiness varies across individuals and cultures (Lu L., Gilmour R., Kao S. F, et al., 2001), despite being an ultimate goal for individuals in all human societies. This concept is embedded in most religions and cultures, but in contemporary times, the pursuit of happiness has been translated into an unwavering pursuit of economic growth (McDonald R., 2005). The concept of health and well-being has been the subject of discussion for a long time, and numerous studies have been conducted on this subject (Helliwell J. F., 2010). In recent years, psychologists and social scientists have made strides in research on subjective well-being, and some of the major achievements have been the development of models and measurement of subjective well-being (Diener, E. D., Chan, M. Y., 2011). Despite much progress, it has been highlighted that there is a need for more studies on the subject of health and happiness (Bekhet, A. K.; Zauszniewski, J. A. and Nakhla, W. E., 2008). Further, despite the increasing amount of literature on health and well-being, happiness as a national goal has not always been pursued.

The fourth king of Bhutan, His Majesty Jigme Singye Wangchuk, in 1974, realizing the mismatch in the trajectory of growth-oriented market economics as a developmental philosophy, formulated the concept of GNH. To this end, development should serve the total well-being of the people and economic development is only the means to achieve it (Choden, T.; Kusago, T. and Shirai, K., 2007). In Bhutan, happiness is considered as a public good, and it is the responsibility of the government to create an enabling environment for the pursuit of GNH, as enshrined in the constitution (Ura, K., 2008).

GNH in Bhutan is based on four principles, ie, sustainable and equitable economic development, conservation of the environment, preservation and promotion of culture, and good governance. The Centre for Bhutan Studies, as mandated by the Royal Government of Bhutan, has developed a GNH index under nine domains.

Sustainable development is defined as “development that meets the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs,” encompasses social, economic, and environmental dimensions (Von Schirnding Y., and Mulholland, C., 2002). The values generated from these important concepts can be used for active promotion of health and pursuit of happiness. Environmental preservation is one of the foundations of GNH, and in Bhutan, the constitution mandates that a minimum of 60% of land area must have forest coverage. Ecological degradation, ecological knowledge, and afforestation variables are measured under the environmental diversity domain.

For sustainable and healthy development promoting happiness of the nation, all four dimensions of the GNH needs to be addressed in a balanced and integrated manner, and measured periodically as a developmental yardstick. Only then can health, happiness, and development flourish harmoniously.

### **Role Of Education In Gross National Happiness Index (GNHI):-**

Education means knowledge which les to liberation from ignorance and paves the way for happiness in life. The fundamental purpose of education is to transfigure the human personality into a pattern of perfection through a systematic process of development of the body, the enrichment of mind, the sublimation of the emotions and the illumination of the spirit. Without education, a man is so circumstanced that he knows not how to make the best of himself. The concept of GNH has often been explained by its four pillars: Good governance, sustainable socio-economic development, cultural preservation and environmental conservation. More recently, the four pillars have been further classified into nine domains in order to create a broader understanding of GNH and to reflect the holistic range of GNH values. The domains represent each of the components of well-being of the Bhutanese people, which refers to fulfilling conditions of a 'good life' according to the values and principles laid down by the concept of GNH. Interestingly, despite emphasizing happiness over materialism, over the past two decades life expectancy has doubled in the country and universal education has become the norm. The educational approach is, however, influenced by the GNH philosophy. The role of education as an instrument of gross happiness needs to be widely recognized. Education is regarded as the most powerful instrument for emancipation and empowerment of those who needs to understand the concept of the gross happiness index. The roots of role of education in gross happiness index lies in our schools. In schools, in addition to math and science, children are taught how to produce food sustainably, how to protect the environment and how to meditate in order to make their life happy. The idea of this education is to prepare children to be good people, not just economic players (Hanley, Paul, 2013). The education helps the individual to enable him to make adjustments in all situations and circumstances.

**Conclusion:-** With many of the world's countries about as unhappy as they can get because of their sagging GDP figures, the tiny nation of Bhutan is going in the opposite direction. Officials there have come up with a different indicator, called **gross national happiness (GNH)**. At first blush, GNH seems a bit like the Five Day Weekend – a tongue-in-cheek commentary on the pursuit of wealth common among developed nations. However, the Bhutanese are quite earnest about implementing GNH as their key economic indicator (Clark, Josh, 2009). Despite the popularity of the Gross National Happiness Index in Bhutan, it has received considerable criticism from other areas. One of the largest criticisms of GNH is that the domains and indicators are relatively subjective. Critics claim that

because of the subjectivity of the indicators it is too difficult to get an accurate quantitative measurement on happiness. They also say that due to the subjectivity, governments may be able to change GNH results in a way that best suits their interests. In spite of these criticisms however, it is important to note that GNH is a different and important way to simply look at economic and social progress around the world. Thus, it can be said in the end that we should enforce gross national happiness index in school education.

### References:-

1. Bekhet, A. K.; Zauszniewski, J. A. and Nakhla, W. E. (2008). *Happiness: theoretical and empirical considerations*. *Nurs Forum*. Vol. 43(1):12–23. (Published M. Ed. Thesis). Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/18269440> on 25/06/2010. Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3155859/> on 27/02/2013.
2. Brinev, Amanda (2011). *Overview of the Gross National Happiness Index*. Retrieved from <http://www.geography.about.com/od/culturalgeography/a/Gross-National-Happiness.htm> on 04/03/2013.
3. Choden, T.; Kusago, T. and Shirai, K. (2007). *Gross National Happiness and Material Welfare in Bhutan and Japan*. Retrieved from <http://www.bhutanstudies.org.bt/pubFiles/GNH-MaterialWelfare-part1.pdf>. on 02 November, 2010. Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3155859/> on 27/02/2013.
4. Clark, Josh (2009). *Is Gross National Happiness more important than the GDP?* Retrieved from <http://www.money.howstuffworks.com/gross-national-happiness.htm> on 23/10/2010.
5. Diener, E. D., Chan, M. Y. (2011). *Happy people live longer: subjective well-being contributes to health and longevity*. *Applied Psychology: Health and Well-Being*. Vol. 3(1):1–43. Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3155859/> on 27/02/2013.
6. doi.acm.org. *An Unobtrusive Behavioral Model of 'Gross National Happiness'*. Retrieved from <http://www.doi.acm.org/10.1145/1753326.1753369>. Retrieved from [http://www.en.wikipedia.org/wiki/Gross\\_national\\_happiness](http://www.en.wikipedia.org/wiki/Gross_national_happiness) on 21/01/2013.
7. *Gross National Happiness*. *The Centre for Bhutan Studies*. Retrieved from <http://www.grossnationalhappiness.com> on 24/03/2011. Retrieved from [http://www.en.wikipedia.org/wiki/Gross\\_national\\_happiness](http://www.en.wikipedia.org/wiki/Gross_national_happiness) on 21/01/2013.
8. Hanley, Paul (2013). *Gross National Happiness grades well-being*. *The Star Phoenix*. Retrieved from <http://www.thestarphoenix.com/health/Gross+National+Happiness+grades+well+being/7763920/story.html> on 03/03/2013.
9. Helliwell, J. F. (2010). *Well-being, Social Capital and Public Policy: what's new?* *National Bureau of Economic Research (NBER)*. Working Paper No W11807, Cambridge, MA: NBER. Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3155859/> on 27/02/2013.
10. iim-edu.org. *Gross National Happiness (GNH) - Gross National Happiness Policy and The American Pursuit of Unhappiness-* Med Jones, IIM, retrieved from [Shodh Shree / April-June 2013](http://www.iim-</a></li>
</ol>
</div>
<div data-bbox=)

- [http://www.en.wikipedia.org/wiki/Gross\\_national\\_happiness](http://www.en.wikipedia.org/wiki/Gross_national_happiness) on 21/01/2013.
11. Lu, L.; Gilmour R.; Kao S. F, et al., (2001). *Two ways to achieve happiness: when the East meets the West*. *Pers Individ Dif*, Vol. 30(7): 1161–1174. Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3155859/> on 27/02/2013.
  12. McDonald R. (2005). *Towards a new conceptualization of Gross National Happiness and its foundations*. *Journal of Bhutan Studies*. Vol. 12 (23), pp. 46. Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3155859/> on 27/02/2013.
  13. Templeton, Sarah-Kate (December 5, 2004). *Happiness is the new economics*. *London: Timesonline*. Retrieved from <http://www.timesonline.co.uk/article/0,,2087-1388623,00.html> on 08/01/2007. Retrieved from [http://www.en.wikipedia.org/wiki/Gross\\_national\\_happiness](http://www.en.wikipedia.org/wiki/Gross_national_happiness) on 21/01/2013.
  14. Ura, K. (2008). *Explanation of GNH Index*. Retrieved from <http://www.grossnationalhappiness.com/gnhIndex/introductionGNH.aspx> on 25th January, 2009. Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3155859/> on 27/02/2013.
  15. Von Schirnding Y., and Mulholland, C. (2002). *Health in the Context of Sustainable Development: An Introductory Document*. Oslo: World Health Organization, 2002. Retrieved from <http://www.bvsde.paho.org/bvsacd/ssataller/heasustdev.pdf> on June 12, 2011. Retrieved from <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3155859/> on 27/02/2013.
  16. wisegeek.com. *What is Gross National Happiness?* Retrieved from <http://www.wisegeek.com/what-is-gross-national-happiness.htm> on 03/03/2013.
  17. Wynne, Gareth (2011). *Gross National Happiness - the economic and social benefits of happy citizens*. Retrieved from <http://www.innovationunit.org/blog/201106/gross-national-happiness-economic-and-social-benefits-happy-citizens> on 17/02/2013.
  18. youthinkgreen.org. *Gross National Happiness*. Retrieved from <http://www.youthinkgreen.org/group-brasil-01/2012/05/14/gross-national-happiness/> on 07/03/2013.

# Effectiveness Of Computer -Assisted Instruction (CAI) On The Academic achievement Of Class Ix Students In English

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

**Dr. Nivedita**

Assist.Prof., Deptt. of Education, CDLU, Sirsa (Haryana)

**Ranjeet Singh**

Assist.Prof. Shah Satnam Ji PG College of Education, Sirsa (Haryana)

We are living in a changing world. Whole world is undergoing a revolution. Technology is revolutionizing our field of education by altering its structure despite of institutional walls, developing new ways to access information and solve problems. History of the use of technology in education takes us to the stage when the subject matter became valuable in the form of printing material and textbooks. It was soon supplemented by the use of teaching aids like blackboard, specimen, pictures, charts, models, maps and figures, etc.

**Computer-assisted Instruction:-** "Computer-assisted instruction" (CAI) refers to instruction or remediation presented on a computer. Many educational computer programs are available online and from computer stores and textbook companies. They enhance teacher instruction in several ways. Computer programs are interactive and can illustrate a concept through attractive animation, sound, and demonstration. Computers provide immediate feedback, letting students know whether their answer is correct. If the answer is not correct, the program shows students how to correctly answer the question. Computers offer a different type of activity and a change of pace from teacher-led or group instruction. There are many advantages of CAI. These are : No Annoyance , Graphics Facility , Interactive Graphics , Enrichment of courses , Active participation , Accurate data , Immediate feedback etc.

**Rationale Of The Study:-** It is a highly disturbing trend that standards of teaching and learning English have definitely fallen in the country. It is, therefore, important that the effective methods of teaching the language are tried out to raise the standards of teaching and learning in the country. The use of instructional media like teaching machines, films, television and computers is almost nil in India. In subject like English, Computers play a significant role. Computer provides a standardized approach of presenting information to

students. By using Computer a teacher can taught prose, poetry and grammar quickly and systematically to clarify in an effective manner. So the present study is an attempt in this direction.

## Statement Of The Problem:-

"Effectiveness of Computer-Assisted Instruction (CAI) on the academic achievement of class ix students in English"

## Operational Definitions Of Terms Used:-

- **Effectiveness:-** Effectiveness of the computer assisted instruction in teaching of English refers to the achievement or realization of objectives of teaching English.
- **Computer Assisted Instruction:-** Computer-Assisted Instruction may be defined as a method of instruction in which there is a purposeful interaction between a learner and computer device for helping the individual learner to achieve the desired instructional objectives with his own pace and abilities at his command.
- **Academic Achievement:-** Academic achievement can be defined as excellence in all academic disciplines, in class as well as extra-curricular activities. It includes excellence in sporting behavior ,confidence communication skills, punctuality, Arts and Culture etc.

## Objectives:-

- To study the difference in the achievement of students taught English through computer and conventional method.
- To study the difference in the achievement of male students taught English through computer and conventional method.
- To study the difference in the achievement of female students taught English through computer and conventional method.

## Hypotheses:-

- There is no significant difference in the achievement of students of English taught through computer and conventional method.
- There is no significant difference in the achievement of male students of English taught through computer and conventional method.
- There is no significant difference in the achievement of female students of English taught through computer and conventional method.

**Method Used In Present Study:-** The nature of the study clearly indicates that the present investigation is based on the classroom teaching involving both

the teacher and the students. The experimental method was most suitable for the present research and was adopted by the investigator. **VARIABLES**

**Independent Variable:** for the experimental group, the independent variable was 'computer assisted instruction' (cai) where as for the control group; the independent variable was 'traditional method.'

**Dependent Variable:** Dependent variable was academic achievement. The scores obtained by the pupils in the post-test.

**Sample And Procedure Of The Study:-** In the present study, a sample of 60 students studying in class IX of **Govt. Sen. Sec. School, Kuttabadh** was selected by random sampling procedure. On the basis of scores obtained in pre achievement test, the whole sample is divided into two groups i.e. Experimental & Controlled group of 30 students each. During the experiment, a few selected topics from English of class IX were taught to both the groups' i.e. experimental group (30students) & controlled group (30students). The experimental group was taught by CAI i.e. through computer & the controlled group was taught through traditional method i.e. lecture method separately. After the experimental treatment, a post-test (achievement test) was administered to both the groups.

**Design Of The Study:-** The present study is experimental in nature. For this purpose, pre-test post- test, experimental -control group design is framed.

Group	Independent variable	Post-Test
Experimental	Teaching through Computer	ET <sub>2</sub>
Control	Teaching through	CT <sub>2</sub>

A sample of 60 students of class IX was taken  
(60 students)  
Pre-test



**Tools To Be Used:-** Power Point Slides And Questionnaire Were Made By The Researcher.

**Statistical Techniques To Be Used:-** Appropriate descriptive statistics like mean, median, mode, 't' test & standard deviations were used.

### Delimitations Of The Study:-

- The study is delimited to one govt. Sen. Sec. school of Kuttabadh, District Sirsa.
- The study is confined to one variable of performance i.e. academic achievement.
- Few topics of English were taken.
- The study is delimited to class IX.
- The present study is consists of two parallel groups of 30 students each.

### Performance of Students Prior to Intervention:-

Group	N	Mean	Standard Deviation	C.R. value or t-value	Remarks
Experimental Group		15.40	1.06	.77	Insignificant at both 0.05 & 0.01 level
Controlled Group		15.23	1.19		

Table-1 of t-test of Pre-Test scores of Experimental & Controlled Group.

Degree of Freedom :  $N_1 + N_2 - 2 = 30 + 30 - 2 = 60 - 2 = 58$

Tabular value of t at 0.05 level = 2.00, at 0.01 level = 2.66

**Interpretation:-** As shown in table (4.1), the calculated value of 't' for both the groups is less than the tabular value of 't' i.e. 2.00 and 2.66 at both 0.05 and 0.01 levels of significance respectively. This implies that the initial behaviour of the two groups was same before the intervention.

### Analysis And Interpretation:-

**Hypothesis 1.** There is no significant difference in the achievement of students of English taught through computer and conventional method.

Group	Method	N			Standard Deviation	C.R. value	Remarks
Experimental Group	CAI		21.03	4.73	1.56	26.45	significant at both 0.05 & 0.01 level
Controlled Group	Conventional Method		16.30		1.17		

Table-2 of t-test of post-test scores of student of Experimental group (CAI) & Control Group (Conventional Method).

Degree of Freedom =  $N_1 + N_2 - 2 = 30 + 30 - 2 = 58$

Tabular value of t at 0.05 level = 2.00, at 0.01 level = 2.66

**Interpretation:-** Table-2 reveals that the mean score of students taught through computer is 21.03 whereas the mean score of students taught through conventional method 16.30. The difference of the means is 4.73 which is in the favour of the students taught English through CAI. The C.R. value, 26.45 is significant at both level of significance. So hypothesis no.1 is rejected at this base which is showing no significant difference in the achievement of students of English taught through computer and Conventional Method. This implies that there is significant difference in the performance of students taught the concepts of English through computer and conventional method. Thus we can conclude that teaching English through computer is better than teaching English through conventional method.

**Hypothesis 2.** There is no significant difference in the achievement of male students of English taught through computer and conventional method.

Group	Method	N			Standard Deviation	C . R . value	Remarks
Experimental Group	CAI		20.93	4.73	1.70	17.75	significant at both 0.05 & 0.01 level
Controlled Group	Conventional Method		16.20		1.26		

Table-3 of t-test of post-test scores of male students of Experimental group (CAI) & Control Group (Conventional Method).

Degree of Freedom =  $N_1 + N_2 - 2 = 15 + 15 - 2 = 28$

Tabular value of t at 0.05 level = 2.05, at 0.01 level = 2.76

Table-3 reveals that the mean score of students taught through computer is 20.93 whereas the mean score of students taught through conventional method is 16.20. The difference of the means is 4.73 which is in the favour of the students taught English through CAI. The C.R. value, 17.75 is significant at both level of significance. So hypothesis no.2 is rejected at this base which is showing no significant difference in the achievement of male students of English taught through computer and Conventional Method. This implies that there is significant difference in the performance of male students taught the concepts of English through computer and conventional method. Thus we can conclude that teaching English through computer is better than teaching English through conventional method.

**Hypothesis 3.** There is no significant difference in the achievement of female students of English taught through computer and conventional method.

Group	Method	N			Standard Deviation	C . R . value	Remarks
Experimental Group	CAI		21.13	4.73	1.45	19.07	significant at both 0.05 & 0.01 level
Controlled Group	Conventional Method		16.40		1.12		

Table-4 of t-test of post-test scores of female students of Experimental group (CAI) & Control Group (Conventional Method).

Degree of Freedom =  $N_1 + N_2 - 2 = 15 + 15 - 2 = 28$

Tabular value of t at 0.05 level = 2.05, at 0.01 level = 2.76

The calculated value of 't' is 19.07. This value is much higher than the tabular value of 't' i.e. 2.05 and 2.76 at both 0.05 and 0.01 levels of significance respectively. This implies that there is significant difference in the performance of female students taught the concepts of English through computer and conventional method. Hence, hypothesis no. 3 is also rejected.

**Main Findings Of The Study:-** The main findings of the study on the basis of analysis and interpretation of data are given below:

- Teaching English through Computer is better than teaching English through Conventional Method because the mean score of students taught through Computer is higher than the mean score of students taught through Conventional Method and significant at both level of significance.
- Achievement of male students taught English through Computer is better than the achievement of male students taught English through Conventional Method because the mean score of male students taught English through computer is higher than the mean score of male students taught English through Conventional Method and significant at both level of significance.
- Achievement of female students taught English through Computer is better than the achievement of female students taught English through Conventional Method because the mean score of female students taught English through computer is higher than the mean score of female students taught English through Conventional Method and significant at both level of significance.

**Educational Implications:-** The present study has its implications for teachers, students, teacher education & for curriculum development & designing of instructional material. There are some implications of the CAI which is given below

- By using computer assisted instructions, the students remain active throughout in the teaching learning process.
- It is helpful in achieving educational objectives.
- Helpful for curriculum development.
- It creates interest in the teaching learning process.
- It is very helpful in difficult subjects like science, physics and math etc. because power point presentation clear the concept easily.
- It is a overcome on the traditional methods of teaching.
- It helps the teacher and the learner to cover up more syllabus in less time.
- CAI is more useful for teaching the idioms and phrases of English.
- It is very important for teachers to improve their teaching and learn about new techniques of teaching because teacher is the base of teaching learning process.
- It makes the teaching learning process easy, effective, and comprehensive.
- It helps in giving proper training for different skills i.e. listening reading and speaking.
- Learning through such package increases the curiosity and capabilities of the students.

- The teaching through this kind of CAI effects more senses of the students and they make use of the learnt concepts in higher education or in life where necessary.

**Suggestions For The Further Study:-** Based on finding & conclusions of the present study and taking into considerations its delimitations, the following suggestions are made for the further research in this area:

- The present study was conducted on high school students. Further studies may be conducted on primary school students.
- The present study was related to the achievement of the students. Further studies may be conducted on more variables like creativity, self-concept, motivation & socio-economic status etc.
- The study has been undertaken to find the effect of methods of teaching on learning the concepts of English. Similar studies may be conducted by taking concepts of different disciplines like environment science, social science, math, geography etc.
- The present study was conducted on high school students. Further studies may be conducted on degree college students.
- This study was delimited to one Govt. Sen. Sec. School in rural area. The similar studies may be conducted in the urban area.

### References:-

1. Chapper and Copple (1985) "A comparative study of computer assisted instruction and conventional instructions".
2. Rangaraj (1997), for Ph.d studies, he taught physics with the help of CAI and CAI, as support system (CAISS).
3. Kaur Jiwanjot (2002) studied the effectiveness of CAI in terms of achievement of students and its comparison with traditional method.
4. Uma, S. (2004) studied the role of computer & technology in classroom teaching and learning process in the subjects of science and mathematics.
5. Ranade, D.Mridula (2004) "The effectiveness of a CAI package on the achievement of teacher educators".
6. Manchanda, Ruchi (2005) "Effectiveness of computer-based teaching on student's achievement in science & technology".
7. Dange, J.K. & Wahab, S.A. (2006) "Journal of Educational Research and Extension, Vol. 43, No. 4
8. Batra, Garima (2009) "Effectiveness of computer-assisted instruction on achievement in mathematics".
9. Gupta, Deepika (2010) "Effect of computer assisted instruction on achievement in economics".
10. Kulik, J.A., and Kulik, C.C. "Computer Based Instruction: what 200 evaluations say?" Paper presented at the annual convention of the association for educational communications and technology, Atlanta, GA.

Grimes, D.M. "Computer for Learning: The uses of Computer Assisted Instruction (CAI) in California Public School, Sacramento" CA: California State Department of Education.

De La Cuetara, R.A. and Lamba, R.S (1995) "software to interface the student, the lab equipment, the teacher and the computer." *Journal of chemical education*, 72, 607-608.

Kann, L.K. "Effects of Computer Assisted Instruction on selected interaction skills related to responsible sexuality." *Journal of school health* 57/7 ( 282-287).

Matray, P. and Proulx, S. (1995) "Integrating Computer/ Multimedia Technology in high school Biology Curriculum". *The American Biology teacher*, 57, 511-520.

Rastogi, S. & Pawar A.S. (1999), *CAL Strategy for, " Numerical Methods Course."* – *An Experimental Journal of All Indian Association, for Educational Research* 72(1): 101-130.

Biswal, A. and Das, A. (2001). "Computer Education Curriculum for school: An Integrated Approach". *Journal of Indian Education*. 27(1), B-15.

Guilford, J.P.(1956) "Fundamental Statistics in Psychology & Education." New York: MC Graw- Hill Book Company.

Chauhan, S.S. (1979), "Innovations in Teaching- Learning Process." *Vikas Publishing House Pvt. Ltd.*

Aggarwal, Y.P. (1983) "Statistical Methods, Application & Computation." *Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.*

Sinha, P.K. (1992), "Computer Fundamentals", *BPB Publications; New Delhi.*

Kaul, Lokesh; (1998): "Methodology of Educational Research." *Vikas Publishing House Pvt. Ltd.*

Walia, J.S. (2006), "Educational Technology", *Paul Publishers, N.N. 11.*

#### SOURCES

ic.ac.in. For research reports on the topic of Computer Assisted Instruction.

periment-resources.com

authorshare.com

kipedia.com

## A Study of Values of Existing Secondary Teachers and Student-Teachers

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

**Dr. Yashwant Singh**

Assist. Teacher, K.R.R.I.College,Farrukhabad (Uttar Pradesh)

The term 'value' does not have a simple unitary meaning like dancing or playing, which refers to particular type of activity. From etymological point of view, value signifies that quality of an individual or thing which makes that individual or thing important, respectable and useful. This quality may be internal or external or both. The term 'value' expresses the significance-great or small, which a man ascribes to matters related to particular activity or experience or to his life in general and thus provides him guidance for his behaviour. Values do not exist as objects in space and time, but are established by judgments –by judging things, qualities, events or actions from a personal point of view. The idealists believe, "the objective of living and learning is to develop the natural man into the ideal man." According to them, values substantially exist and man values them because they are realities and part of the fabric of cosmos. They, however, add that while the values exist in themselves, the act of valuing them is an individual experience. They believe that the student realizes values and value has existence in his interests and desires (Taneja, 1984).

Unlike the idealists, the pragmatists hold that values are not pre-existent, fixed or eternal. Pragmatists' values are not absolute in themselves, but are valuable in a relative way to the situation requiring a choice and to the future situation that might hypothetically exist as the result of immediate alternatives of action. Man creates values according to circumstances and environment. The naturalists and realists believe that values are found in nature and are discovered by man who is a rational being.

In the broader sense, any thing good or bad is a value (Pepper, 1958) or a value is anything of interest to a human subject ( Perry, 1954). Men are not indifferent to the world; they do not stop with a sheer factual view of their experience. (Kohler, 1938).

Rokeach (1973) defines values as an enduring belief, a specific mode of conduct, or end state of existence. Gorden, Allport (1969) has defined value as "a belief upon which a man acts by preferences." A value is what is desired or what is sought. Values may be operationally conceived to one's physical or mental health as well as to social welfare and adjustment and which are in tune with one's culture.

Every individual arranges his values in a set pattern by preferring one over the other, indicates his value preferences. Whenever a person is faced with two or more competing values, he has to make a decision in the situation. According

to Steel and Harman (1983), " Values are organised into heirarchical structures. The emerging value system has a rank ordering of values along a continuum which reflects the relative importance of the values, therefore, each value relates to a sereis of a higher values."

Since, teacher is the most vital and appropriate person in the entire formal educational setting for enculcating values in young learners and so, from this poing of view, it is extremely necessary to ensure that he plays his role as a model of character and good behaviour and as an epitome of those values which the society wishes to inculcate in learners. It needs to be kept in mind that a teacher occupies a position of authority in the eyes of his students and they always tend to follow him. The teacher earns this position not through his ability to satisfy his students' learning needs but also on account of his \*Assist. Teacher, K.R.R.I.College, Farrukhabad

Teaching behaviour is considered relevant, yet for acting as a role model and source of inspiration for his students to make them good human beings and men of character, his behaviour as a teacher is all too important.

Kornhauser (1996) stresses that 'knowledge interwoven with values creates wisdom.' The task is not an easy one, particularly, in face of a general climate of deterioration prevailing in the society all around. To begin with, one obvious method would be to create such an ambience in the teacher training institutions which is conducive to the inculcation of these values among the prospective teachers. If trainee-teachers are groomed in an institutional setting and climate which does not facilitate orientation and practice of these values or does not weigh these values as important ingredients of the entire teacher preparation programme and of the teaching learning process, not many qualities of character would be imbibed by the future teachers in the course of their training. In the same way existing teachers also need to be tackled to be socially responsible, accountable and future ready facilitators.

Before launching any comprehensive programme to inculcate values among existing secondary teachers and student-teachers, it is very essential to know the essential value system held by the existing and would-be teachers. The present work is an attempt to study and compare the value patterns of existing secondary teachers and student-teachers. It is hoped that the findings of the present study would be helpful to teachers, teacher-educators, educational planners and administrators.

### Objectives:-

- To study the value pattern of Existing Secondary Teachers and Student-Teachers.
- To compare the different values of Existing Secondary Teachers and Student-Teachers.

**Method:-** The present work attempts to study and compare the value patterns of existing secondary teachers and student-teachers. As per the nature of the study, it requires descriptive analysis of values. Thus, Normative Survey Method was used in this study.

**Sample:-** The sample consisted of 25 Existing Secondary Teachers (teaching 6<sup>th</sup> to 12<sup>th</sup> classes) and 25 Student-Teachers. They were randomly selected from Inter Colleges and Teacher Education Colleges ( of Farrukhabad, U.P.) respectively.

**Tool:-** The assessment of value was done with the help of the 'Study of Values' scale ( Dr. Rajkumar Ojha, 1990) based on described value pattern of Spranger.

**Statistical Analysis:-** Data analysis was done by using 't' test of significan

**Result and Disscussion:-** The investigation was intended to study the value pattern of existing secondary teachers and student-teachers. The value scores of both groups are being presented in the form of rank orders in the following table:

**Table-1**  
**Value Pattern in the Form of Rank Order**

Group	Theoretical	Economic	Aesthetic	Social	Political	Religious
Existing Secondary	1	2	6	3	4	5
Student-	1	2	6	3	4	5

As per the table, although a significant variety was observed in the mean values by the groups i.e. Existing Secondary Teachers and Student-Teachers, yet both groups strangley gave same rank to value pattern. Both the groups placed Theoretical value at the top. Economic value was given second preference and consequently Aesthetic value was preferred least by both the groups.

Interpreting the most preferred Theoretical value by the groups under study it may be said that being in teaching profession their interests are empirical, critical and rational. They find the things or situations realistic what has been taught to them. They take cognitive attitude. Regarding second most preferred Economic value, it may be said that thinking about life and things has changed a lot. In modern society individual's prestige is being judged in terms of economy. It is the economy of the individual which fixes the individual's place in the society. The teachers also are no exception in this regard. They have also become materialistic and economic. That's why, they perceive the things in wide perspective and rationlise that economic well being plays a vital role in one's life

long adjustment and help them to lead happy and prosperous life.

Both the groups, i.e. Student-Teachers and Existing Student-Teachers has ranked social value at third level which shows the teacher's philanthropic aspect. As they teach their students to be kind, sympathetic and social so they themselves have socialistic value that is 'love of people'. Teachers, today, are well acquainted with the fact that in the present circumstances, power can be attained through politics. That's why both the groups have ranked political values higher to Religious and Aesthetic values. Interpreting the least preferred Aesthetic value it may be said that the aesthetic attitude is, in a sense, diametrically opposed to the theoretical. As both the groups have ranked theoretical value at the top rank, so they do not give importance to grace, symmetry and beauty.

**Table-2**

**Significance of Difference between Means of Student-Teachers and Existing Secondary Teachers.**

Values	Student-Teachers		Existing Secondary Teachers		SED	't'-value	Level of Significance at df-48	
	M	SD	M	SD			at .05 2.01	at .01 2.68
Theoretical	44.08	4.64	46.96	6.07	1.52	1.89	-----	-----
Economic	41.12	5.04	46.36	8.52	1.97	2.65	Significant	-----
Aesthetic	35.68	6.85	30.72	5.50	1.76	2.81	Significant	Significant
Social	40.96	6.17	44.28	4.83	1.56	2.13	Significant	-----
Political	39.48	4.92	39.80	2.14	1.06	.31	-----	-----
Religious	37.44	6.81	35.00	8.60	2.19	1.11	-----	-----

Table 2 comprises the summary of mean, standard deviation and 't' value for the taken six values, i.e. Theoretical, Economic, Social, Political and Religious. The table indicates that there is a significant difference between means of Student-Teachers and Existing Secondary Teachers on Economic, Aesthetic and Social values. Their mean values shows that Existing Secondary Teachers (ME = 46.36, MS = 44.28) intend more towards the development of Economic and Social values in comparison to the Student-Teachers (ME = 41.12 and MS = 40.96). But the mean value of Student-Teachers (MA = 35.68) shows that Student-Teachers are more Aesthetic as compared to Existing Secondary Teachers (MA= 30.72). The results connotes that Existing Secondary Teachers prefer Economic value in comparison to Student-Teachers. This means that Existing Secondary Teachers are more inclined towards economic aspect and are materialistic. It is, perhaps, due to individual and family demands and social recognition in the present materialistic society. In the same way, 't' value is significant at .05 level for Social value where Existing Secondary Teachers were found having higher social outlook than their counterparts. It is, perhaps, due to

being experienced, having social relations and their responsibilities. Existing Secondary Teachers being older in age have got more opportunities and life experience.

As per table, Student-Teachers obtained higher mean score on Aesthetic value than Existing Secondary Teachers. The 't' value is significant at both .05 and .01 levels of confidence, which means that the student-teachers are more inclined towards aestheticism than the Existing Secondary Teachers. It is, perhaps, due to having more energy and passion for beauty, balance and harmony. Being away of ground realities of professional life they tend to make emotional decision which are based on the way they feel.

On the basis of the results of the present study the following conclusion may be drawn.

- Experience is related to value system and has significant impact on Economic, Social and Aesthetic values.
- Existing Secondary Teachers were found having significant edge over Student-Teachers on Economic and Social values while Student-Teachers, on Aesthetic value over their counter-parts.
- Both, Existing Secondary Teachers and Student-Teachers, ranked values in the same order.

Finding of the study have implications for educationists, policy makers, councillors, student-teachers and so on.

**References:-**

1. Gerret, H.E. and Woodworth (1966); *Statistics in Psychology and Education*, Vakil Feffer and Simmons Ltd., Haged Building, Bombay.
2. Jagdish and Singh, V.P. (2003); *An Emerging Value Pattern Among Female Students*, *Journal of Value Education*, Vol-3, No. 1, January,03.
3. NCERT (1998); *Fourth Survey of Research in Education*, NCERT, N. Delhi, 1983-84.
4. Rajput, J.S. (2001); *Symphony of Human Values in Education*, NCERT, N. Delhi.
5. Sharma, Poonam and Kumar, Mukesh (2004); *Value Pattern of Senior Secondary Students*, *Journal of Teacher Education and Research*, Vol-1, No. 1.
6. Singh, Yashwant (2010); *Creative Student-Teachers' Values, Risk Taking Behaviour and Attitude Towards Westernization*, Ph.D. Edu., MJP Rohilkhand University, Bareilly.
7. Taneja, V.R.(1984). *Foundations of Education ( Philosophical and Sociological)*, Chandigarh: Mohindra Capital Publishers.

# Parent's perception on developing social skills towards mentally retarded children

**Mamta Devi Yadav**

Research Scholar, Banasthali Vidyapith, Tonk

“Mentally Retardation refers to significantly sub-average general intellectual functioning resulting in associated with deficits in adaptive behavior and manifested during the developmental period.”(American Association on Mentally Retardation's [AAMR].)

**M**ental retardation is a term for a person who has limitation in mental functioning and in skills such as communication, taking care of him or herself and social skills. A general, define condition with various symptoms, caused by lack of development of the brain before birth. These limitations will cause a child to learn and develop more slowly than a typical child. Child who have retardation may take longer to learn to speak, to walk, and take care of their personal needs such as dressing or eating. They are likely to have trouble learning in school. They will learn but it will take them longer. There may be some things they cannot learn.

In 1941, “Doll suggested six essential criteria of Mental retardation, these are-

- Social incompetence
- Due to mental sub-normality
- Which has been developmentally arrested
- Which obtains at maturity
- Constitutional origin and
- Essentially incurable.

The performance and behavior of normal person or even a mentally retarded person in never depended only on his or her intellectual capacity, but on many other factors like emotional maturity, education, training and the social and cultural environment. There are three criteria before a person is considered to have Mental retardation, their IQ is below 75, they have significant limits in two or more adaptive behavioral areas, and the condition is present since childhood. Down syndrome, fetal alcohol syndrome and Fragile X are the three most common genetic causes of mental retardation. Mental retardation is claimed to not be a disease, it is also claimed to not be a type of mental illness, such as depression.

Mentally retarded children live in their own world. Their mental status prevents them from acquiring social skills. This retardation is pervasive and is

Shodh Shree



shodhshree@gmail.com

seen in all societies and cultures in various proportions. There are many different perspectives on understanding social skill and social competence. Sociological perspectives stress the importance that cultural and social factors play in our social lives, ecological perspectives highlight the importance of context and environment social psychological perspectives. Awareness of self and of others contributes to our effective social behavior in a number of different ways. Our self system is made up of our understanding of internal events knowledge about external events personal and social identities and the extent to which we have any sense of agency or control over the things that happen to us. The two aspects of awareness are awareness of internal events and awareness of others.

**Statement of the problem:-** “Perception of parents on developing social skills towards Mentally Retarded children.”

## Operational definitions:-

- **Mental Retardation:-** Mental retardation is a term for a person who has limitation in mental functioning and in skills such as communication, taking care of him or herself and social skills.
- **Social skills:-** social skills are often defined as complex set of skills that include communication, problem solving and decision making, ascertain, peer and group interaction and self management.(Haager and Vaughn, 1995)
- **Perception:-** Here, perception means the understanding or the way of seeing at of parents towards developing social skills on mentally retarded children.

**Objectives of the study:-** To investigate the opinions of the parents on social skills of mentally retarded children on the aspect such as:-

- Categorization of skills,
- Social skills to be developed,
- Activities to be developed.

## Methodology of the Research

**Population:-** The population constituted all the parents of mentally retarded children in special school situated in the Faizabad and Ayodhya (Uttar Pradesh).

**Sample:-** The sample as selected through stratified Random Sampling procedure. The sample consists of 30 parents having Mild & Moderate mentally retarded children in Faizabad and Ayodhya (Uttar Pradesh).

## Tools

**Observation schedule:-** The observation schedule was covering the social activities to be developed and related to the social. The observation schedule contained three parts. Part- 1 consists of types of skills, Part-2 consists of

important social skills and Part-3 consists of social skill activities check list.

The parents were asked to fill up the observation schedule with necessary details by putting a tick ( ) mark on the response which was applicable to the mentally challenged children. Each parent was given a schedule and importance of the study was explained.

**Procedure for data collection:-** The study filled in observation schedules were collected from the parents observation were noted and presented as case wise.

### Data analysis and results:-

**Table-1**  
Order of preference skills on observations of parents

Sl. No.	Category of skill	Parents observation percentage
1.	Personal skills	79
2.	Social skills	67
3.	Academic skills	55
4.	Occupational skills	35

Table-1 shows that the parents of mentally retarded children have given first preference (79%) for developing of personal skills, second preference (67%) for developing of social skills, third preference for developing academic skills and least importance to developing occupational skills.

**Table-2**  
Importance of categories of social skills opinion parents

Sl. No.	Category of social skill	Parents percentage	Rank
1.	Meaningful interaction with others	75	III
2.	Understanding and following instructions	43	IX
3.	Using public places appropriate	60	VI
4.	Seeking permission	55	VII
5.	Improving vocabulary of the child	69	IV
6.	Behaving in a society acceptable manner	76	II
7.	Speaking courteously	85	I
8.	Narrating incidents	49	VIII
9.	Participations in a social functions independently	68	V

Table-2 shows that parents observations of social skills and their importance. 85% of the parents have accorded more importance on the skill 'speaking courteously.' The other social skills –behaving in a socially acceptable manner is 76%, meaningful interaction with others is 75%, improving vocabulary of the child with 69% and Participations in a social functions independently is 68% and 43% parents of mentally retarded children expressed their least importance on understanding and following instructions.

**Table-3**  
Level of importance of parents in development of social skills in mentally retarded children

Sl. No.	Category of social skill	Parents %
1.	Smiling in response	68
2.	Respecting the privacy and property of others	63
3.	Behaving appropriately with the opposite sex	59
4.	Greeting others	56
5.	Responding to own name	53
6.	Participating appropriately at meal time	50
7.	Playing with peers/ sharing objects	48
8.	Obeying commands	45
9.	Engaging useful activities during free time	43
10.	Helping others	42
11.	Waving goodbye	39
12.	Participating in social functions	36
13.	Waiting for needs to be fulfilled	34
14.	Following instructions	33
15.	Being friendly with newcomers	30
16.	Dressing and grooming appropriate to the situation	29
17.	Sharing things with friends	27
18.	Saying please, thank you, sorry, appropriately	25
19.	Reaching/goes to the familiar persons	23
20.	Asking permission	22

Table-3 shows that parents have accorded higher level of importance on social skills viz. smiling in response 68%, respecting the privacy and property of others 63%, behaving appropriately with the opposite sex 59%, greeting others 56%, responding to own name of 53%, Participating appropriately at meal time 50%, Playing with peers/ sharing objects 48%.

Above data shows that parents are more ambitious in their opinion with regards to the development of social skills. Parents have opined that all the skills identified can be developed with the percentage ranging 22 to 68. The parents enthusiastically want to see overall skills development in the mentally retarded under their care.

**Finding of the study:-** Parents of mentally retarded children give more importance to development of personal skills, after that parents give second importance to development of social skills, give third importance to development of academic skills and give least importance to development of the occupational skills.

Parents' opinion on developing social skills like Speaking courteously, behaving in a society acceptable manner, meaningful interaction with others, Improving vocabulary of the child, participations in social functions independently but given low preference to Understanding and following instructions, Narrating incidents, Seeking permission.

Parents of mentally retarded children have accorded higher level of importance on social skills like smiling in response, respecting the privacy and property of others, behaving appropriately with the opposite sex, greeting others, responding to own name, Participating appropriately at meal time Playing with peers/ sharing objects.

**Conclusion:-** Parents play a crucial role in the growth and development of their children, because children spend most of their time with their parents and they imitate and learn from them. So, for the normal development and social competence, parenting is very important. The teachers have to develop social skills interaction with co-children parents, elders, teachers and developing etiquette. In fact, both parents and teachers have to be continuously aware of the development of social skills. Appropriate social behavior is necessary for any person to be an acceptable member of the society. Every human being is expected to follow certain standards of social behavior set by the society according to the cultural norms and age level of the individual. In case of persons with mental retardation intensive training is needed to cultivate, appropriate social behavior. The development of self-esteem is extremely important for their children. So parents and teacher increased motivation should be provided to the retarded children.

### Reference:-

1. Berger, E.H.(1981), *parents and partners in education the school and Home working together*. St Louis Mosby.
2. Bhatia, M. S., Kabra, M. and Sapra, S.( 2007), *Behavioral problems in children with Down syndrome*.
4. Dhawan, M.L.(2005), *Education of children with special needs*. ISHA books publications, New Delhi.
5. Dunlap, W. R.( 1987), *A functional classification for independent living for the mentally retarded*, *British J. Ment. Subnormality*.
6. Singh, Mubarak (2010), *Education of children with special needs*. Kanishka publishers, New Delhi.

### Website

<http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/16085968>

<http://www.aamr.org/>

[http://etd.lsu.edu/docs/Graham\\_Thesis.pdf](http://etd.lsu.edu/docs/Graham_Thesis.pdf)

<http://www.aifo.it/english/resources/online/apdrj/apdrj104/positive-perceptions>.

<http://psychiatry-research-eg.com/texts/EJP/aha2a5.pdf>

<http://azimpremjifoundation.org>

<http://ejournal.aiaer.net>

## “Online Shopping- Anytime , Anywhere”: A Study Of The Customer's Attitude

**Dr.Ruchi Jain**

Head, Deptt. Of Business Studies, The IIS University, Jaipur

**Aditi Jain**

Asstt. Professor, The IIS University, Jaipur

In this era of cut throat competition, most of the companies are looking for unconventional ways of marketing and internet has been found to be the best among them. Internet is an “anytime anywhere” medium that has given birth to entirely new business models and opened completely novel opportunities for global marketing. Today, almost all business firms use internet to provide information about the firm, their products and services as it offers a high degree of interaction and provides customers unprecedented benefits , from convenience to bargain prices. Technological developments have transformed the internet into a mainstream business medium. With the popularity of online shopping, someone with an idea for a new retail business no longer has to think to open a storefront. But that does not mean that there is no longer a need for retail stores or that all business ideas work well online. If you are looking to open a store, you must consider your product, the consumer you are focussing at and your overall business goals and then decide whether a retail storefront or online store will work best for your small business.

In India, internet penetration is becoming more widespread because of a number of reasons like bandwidth becoming readily available, low internet tariffs, cheaper computer hardware etc. The growing usage of the most interactive medium, the internet, among Indians provides an opportunity for undertaking a fundamental research to understand the attitude of Indian customers towards online shopping.

**Reasons For Companies Going For Online Stores Costs:-** In general, opening a business as an online store is much cheaper than a retail store. There is no rent to pay or other utility bills that are directly related to the store, except for web hosting and technical support. In case of online stores ,you don't have the work of decorating the inside and outside of the store and you also need not hire additional employees. With an online store, your costs are directly related to your website, shipping and accepting online payments. You have to pay for your desired domain name and may pay someone develop your website and e-commerce platform, which can be expensive, but is less expensive than opening

**Shodh Shree**



shodhshree@gmail.com

a retail storefront.

**Marketing:-** If you have a retail store then you are confined to the retail space you have and you don't plan actually very often to change the signs and logos since all of it can be very expensive. When you work online, changing logos and signs takes mere minutes and you can quickly and easily change the products that you sell and the way you present them on your website.

**Inventory:-** In addition to the price of items that you can sell, you must consider the number of items which you wish to sell. A retail storefront will perform better for a business that sells a select amount of products, whereas an online store may work better for a business that carries an extensive selection.

### Benefits Of Online Shopping

**Product selection and availability:-** Every make and model is at your fingertips and you don't have to drive miles to find it in case of online buying. The only drawback is that you can't test the product beforehand unless you find it at a retail store near you, but you can read the product reviews, user opinions with minimal exertion. Most reputable sites make aware the availability of each item. But retail store is limited to only products it sells at the local level.

**Base Price:-** Generally, online sellers feature at lower prices because they don't have the overhead of renting a shop in a strip mall, high electric bills or a staff of sales people. There are even Web sites that offer 'percent off' discounts if you enter a code after meeting a minimum purchase requirement, which could save even more money.

**Security:-** While some people think that buying stuff online means your credit information is there for the grabbing, that just isn't true anymore. Most online retailers use some sort of 128-bit encryption, and are as secure as banking sites. Sure ,one can say that there is a risk, but no more than buying in a store. Read user opinions, check their security license, and you'll be fine. Whatever is written for online security goes for retail security. For the most part, your information will remain private, but there's always the rare case of identity theft at some level.

**Convenience:-** Compared to a brick and mortar store with fixed hours, online shoppers can choose any time 24\*7 to get on the web and shop. This is extremely useful for moms with small children, people that are home-bound, or simply in times of inclement weather.

**Price comparisons:-** When you enter a store, you most likely have to agree for whatever price the vendor has placed on a particular item. Whereas in online shopping - you have the ability to compare prices from hundreds of different vendors .

### Drawbacks Of Online Shopping

**Late Delivery:-** If one requires a thing immediately than buying from a store is the best option as the delivery time may be longer if one makes an online purchase.

**Absence of touch & feel:-** One cannot touch and feel the product in case of online shopping as in case of store purchase. This satisfaction the customer really wants in case of apparels and cosmetics.

**Credit card:-** One should have a credit card for online shopping whereas it is not necessary to have it in case of a store purchase.

**Immediate Response:-** If you have a query about what you're looking at, you probably will have to wait at least 24 hours to get a question answered (however, many sites have "instant chat" enabled that take care of this issue).

### Objectives Of The Study:-

- To study the attitude of the people of different age groups towards online shopping.
- To study the impact of monthly family income on online shopping.
- To study the impact of frequency of internet use and time spent per session on online shopping.
- To know the factors that actually compel the customers to go in for online shopping.
- To elicit the factors that actually restrain the customers to go for online shopping.

**Hypothesis:-** Online shopping is not affected by age, monthly family income, frequency of internet use and time spent per internet session.

**Research Methodology:-** The research method of this study is a survey research, which collect information from a participant through a questionnaire. The purpose of this research is to analyse the current and future behaviours of consumers to help marketing manager in making strategies according to the feedback from participants . In addition to the collected data, some other data such as it from official reports of governments or organizations will also be used to assist complementarities of research.

The respondents were approached and the questionnaires were got filled by telling them the purpose of the study. Secondary data was collected from the various books and articles. Before writing the paper various articles and related

literature pertaining to the current topic were gone through to have a complete understanding of the topic.

The sample size for the study undertaken is 316 respondents from the Jaipur region. The data is presented in the various tables below for the analysis. Chi-square test was applied to find the association between the variables.

### Results And Interpretations

Table 1: Demographic Data

Sex	Frequency	Valid percent
Male	237	75
Female	79	25
	<b>316</b>	<b>100</b>
Age	Frequency	Valid percent
18-20	15	4.7
21-30	185	58.5
31-40	73	23.1
41-50	17	5.5
51-65	26	8.2
	<b>316</b>	<b>100</b>
Monthly family income	Frequency	Valid percent
10,000	4	1.3
10001-20000	64	20.3
20001-30000	74	23.4
30001-40000	118	37.2
40001-50000	28	8.9
Above 50000	28	8.9
	<b>316</b>	<b>100</b>

TABLE 2: INTERNET USAGE DATA

Internet usage	Frequency	Valid percent
Everyday	234	74.1
Once in two days	70	22.1
Once a week	12	3.8
	<b>316</b>	<b>100</b>
Time spent per internet session	Frequency	Valid percent
< 1 hr	77	24.4
- - -	136	43.0
2 hr >	103	32.6
	<b>316</b>	<b>100</b>

TABLE 3: ONLINE SHOPPING EXPERIENCE AND SATISFACTION

Ever shopped online	Frequency	Valid Percent
No	114	36.1
Yes	202	63.9
<b>Total</b>	<b>316</b>	<b>100</b>
Satisfied with online shopping	Frequency	Valid Percent
No	22	10.9
Yes	180	89.1
<b>Total</b>	<b>202</b>	<b>100</b>

TABLE 4: ONLINE PURCHASE SATISFACTION Vs ONLINE SHOPPING IN FUTURE

		Online shopping in future		
		No	Yes	Total
Online purchase satisfaction	No	15	7	22
	Yes	7	173	180
Total		22	180	202

Among the respondents who shopped online, 89.1% were satisfied and more than 95% of the satisfied customers also engaged in online shopping in future which indicates that online purchase satisfaction is very high among customers and that is something very good for the e- marketers in India. One interesting fact that was noticed that the consumers purchased more of services online in comparison to the products.

TABLE 5: FACTORS FACILITATING ONLINE SHOPPING

N=202	MEAN	STD. DEVIATION
Extensive & current information available	4.1584	.7627
24 x 7 availability	4.1386	.7983
Can shop from anywhere	4.0743	.7049
Can engage in other online activities while shopping	3.7673	.8228
Home delivery	3.6683	.8661
Cheaper price	3.5644	.8216

TABLE 6: FACTORS PREVENTING ONLINE SHOPPING

N= 114	MEAN	STD. DEVIATION
Payment insecurity	4.6404	.7055
Misuse of customer data	4.2982	.7518
Absence of touch & feel	3.8947	.8241
No social interaction	3.7281	.8339
No credit card	3.5439	.9968

The factors facilitating online shopping were measured on a five point Likert scale, anchored by 1( not at all important) and 5( extremely important). The respondents were asked to rate the factors and the study carried out for 102 respondents who shopped online revealed the data of TABLE 5 stating *extensive* Shodh Shree / April-June 2013

& current information available, followed by 24x7 availability to be the strongest reasons for people going for online shopping. Surprisingly, in the study, *cheaper price* was the least important factor facilitating online shopping.

Similarly, factors preventing online shopping were measured on a five point Likert scale, anchored by 1( not at all important) and 5(extremely important). The 58 respondents rated the factors and *payment insecurity* followed by *misuse of customer data* were found to be the strongest reasons for them not going for online shopping. *No credit card* was found to be the least important reason for not going in for online purchasing.

## Hypothesis Testing

H<sub>1</sub>: There is association between age and online shopping

### Chi- Square Test

	Value	Df	Asymp.Sig. (2-sided)
Pearson Chi - square	4.253 <sup>a</sup>	4	.373
N of valid cases	316		

H<sub>2</sub>: There is association between monthly family income and online shopping

### Chi- Square Test

	Value	Df	Asymp.Sig. (2 -sided)
Pearson Chi - square	44.641 <sup>a</sup>	5	.000
N of valid cases	316		

H<sub>3</sub>: There is association between frequency of internet use and online shopping

### Chi- Square Test

	Value	Df	Asymp.Sig. (2 -sided)
Pearson Chi - square	1.225E	2	.000
N of valid cases	316		

H<sub>4</sub>: Time spent per internet session and online shopping are related

### Chi- Square Test

	Value	Df	Asymp.Sig. (2 -sided)
Pearson Chi - square	13.723 <sup>a</sup>	2	.001
N of valid cases	316		

Results from the hypothesis testing reveal that there is no association between age and online shopping.

Results also reveal that family monthly income have an impact on online shopping and so monthly family income can be used by online marketers for creating segmentation and promotion strategies. It was also seen that there was a significant relation between frequency of internet use and online shopping as when people use the internet more, they become comfortable. More time spent per internet session also had a significant association with online shopping. The reason could be as one uses more of internet, he becomes user friendly.

So , it can be stated that internet use experience has a significant association with online shopping.

**Conclusion:-** It can be concluded from the above study that extensive and current information available is one of the major reasons for people going for online shopping followed by 24 x 7 availability of products and information . Eliciting information from the physical market is a time consuming and costly affair and also one can not expect to get the information at all the times from the physical market. Relevant information directed at the needs and interests of the target audience also propagates people to buy online. Besides, the fear of payment insecurity and misuse of customer data etc. prevents certain people from shopping online. The present study also revealed that there is a significant association of online shopping with monthly income, frequency of internet use and time spent per internet session.

**Scope For Future Study:-** The present study is just a groundwork in this domain and needs to be further refined. Moreover, a larger sample size can be studied for better results. More work needs to be done in this area before an absolute set of recommendations can be made.

### References:-

1. E.Brynjolfsson & M.D. Smith(2000), "Frictionless commerce? A comparison of internet and conventional retailers," *Management Science*, Vol.46(4), 563-585.
2. P. Butler & J. Peppard(1998), "Consumer purchasing on the internet: process and prospects", *European Management Journal*, Vol.16(5), 600-610.
3. N. Cho & S. Park(2001), "Development of electronic user consumer satisfaction index (ECUSI) for internet shopping," *Industrial Management and Data Systems*, Vol. 101(8),400- 405.
4. E. Constantinides (2004), "Influencing the online consumer's behaviour: the web experience", *Internet Research*, Vol.14(2), 111-126.
5. B.G. C. Dellaert, T.P.Y. Monsuwe & K. de Ruyter(2004), "What drives consumers to shop online? A literature review," *International Journal of Service Industry Management*, Vol.15(1), 102-121.
6. S. Ghose (1998), "Making business sense of the internet," *Harvard Business Review*, March, 126-135.
7. D.Grewal, G.R. Iyer & M. Levy(2002), "Internet retailing: enablers, limiters and market consequences," *Journal of Business Research*, Vol.57(7), 42-53.
8. C. Keen, M. Wetzels, K.de Ruyter, & R. Feinberg(2002), "E-tailers versus retailers: which factors determine consumer preferences?" *Journal of Business Research*, Vol.57(7), 685-695.
9. D. Kuhlmeier & G. Knight(2005), "Antecedents to internet- based- purchasing: a

*multinational study", International Marketing Review*, Vol.22(4), 460-473.

10. P.Luarn & H.Lin(2003), "A customer loyalty model for e-service context," *Journal of Electronic Commerce Research*, Vol.4(4), 156-167.
11. A.D. Miyazaki & A. Fernandez (2001), "Consumer perceptions of privacy and security risk for online shopping," *The Journal of Consumer Affairs*, Vol.35(1), 27-44.
12. S.J.Tan(1998), "Strategies for reducing consumer's risk aversion in internet shopping", *Journal of Consumer Marketing*, Vol.16(2), 163-180.
13. V.S. Ramaswamy & S. Namakumari(2002 ), "Marketing Management", *McMillan Business Book*.
14. C. Ranganatham & S. Ganpathy(2002), "Key Dimensions Of business- to- consumer websites", *Information And Management*, Vol.39(6), 457-465.
15. R.Welling & L.White (2006), "Website performance measurement: promise and reality," *Managing Service Quality*, Vol.16(6), 654-670.

# Adoption of International Financial Reporting Standards (IFRS) in Accounting Curriculum in India

**Dr. Ankita Chaturvedi**

Assistant Professor, The IIS University, Jaipur

**Shodh Shree**



shodhshree@gmail.com

*"The next revolution after the software revolution will be in the world of accountancy with the convergence of IFRS where we would be contributing the best and largest number of young Accountants."*

**Salman Khurshid, Union Minister for Corporate Affairs**

The expansion of any business depends upon the investment and the capital employed. In order to magnetize the investors, the financial statements act as a vital tool which represents the company as such. Increasing complexity of business operations and globalization of capital markets make mandatory of comprehensive accounting standards. The government has adopted a policy of enabling disclosure of company accounts in a transparent manner at par with widely accepted international practices, through a process of convergence with International Financial Reporting Standards (IFRS). IFRS are recognized as the global financial reporting standards adopted by more than 113 countries worldwide. It is a set of international accounting and reporting standards that will help to harmonize company financial information, improve the transparency of accounting, and ensure that investors receive more accurate and consistent reports. The ministry of corporate affairs (MCA) has already chalked out a roadmap for its implementation. The converged IFRS are named as Indian Accounting Standards (IND-AS).

**Objectives of the Study:-** The present conceptual paper has been prepared keeping in view the following objectives:

- To develop an insight about the global financial reporting language i.e. IFRS.
- To know about the likely beneficiaries of convergence of Indian GAAP with IFRS.
- To study the problems and challenges faced by Indian companies in the process of convergence to IFRS.
- To give suggestions towards successful implementation of IFRS.

**Methodology:-** The study is based on literature survey and secondary data. The required secondary data was collected from the authorized Annual Reports and official website of ICAI and IFRS, various journals and research papers, diagnostic study reports and newspaper articles have also been surveyed in

making this study.

**Need for adoption of IFRS in India:-**

- **Level of Confidence:-** The key benefit will be a globally accepted accounting system that is perceived as transparent, stable and fair to investors across the world, whether local or foreign.
- **Merger and Acquisition:-** By proving transparent and comparable financial information, IFRS reporting provides an impetus to cross border acquisition, enables partnership and alliances with foreign entities, and lowers the cost of integration in post-acquisition periods.
- **Risk Evaluation:-** IFRS will eliminate barriers to cross border listings and will be beneficial for the investors who generally ascribe a risk if the underlying financial information is not prepared in accordance with international standards.
- **Investments:-** Foreign investment will be attracted to economies where IFRS-compliant financial statements are the norms.

**Beneficiaries of convergence with IFRS:-** The forces of globalization prompt more and more countries to open their doors to foreign investment and as businesses expand across borders the need arises to recognize the benefits of having commonly accepted and understood financial reporting standards. Following are some of the benefits of adopting IFRS -

1. **The Investors:-** As the final accounts will be prepared using a common set of accounting standards, thus facilitating the investors with the accounting information which is more reliable, relevant, timely and comparable across different legal frameworks. IFRS would enhance the comparability between financial statements of various companies across the globe.
2. **The Industries:-** In the event of convergence with IFRS, the industries will be benefited because-
  - (a) it will create confidence in the minds of foreign investors that their financial statements comply with globally accepted accounting standards.
  - (b) It will trim down the cost of compliances by decreasing the burden of financial reporting.
  - (c) It will simplify the process of preparing the individual and Group financial statements.
  - (d) It will lower the cost of raising funds.
  - (e) It will enable faster access to all major capital markets.
3. **The Accounting Professionals:-** Although there would be initial teething problems to the professional, both in practice and in employment but later they will get benefits as they will be able to serve international clients and it would also increase their mobility to work in different parts

of the world either in industry or practice.

- 4. The Corporate World:-** The Indian corporate reputation and relationship with international finance community will elevate because of:
- achievement of higher level of consistency between reporting structure and requirements;
  - better access to international markets;
  - improving confidence among the international investors.

The international comparability will also get improve strengthening the industrial and capital markets in the country.

- 5. The Economy:-** Convergence with IFRS would result in high-quality standards of financial reporting, auditing and ethics form the foundations of the trust that investors place in financial information and therefore play an integral role in contributing to a country's economic growth and financial stability.

#### **Some Key Challenges and issues involved in Implementation of IFRS in India:-**

**1. Legal and Regulatory Considerations:-**In some cases, the legal and regulatory accounting requirements in India differ from the IFRS; in such cases, strict adherence to IFRS in India would result in various legal problems.

**2. Impact on Business:-**Implication of change in accounting would have a direct implication on the way businesses are run. For example, it could affect credit rating, debt covenants, dividend distribution, employee KPI and bonuses, managerial remunerations, financial-product's design, taxes, exit clause of your investors, contingent consideration (on acquisition).

**3. Impact on Financial Results:-**It is important to note that conversion to IFRS will require the retroactive restatement of certain historical periods presented within a company's first set of IFRS based financial statements. Those restated periods could show a host of changes to a company's key metrics, bottom-line performance and financial position.

**4. Economic Environment:-**The economic environment and trade customs and practices prevailing in India may not, in a few cases, be conducive for adoption of an approach prescribed in an IFRS. For example, in a country whose markets do not have adequate depth and breadth for reliable determination of fair values, it may not be advisable to follow a fair value-based approach prescribed in certain IFRS.

**5. User Awareness And Training:-**Many people are yet not aware of IFRS, their complexities and impact. A change in the reporting format will require awareness of these new norms and systems, training and education, both for the professional as well the user.

**Applicability of IFRS:-**According to the Concept Paper on Convergence with IFRS

in India, issued by ICAI, the IFRS should be applicable to Public Interest Entities (PIE). PIE has been defined to include:

- All listed companies;
- All banking companies;
- All financial institutions;
- All scheduled commercial banks;
- All insurance companies; and
- All NBFC.

**Implementation of IFRS in India:-**After months of confusion over the implementation of International Financial Reporting Standards (IFRS) in India, there seems to be some clarity emerging on the issue. In a speech given in New Delhi at a seminar organised by The Associated Chambers of Commerce and Industry of India (ASSOCHAM), the Indian Minister for Corporate Affairs and Power, Dr. M. Verappa Moily, has indicated that the implementation of Indian Accounting Standards that are compatible with International Financial Reporting Standards (IFRS) may occur by April 1, 2013.

However, to ensure that Indian companies do not face any undue hardship till full implementation of IFRS in India, the Commission has recently proposed an extension of the transitional relief until December 31, 2014, which would provide India with three more years to become fully compliant with IFRS. The proposal is now awaiting final clearance from the European Parliament and the Council of the European Union. This extension, once finally approved, will be a big relief for Indian companies. In the absence of such relief, these Indian companies would have had to prepare two separate sets of financial statements, which can be quite cumbersome and costly.

**Conclusion:-**With the rapid liberalization process experienced in India over the past decade, there is now a huge presence of multinational enterprises in the country. Furthermore, Indian companies are also investing in foreign markets. This has generated an interest in Indian GAAP by all concerned. In this context, the role of Indian accounting standards, which are becoming closer to IFRS, has assumed a great significance from the point of view of global financial reporting.

The new accounting standards are considered to be more reliable, consistent and uniform and are meant to enhance the credibility of businesses by incorporating more disclosures that lead to good corporate governance. Merely adopting International Financial Reporting Standards is not enough. Each interested party, namely Top Management and Directors of the Firms, Independent Auditors and Accountants and Regulators and Law Makers will have to come together and work as a team for a smooth IFRS adoption procedure. Besides other things, the IFRS requires marking assets to market value that is expected to adversely impact the financial statements of many companies initially. Corporates need to gear themselves for constant updation and not only

for the first time adoption. It is true that there are still some obstacles to overcome but the pressure of globalization is so strong that it should not take much time to identify methods to overcome on it.

### References:-

- 1 Cai, Francis, Wong Hannah, (2010), 'The Effect of IFRS Adoption On Global Market Integration', *International Business & Economics Research Journal*, 9(10) pp 25-34.
- 2 IFRS: Developing a roadmap to convergence, A report by KMPG India, March 2008
- 3 Jain Pawan (2011), "IFRS Implementation in India: Opportunities and Challenges", *World Journal of Social Sciences* Vol. 1. No. 1. Pp.125 - 136
- 4 Kadole M Chandrakant & Ichalkaranje M Sachin (2012) *International Financial Reporting Standards (I FRS) - Need, Problems, Challenges & Benefits' Indian Streams research Journal* Vol - II, ISSUE - VII,
- 5 Kaur Jasmine (2011), "IFRS: A Conceptual Understanding and Framework", *The Indian Journal of Finance*, .
- 6 Lantto, Anna-Maija and Sahlström (2009), Petri. *Impact of International Financial Reporting Standard adoption on key financial ratios. Accounting and Finance*, 49, Pp341-361.
- 7 Mishra S.K.: *The Chartered Accountant Journal*, May, volume 59/no.11 Pp 70-73
- 8 <http://ifrs.icai.org/>
- 9 [www.mca.gov.in](http://www.mca.gov.in)
- 10 [www.bseindia.com](http://www.bseindia.com)
- 11 [www.icai.org](http://www.icai.org)



## Shodh Shree

(Journal of Multidisciplinary Research)

54A, Jawahar Nagar Colony, Tonk Road, Jaipur-302018

shodhshree@gmail.com

Chief Editor - Virendra Sharma

Editor - Dr. Ravindra Tailor

Membership No.....

Date.....

(For Office Use Only)

### Subscription Form

Name Prof./Dr./Ms./Mr. .... Designation .....

Name of Organization .....

Mailing Address .....

District ..... State .....

Tel. No (Res.) ..... Mobile No. ....

E-mail Address .....

Subscription fee can be deposit through online Banking.

Date

Signature

1. Required Font For Resaech Paper - Kruti Dev-010 (For Hindi) or, Times New Roman (For English)
2. Subscription Fees 1200 Rs (For Individual and Institution)
3. Research Paper may be Sent through By email, post or C.D.
4. For any assistance, please contact - 09413224134

## DECLARATION FORM FOR CONTRIBUTORS

I .....

hereby declared that the paper entitled '.....

.....' is unpublished original paper which is not sent any where for publication.

This paper is prepared by me/jointly with ..... which is exclusively for your Journal

entitle 'Shodh Shree'.

I/We will not demand any honorarium for the same except one copy of the

Journal in which this paper will appear. Please send copy of the Journal at the address of author whose name is appeared at first.

Copy right of matter is with Shodh Shree. I/We will not reproduce it in any other Journal or book except prior permission of the Chief Editor.

Signature .....

Name .....

Designation .....

Official Address .....

Residential Address .....

Phone No. ....

E-mail Address .....

## Guidelines for the Contributors

1. All research paper must be typed in pagemaker and use KRUTI DEV 010 font for Hindi or Times New Roman font for English can submit by C.D. or through e-mail.
2. A separate list of references should be given at the end of the paper and not at each page. Footnotes may be given on the same page if any technical term needs some explanation.
3. Table, Model, Graph or Chart should be on separate pages and numbered serially with appropriate headings.
4. Maximum word limit of research paper up to 1500 words.
5. Special care should be taken to avoid spelling errors and grammatical mistakes in the paper otherwise it will not be accepted for publication.
6. The author(s) should certify on a separate page that the manuscript is original and it is not copyrighted.
7. The copyright is Reserved for 'Shodhshree' for All Research papers and Book Reviews, published in this journal.
8. Publication of research paper would be decided by our editorial board or subject specialist.

**BookReview:** For Book Review to be included in this journal only reference books and research publications are considered. One copy of each such publication must be submitted to the Editor.

**Note:** Shodh Shree have copyright on papers published in the Journal therefore, prior permission is necessary for reproduction of paper, anywhere by author or other person. However, papers published in the Journal may be freely quoted in further study. All disputes are subject to Jaipur jurisdiction.

Research Paper may be sent to our e-mail:shodhshree@gmail.com  
For any assistance, Please Contact Dr. Ravindra Tailor-09413224134

To,

प्रिन्टेड मैटर

If undelivered please return to :

**शोध श्री** (त्रैमासिक)

54-ए, जवाहर नगर कॉलोनी

टॉक रोड, जयपुर-302018

स्वात्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रधान सम्पादक – वीरेन्द्र शर्मा के लिए मुद्रित व 54-ए,  
जवाहर नगर कॉलोनी, टॉक रोड, जयपुर-302018 मो. 9460124401 से प्रकाशित।  
मुद्रण स्थल आकृति एड्वरटाईजर्स, जयपुर